श्री श्रृंगार निधि निकुंज मिथिला धाम
श्री सीताराम जी

"श्रीरामानन्द-साहित्य माला" पुष्प ७५ वाँ

श्रीसीतातत्त्वमुपास्महे

श्रीसीतास्तोत्र सुधासागरः

श्रीमते रामानन्दाय नमः
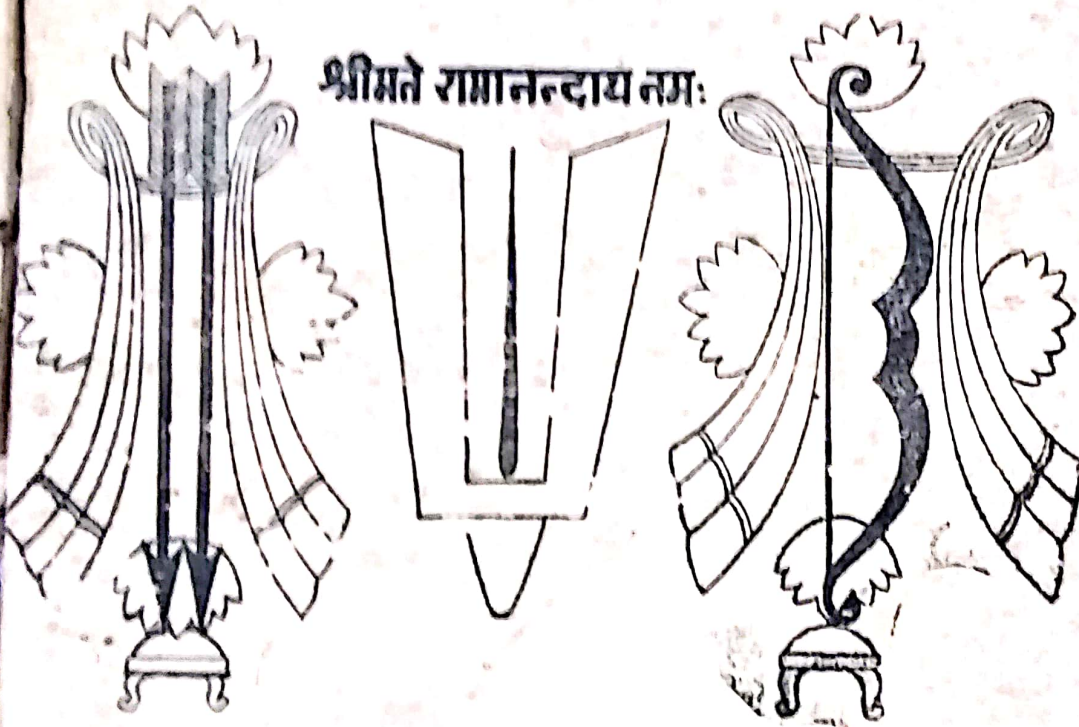
सम्पादक—

अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव

"प्रेमनिधि"

आक्रष्टुं त्वमिवप्रियस्य हृदयं मायापि धर्मैः स्वकै-
र्यत्तस्मादुपतिष्ठते लिखति तद्धोयं ललाटे पटे ।
जीवस्यैव तदीय संगतरते राजेन्द्र रामेरिके-
दृष्ट्वात्वद् गुण रूप वैभवदशोदेवः स ते वल्लभः ॥८०॥

नित्यापि प्रकृति विरोधविकृति क्लेशादि दोषात्यया-
ज्ञानानन्द गुणप्रकाश विशदा दिव्येति या विश्रुता ।
सापि प्राणपतेस्तवोत्सवकरी प्रायेण सीते पितु-
ध्वस्तात्यन्ततमो निदान मनसां मुक्तात्मनां भुक्तये ॥८१॥

प्रेयस्येव तव स्वरूप सहजंपुंस्त्वं यथा जानकि-
स्त्रीत्वं च प्रकृति वियुक्तमृषिभि स्त्वय्येव संभावितम् ।
सत्यं तत्त्वदुपासनैक नियतं सर्वासु विद्यासु यद्-
विद्या त्वं च तथा यतो यदभिधा विद्येति विद्येश्वरि ॥८२॥

सीते चेन्न मवेविलास बहुला जीवानुकम्पाकुला-
कस्यस्याद् विनिवेषणीय चरणो वैदेशिको देशिकः ।
तर्हित्वद् रमणोऽनुभाव भरणः स्वातन्त्र्यः तंत्र्यःस्वतः-
प्राप्त्यैश्वर्यगुणस्वरूप सुखमुगृध्येयः प्रसङ्गोद्भुतः ।८३॥

सर्वासूपनिषत्सु ते प्रणयिनं दूराति दूरे रह-
स्तिष्ठन्तं वदतोप्यपीश्वरनुतेसीते स्वयालीलया ।
सर्वेषां सकलेन्द्रियानुगुणतां प्रत्यायितेयैथाः कथं-
किं तेऽन्यद्यदशक्यमस्ति भवतां मध्ये विधातुं सुधीः ॥८४॥

जो अनादि पुरुष जगत् के स्वामी हैं, उनके शत्रु नष्ट हो गये, अयोध्या का राज्य उनको उपलब्ध हुआ, तब वे एक आपके ही होकर "नारी नाथ" कहलाये। ऐसे नर चन्द्र श्रीराम को रति प्रदान करने वाली हे श्रीसीते ! लोक में भी जो स्त्री संयुक्त हैं उनकी स्त्रियाँ आपकी दास वृत्ति की भावना में निरत रहती है, वे सब निरन्तर आपकी सेवा भावना से नियोजित की गयी स्त्रियों के द्वारा क्या आपकी ही सेवा नहीं कर रहे हैं ? ॥ ७८ ॥

एक ही जो पुरुषोत्तम प्रभु हैं वही पुरुष हैं, अन्य भी जो हैं उनकी सेवा के लिये पूर्व में आपने अपूर्व गुणों से संयुक्त प्रकृति द्वारा पुरुष भाव प्रदान कर कुछ ऐसे चेतनों को प्रयुक्त किये हैं जिनके, सहयोग सेवा द्वारा आप उनको शत्रु रहित बनाकर अपनी दास दासियों के सहित अखण्ड राज्य पर पूजित होकर विराजमान होती हैं तथा हे सीते ! दीर्घकाल पर्यन्त सुख भोग करती है ॥ ७९ ॥

हे राजराजेन्द्र श्रीरामवल्लभे ! आपको आकृष्ट करने केलिये ही भगवान् श्रीराम भक्तों के हृदय को मोह माया रहित देखकर उनको अपना बनाकर उन भाग्यशालियों के ललाट पटल में आपके भोग्य है ऐसा लिखते हैं । तब जीवों को आपकी सङ्गति का प्रेम उदय होता है तथा आपके प्राण वल्लभ आपके उस रस-रूप-गुण-वैभव को देख देखकर प्रसन्न होते हैं ॥ ८० ॥

आप नित्य एकरस पराप्रकृति हैं, तथापि विरोध विकृति क्लेशादिक दोष प्रकृति जन्य हैं ऐसा लोक कहतेहैं, यथार्थ में तो ज्ञान-आनन्द-प्रकाशादिक विशद दिव्य गुणगणागार ऐसी आप की प्रख्याति है, इन परस्पर विरुद्ध धर्मों का आप में दर्शन होता है वह प्रायः आपके प्राणपति के आनन्द उत्सव की वृद्धि करने के लिये ही हे सीते ! प्रायः आपने स्वीकार किये हैं, ऐसी आपकी दिव्य लीला का अनुभव करने से मुक्तात्माओं के मन का अत्यन्त दारुण अन्धकार नष्ट हो जाता है तथा उनको भी आपके दिव्य सुख का भोग प्राप्त होता है ॥ ८१ ॥

जैसे आपके प्रियतम का सहज स्वरूप "पुरुष" है, वैसे ही हे श्री जानकी जी ! महर्षियों ने प्रकृति प्रयुक्त आपका स्त्री स्वरूप है ऐसा निश्चय किया है । सत्य बात तो यह है कि आपकी उपासना में नियत जितनी विद्यायें हैं उनमें श्रेष्ठतम विद्या स्वरूपा हे विद्येश्वरी ! आप ही महा विद्या के नाम से अभिहित होती है ॥ ८२ ॥

हे सीते ! यदि आप लीला विलास का विस्तार कर जीवों के ऊपर अनुकम्पा कर उनके उद्धार के लिये व्याकुल न हो जाती तो इस संसार में किसके श्री चरणारविन्द उपासनीय होते ? तथा आचार्यों का भी परमाचार्य कौन बनता ? तब आपके प्रियतम रमण भी स्वतः सर्व तन्त्र स्वतन्त्र होकर भावानुभाव से भरपूर कैसे बनते ? यह आपकी ही कृपा का मधुर फल है, कि आपको गोद में विहार करते हुए सर्वैश्वर्य गुण स्वरूप तथा सुख के भोक्ता बनकर सभी के परम ध्येय बने हुए हैं ॥ ८३ ॥

हे सीते ! आपके प्राणनाथ को सभी वेदान्त-उपनिषद् की श्रुतियाँ दुरातिदूर रहते हैं ऐसा वर्णन करती हैं, तथापि ईश्वरों द्वारा वन्दनीय चरणे ! हे श्री किशोरी जू ! आप अपनी लीला से सभी को सभी इन्द्रियों के अनुरूप उनका साक्षात्कार का अनुभव कैसे करा देती हैं ? सत्य तो यह है कि कौन सी ऐसी अशक्य वस्तु है जो आप दोनों के लिये सुधी पुरुष शक्य सुलभ न समझते हों अर्थात् आप सब कुछ कर सकती हैं ॥ ८४ ॥

सापत्न्येन सहत्वयोपनिषदो वर्त्तन्त इत्याविधैः-

सर्वंतत्तनु केन दृष्ट महिता काण्डे त्रिकाण्डीति ते ।

किन्तु त्वां त्वदसुप्रियं च विमते रक्षन्ति शिक्षोद्यताः-
सर्वेषामधिकारिणामिति कृपा तास्वप्यकम्प्यास्तु ते ॥८५॥
मञ्जीरामर दुंदभिध्वनिहतारातिं किराते तरां-
श्रीधामावधिकामपूर सुरभि छायातपत्रोत्सवाम् ।
सीते सिद्ध सुधावटोदक सुखा विव्यद्रुमांश्चाश्रिता -
त्वत्पादानुगतिं प्रमाणपथिका तान्त्यश्रमा निर्भ्रमाः ॥८६॥
सीतेतेंऽघ्रितलांक सौभगवशां पश्यंस्तवेतद् धनं-
भाग्यादात्म भुवैवभूरि लिखितं भाले ममैवेति च ।
मत्वामोद मदस्मित स्फुरतरद्भ्रूदृक् कपोल स्थलो-
दृष्टो देवि तवानुकूलदयितो दिव्यात्म दर्शीश्वरैः ॥८७॥
लिङ्गेषु स्वकर स्वपादतल संलग्नेषु वै सत्तमाः-
सौभाग्याधिक शंकयाधिकगुणाः श्रीदिव्यमूर्त्तेऽस्तु ते ।
रन्ता तेऽवनिजे रहस्तव सखी लक्ष्मणि ते पृच्छति-
श्रुत्वा तानि ततस्त्वदीय जनता सीमां स्वमालोकते ॥८८॥
सीते स्फीतमुखेन्द्र संभृत सुधामापीयपीनो हि ते-
कोप्यन्योऽस्ति न वा ममैव सदृशः स्वामीति मीमांसते ।
तर्ह्यन्योऽपि च सीतयैव सदृशी स्याच्चेत्तु नारी तरा-
मामाहुः श्रुतयो स्वतः पर इति स्वं निश्चिनोतीति च ॥८९॥
त्वत्कान्तेन समाधिकोऽपि च ततो नारी समावाधिका-
त्वत्तोऽन्यापि मृषेत्यभात्र हृदया वैदेहि देहीश्वरी ।
अद्वैत श्रुतयः प्रियस्य च तवा तुल्याधिकत्वं जगु-
मिथ्या विश्वमिति श्रुतेर्न वचनं स्वस्यापि शांत्याद्भुते ॥९०॥

उपनिषदों की श्रुतियों ने आपके साथ सापल्य भाव से होने से उस प्रभु की महत्ता कौन सर्वज्ञ जान सकता है ? ऐसा त्रिकाण्डी वेदत्रयी में काण्ड मचा रखा है। किन्तु यह अच्छा ही हुआ कि इस प्रकार शिक्षा देकर आपको तथा आपके प्राण प्रियतम को अनधिकारियों के हाथों से सुरक्षित रखती हैं। परन्तु, हे श्री जू ! हमारी तो यही प्रार्थना है कि योग्य अयोग्य

सभी आपके द्वारा अनुकम्पा करने योग्य हैं, आपकी कृपा तो सब पर रहती है, इसलिये सबको आपकी कृपा का अधिकार प्राप्त होना चाहिये ॥ ८५ ॥

देवताओं को लोग अमर कहते हैं परन्तु वे तो विचारे अप्सराओं द्वारा बजाये गये मञ्जीरा तथा शत्रुओं की रण दुंदुभीके नादसे व्याकुल रहते हैं। उनके धाम लक्ष्मीसम्पन्न है, उनके पास कामधेनु गाय है, कल्प वृक्ष है उसकी छाया में आनन्दोत्सव मनाते रहते हैं फिर भी निर्भय नहीं है, वे तो जब आपके चरणारविन्द की सिद्ध सुधा दिव्यामृत रस माधुरी का रसास्वादन करते हैं। आपकी सेवा पथ के पथिक बनते हैं तभी भ्रम रहित श्रम रहित आनन्द प्राप्त करते हैं ॥ ८६ ॥

हे श्री सीते ! आपके श्रीचरणों के नखों का अनुचर बनने की सौभाग्यशाली दशा प्राप्त हुई है, यह देखकर यही मेरा परम धन मेरे भाग्य से विधाता ने मेरे ललाट में खूब लिख दिया है अतएव यह मेरा ही सर्वस्व धन मानकर मैं परम प्रसन्न हूं, उस पर भी मैंने देखा कि आपके स्मित हास्य-आनन्द से फरकते ओठ, भृकुटी तथा कपोल स्थल को देख देखकर प्राणनाथ प्रभु सर्वथा आपके अनुकूल हैं तब वह दिव्यात्मदर्शी ईश्वर मुझपर भी कृपामय है ही यह जान कर और भी अधिक आनन्द होता है ॥ ८७ ॥

अपने हाथ में अपने चरण तल में लगे हुए ताजे चिन्हों को देखकर आपका सौभाग्य सर्वाधिक है क्योंकि आपकी श्री दिव्यमूर्ति में सर्वाधिक दिव्य गुण भरपूर हैं, इसलिये शङ्का करती हुई हे श्री किशोरी जी ! आपकी सखियां आप से ये चिन्ह कैसे हैं ? ये प्रियतम के साथ विहार करने से हुए हैं ? ऐसा पूछती है, परन्तु इस प्रश्न को सुनकर जन समाज तो आपके निस्सीम सौभाग्य का आप में अवलोकन कर आह्लादित होता है ॥ ८८ ॥

हे सीते ! आपके दिव्य मुखचन्द्र की दिव्य सुधा का प्रियतम को रस पान कराने वाली तो आप ही हैं, तब आपके स्वामी उस आनन्द में निमग्न होकर विचार करते हैं कि इनके समान अन्य कौन है ? यदि अन्य कोई सीता के सरीखी नारी है तो हे श्रुतियों ! मुझ से स्पष्ट रूप से कहो। तब श्रुतियों ने स्वतः परात्पर आपका यही युगल स्वरूप है ऐसा दृढ़ निश्चय करके कहा है ॥ ८९ ॥

आपके प्रियतम से उत्तम अथवा समान कोई पुरुष नहीं है, आप से उत्तम तथा समान कोई नारी नहीं है, ऐसा भाव हृदय में स्थिर करके हे वैदेही ! हे देह की ईश्वरी ! अद्वैत प्रतिपादिका श्रुतियों ने आपकी तथा आपके कान्त प्रियतम की अन्यूनाधिक समानता सिद्ध की है, अतः यह विश्व मिथ्या है ऐसा श्रुतियों का कथन नहीं है। हे अद्भुते ! अपनी शान्ति के लिये भी ऐसा नहीं कहा है ॥ ९० ॥

एकैकस्य चिरंतनात्स्वगुणतोऽप्यद्वैतमंगस्य ते-
धृत्वा धी जननीं सतां जनकजे द्वैत श्रुतिःसात्त्विकी ।

भक्तानामुपपद्यते मतिमतां भेदांश्च सद्भासती-
स्याद्द्वैतश्रुतिरप्यथाङ्ग विधया सत्यैव सार्था मिथः ॥९१॥
अङ्गानां तव सज्जनैरुत सतां मैत्री हृतांगैर्मिथो-
वैषम्येऽपि गुणैः प्ररोचन गुणास्तेषां च साधारणाः ।
अन्योन्यं तव तार हार तुलनां प्राप्याङ्ग सन्दर्भणां-
सीते कश्चिदलौकिकं सुकृतिनं याति प्रियैक व्रती ॥९२॥
शब्दस्पर्श मुखास्तु पञ्चविषया भक्तैर्यदर्थी कृता-
स्त्याज्यास्तेऽपि न सन्ति ते प्रणयिना दृष्टायदिष्टाऽपि च ।
दिव्यास्त्वत्तनुसंगिनोऽनतिशयाः सीते कथं तेऽमुना-
त्याज्यास्ते हि चिदर्गला नव नवाऽनन्दोह मानर्गलाः ॥९३॥
नैकेऽपि स्थुरणो रणीयसि यथा दिव्यागुणा भर्तरि-
श्रौते श्रान्ति हरिहरार्चितपदे मध्येऽपि ते स्युस्तथा ।
निश्चेयो सदगोचरेऽपि च सतां कार्यानुमेयेरणात्-
काञ्चीरत्नरु गुञ्जले रवि कलालङ्कार तंकाय हे ॥९४॥
सीते सन्तत सम्मताम्बर वरालङ्कार संस्कारिके-
स्वानन्दैक निमग्न मानस पतेर्नेत्रप्रकाश प्रदाः ।
यत्रेमास्तव काल दोष कवला कल्पोज्वला दीप्तय-
स्तत्रासौ स्फुरदिन्दु भानुभ तडिज्ज्योति निषेधश्रुतिः ॥९५॥

अपने एक एक चिरन्तन गुणों से परस्पर अभिन्न आपके अङ्गों का विचार कर हे जनकजे ! सज्जनों की माता सरस्वती सात्विकी द्वैत प्रति पादिका श्रुतियों की प्रशंसा करती हैं क्योंकि इससे भक्तों को मतिमान् विद्वानों को भेद का उदघाटन करने वाली श्रुतियों से आपके लीला विहार का आमोद प्रमोद लेने का परमानन्द प्राप्त होता है । अतएव द्वैत प्रति पादिका श्रुतियाँ भी सार्थक है सत्य ही कहती हैं, यह आपके गौर श्याम स्त्री-पुरुष आदि अङ्गों से भेद के अनुकूल ही हैं ॥ ९१ ॥

सज्जन असज्जन मित्र अथवा शत्रु ये विषमता होने पर भी आपके गुणों का अत्यन्त रुचि-कर गुण उनको तथा सर्व साधारण को परमानन्द प्रदान करता ही है । आपकी अन्योन्य तुलना में समानता होने पर भी हे प्रियतम को प्रसन्न करने का एकमात्र व्रत लेकर रहने वाली ! कुछ

ऐसी ही अलौकिक आपकी विलक्षणता सुकृति जनों को विलक्षण सुख प्रदान करती है ॥ ९२ ॥

शब्द-स्पर्श रस-रूपादि पञ्च विषयों को वैराग्यनिष्ठ जिज्ञासुओं ने यद्यपि त्याज्य बतलाये हैं तथापि भक्तजनों द्वारा अङ्गीकृत आपके दिव्य भाव भरित उन रसों को प्रेमीजन त्याज्य नहीं मानते हैं, क्योंकि आपके प्रियतम ने जिसको अपनाया है जो दिव्य अलौकिक आपके लीला बिहार का परम सुख प्रदान करने वाले है वे त्याज्य कैसे हो सकते हैं ? त्याज्य तो वे हैं जो अनर्गल संसार के विषय व्यापार में लगाये जाते हैं तथा नये नये विकारों को उत्पन्न करते हैं ॥ ९३ ॥

आपके भर्ता में अणोरणीयां आदिक एक भी दिव्य गुण नहीं थे, क्योंकि श्रौत-स्मार्त सभी सिद्धान्त वादी उनको तो निर्गुण निराकार सर्व गुण रहित ही कहते हैं, हे हरिहरार्चित चरण कमल वाली श्री जू ! मध्य में भी अगोचर-अगम्य-अप्राप्य कहे जाने वाले प्रभु भक्त वत्सल करुणानिधान कहलाते हैं यह तो आपके दिव्य काञ्ची रत्न उज्वल गुणों के संस्कार से ही अलंकृत हुए हैं ॥ ९४ ॥

प्राणपति को सदैव अत्यन्त प्रिय लगे ऐसे वस्त्रालङ्कार से अपने श्री विग्रह को संस्कारित कर एकमात्र स्वानन्द में ही निमग्न रहने वाले प्रभु के नेत्र को आप प्रकाश प्रदान करने वाली है। हे श्रीसीते ! जहाँ आनन्द कल्पोज्वल आपकी दीप्तियां प्रकाशित हो रही हैं उस दिव्य धाम में सूर्य नहीं है, चन्द्र नहीं है, बिजली नहीं है, अन्य लौकिक प्रकाश देनेवाली ज्योति नहीं है ऐसी निषेधात्मक श्रुतियाँ सार्थक होती हैं ॥ ९५ ॥

काञ्च्याद्यारणनं चरङ्कणां मंजीर मंजुध्वनि-
श्रोतुं त्वां रमणो विहार पतिते सामादिगानोद्गतिम् ।
संगीतं सुरसेवितं च समये सीते विदूरे भजन्-
व्यर्थं तन्न च सर्वथा सुकुरुते मानार्ह मानप्रदः ॥९६॥

साधर्म्यं पदवाप्तमात्ममननात्सर्वात्मना तन्मयात्-
स्यादित्येव परीक्षितुं तव सखी कान्तो यदा श्लिष्यति ।
एकैकां विविनक्ति चान्यवनितां त्वत्साम्य संकीर्तयत्-
तत्ते मर्म तुदं च नर्म मधुरा मुग्धासि यन्मैथिली ॥९७॥

ये भोगा उपकारकाश्च युवयोस्तेषां च ते तेऽपियन्-
नामा सा अवधेश्वरेश्वर मनः कान्तेति सत्वं कथम् ।
एतज्जानकि गम्यते स्वदयितच्छाया निषेधश्रुते-
र्न छायातव वल्लभोप्यसुलभः कस्यापि देवस्य तु ॥९८॥

आसङ्गात्त्वयि तस्य तावकवपुः सारूप्य लाभो न यत्-
तस्मिंस्तेन तथापि तस्य वपुषः सारूप्य लब्धिर्न यत् ।
सीते सत्यदशावतोऽस्तु वपुषोः कोऽपि स्वभावो ह्ययं-
नैवं चेत्क्षणिकत्व मेव हि तयोस्तच्चात्मनोपीष्यताम् ॥९९॥

तुष्टिः श्रीस्तव तन्निलीय हृदये सत्यात्परं ब्रह्मणा-
न्यत्रश्रु तिभिर्निषेध विधिवागास्ये च चाशास्यते ।
भूत्वाभि भ्रमरीभिरद्भुत मुखांभोजे पुनर्मृग्यते-
तासां तेन विना न शर्म सुलभं क्वापीति भातीह मे ॥१००॥

यः शृङ्गार रसो गुणैस्तु रसिकैरुत्कृष्यते सर्वतः-
सोऽङ्गीभूत तनुस्तवाङ्घ्रि कमलं गुंकारवाचाश्वति ।
तत्रस्थापि तयैव तस्य विहिता स्थायीति भावाभिधा-
स्थायी निर्णय एक एव चरणः सीते यतस्ते सदा ॥१०१॥

यस्य स्युः सहसा प्रसाद दिशयाप्यानन्दिनोऽयेश्वराः-
सोऽपि श्रीःसतनुत्वादनन नवाम्भोज प्रसाद स्पृहः ।
स्वात्मेशस्य सदात्मनातिशयितोत्कर्षात्वहे सर्वतः-
कोऽन्यस्तेनमुखप्रसाद विषय प्रत्याशया कृष्यते ॥१०२॥

आपकी दिव्य काञ्ची (करधनी) नूपुर कङ्कण आदि की मञ्जुल ध्वनि, जो आनन्द विहार के समय होती है उसको सुनकर सामगान की मधुरता तथा सुर सङ्गीत की स्वर लहरी दूर ही भाग जाती है । यह उनका कार्य कुछ व्यर्थ नहीं है क्योंकि जो सम्मान के योग्य हैं उनका मान प्रदान तो करना ही चाहिये अर्थात् उनके लज्जित होकर भाग जाने से आपकी मधुर ध्वनि की महत्ता ही बढ़ती है ॥ ९६ ॥

आपके स्वरूप का निरन्तर मनन करने से सर्वात्मना तन्मय हो जाने से जिनको आपकी समानता (सारूप्यता) प्राप्त हो गयी हैं, ऐसी सखी को आपके प्रियतम भ्रम से आप ही हैं ऐसा मानकर आलिङ्गन करते हैं, परन्तु आपके समान तो हैं यथार्थ आप नहीं है ऐसा ज्ञान होने पर फिर दूसरी सखी को ऐसे एक एक का आलिङ्गन करते हैं, यह कार्य स्त्रियों के हृदय में मार्मिक प्रहार करने वाला होता है, परन्तु हे मैथिली ! आप इतनी मुग्धा (भोली) हो कि उस समय भी नर्म मधुरा होकर हंसती ही रहती हो ॥ ९७ ॥

जो जो सुख भोग आप युगल प्रभु के उपकारक आनन्द प्रद है वह आपके प्राणपति अवधेश्वरेश्वर के मन को आपके बिना प्रिय नहीं लगते हैं इसका कारण है जानकीजी ! आप ही हैं, निषेध विधि की श्रुतियों द्वारा आप अपने प्रियतम की छाया (अनुगामिनी) हैं ऐसा कहा गया है, तब वे भी आपका अनुगमन करने से आपकी छाया के समान है। यही यथार्थ बात है, परन्तु वे आपकी छाया होकर भी आपके प्राण वल्लभ किसी भी देव को सुलभ नहीं है, तब आपकी प्राप्ति तो अति दुर्लभ ही है॥ ९८ ॥

आपकी निरन्तर सङ्गति होने पर भी श्री राघवेन्द्र को आपके सारूप्य का लाभ अद्या-वधि प्राप्त नहीं हुआ है वैसे ही आपको भी उनके स्वरूप की उपलब्धि अभी तक प्राप्त नहीं हुई है, हे सीते ! सत्य बात तो यह है कि आप दोनों के दिव्य श्रीविग्रह का कुछ ऐसा स्वाभाविक अन्तर बना ही रहता है; यदि ऐसा न होता तो आपके तथा उनके नित्यत्व में अन्तर आ जाता, क्षणिकत्व का आरोप दीखने लगता ॥ ९९ ॥

हे श्री जू ! उस सत्यं-परं-ब्रह्म को अपने हृदय में अन्तर्हित करके ही आपको सन्तुष्टि होती है, अन्यत्र निषेध विधि वाक्योपदिष्ट श्रुतियों द्वारा प्रभु के बिना कहीं भी प्रीति न करनी चाहिये ऐसा शासन किया गया है। अतः आपकी सखियां आपके मुखारविन्द की भ्रमरी बनकर पुनः आप को ही चाहती हैं, उनको आपके बिना कहीं भी कल्याण सुलभ नहीं है। क्योंकि वे तो आप में ही युगल छबि का अवलोकन करती है उनको अन्यत्र कहीं भी सुखप्रद नहीं दीखता है॥ १०० ॥

आनन्द मय रतिप्रद गुणों के कारण जिस शृङ्गार रस को सर्वोत्कृष्ट कहकर सर्वत्र सुप्र-सिद्धि की गयी है, उस शृङ्गार रस के मूर्त्त स्वरूप श्याम सुन्दर आपके श्री चरणकमलों में भ्रमर बनकर गुञ्जार करते हुए आपकी अर्चना करते हैं। पुनः वहीं स्थायी होकर उन्होंने स्थायी रस के भाव की रीति स्थिर कर दिखायी है, तथा ऐसी लीला करके हे श्री जू ! केवल आपके चरण कमल ही सदैव स्थायी निर्भयता का एकमात्र स्थान है, यह सबको सिखाया है ॥ १०१ ॥

जिसके अकस्मात् प्रसादोन्मुख कृपा दृष्टि को देखकर सभी ईश्वर परमानन्द में विभोर हो जाते हैं, वह भी हे श्री जू ! आपके परम सुन्दर मुख कमल के प्रसाद की स्पृहा ही रखता है, अपने प्राणेश्वर के सदैव आत्मीय परमोत्कृष्ट सुख को सर्वत्र बढ़ाने वाला आपके बिना दूसरा कौन है ? जो अपने मुख की प्रसन्नता के कारण अपनी ओर आकृष्ट कर सके॥ १०२॥

श्रुत्योक्त्या यद्वाक्य नादरतया स्तब्धोयदात्मप्रिय-
स्तत्स्यत् संतति बन्धनं जनकजे सत्यं त्विदं वच्मि ते ।
मह्यं कुप्यतु वा प्रसीदतु भवत्यात्मानुकुल्योन्मुखी-
सीते ! त्वां शिरसा मिनेमनयनान्मन्तुं निहन्तुं क्षमाम् ॥१०३॥

श्रीमानेष पुमाँस्त्वयैवहि सदैवास्तीति चैनं सदा-

कृत्वा युद्धेषु नीचदुर्मति रिपून् जेतुं दरिद्रानलम् ।
वेदा देवि कुतो न दाशरथिना त्वल्लाभलाभेन हि–
को विद्वान्ननु नाथवाँस्तु भवितुं यो नोत्सहेताऽखिलः ॥१०४॥

ना प्रीतिःपरमा तु राग रचना साध्येति सिद्धोदिता–
सातत्याहत लोप रादि च सुखा तेनैव लभ्येति किम् ।
तामादातुमस्तया सुमनना: पादोपसन्ना हि ते–
सीते ! संसदि दीयतेऽत्र सपथोऽन्यत्रापि चेदुच्यताम् ॥१०५॥

लक्ष्मीस्ते करवारिजे स्थितिमती यल्लोक संजीवनी–
तस्या वेदितु पद्मधारणमिदं लक्ष्म्यापि संलक्ष्यकम् ।
ज्ञात्वैतत् सहनायकैस्तव करच्छायाश्रयं ते सुराः–
सीते ! हन्तु वराक इत्यनधिकुर्घत् त्कुंकुमाणं श्रये ॥१०६॥

यत्ते भ्रू सदृशं शशाक न धनुर्बाणा तथामात्मकान्–
निर्यातुं मदनो मर्दकसदनो जातः श्रमः शीतये ।
विभ्रस्तत्कुसुमायुधो जनि जगज्जेतुं जनेशात्मजे !
त्वन्माला वलितानि तान्यपि दिवो दिव्यानि दिव्योत्सवे ॥१०७॥

भव्यं भीरु विभर्तु भावुकवरो भर्ता सहस्रं दृशां–
दृग्भ्यामेव तवैव तस्य तु परं नेत्रप्रकाशोत्सवः ।
"भासा यस्य विभाति सर्व" भुवनान्यस्यापि मानं हि ते–
भासा भूमिसुते ! वदामि न मृषा त्वत्पादपद्मेति तत् ॥१०८॥

"नैकाकी रमते" परो हि स इति श्रुत्याऽद्वितीयात्मवान्–
युक्तो यो भवितुं त्वयार्हति सदा यत् सद्द्वितीयः स तत् ।
दिव्यां ज्योति तमन्तरेण रमणं न स्यादिति प्रज्ञया–
त्वं रामेति मता स राम इति यः सीते ! समैषी श्रुतिः ॥१०९॥

श्रुत्यानन्त पदेन दर्शितपदो यो दिव्यरूपः पुमान्–
हृद् वाग्भ्योप्युपरि स्थितादनवधे दुस्तार रूपादसौ ।
सीते ! पश्य दृगञ्चलात्तव कियन्मात्रं तु दूरं व्रजे–
देषादेश परिच्छिदा रतिकृते तत्त्रानवद्यं समम् ॥११०॥

आनन्दं सुविदन् बिभेति न कुतश्चिच्चे तितप्रश्रुते-
त्वत्सम्बन्ध निबन्धनं तदिति श्रीरामस्य कामेश्वरि ।
सत्यं सद्वदनेच्छु तं सुवदने ! वैदेहि ! वेदस्तुते !
कान्धास्यात् सुसमृद्धिरस्य तु विना त्वां देवि! कालत्रये॥१११॥

त्वत्पादाम्बुज सङ्गतः सुरभयो वेदा इतीमान् पुमान्-
जिघ्रन् जानकि! नन्दति प्रियतमां त्वां स्तावयँस्तैरया ।
कृत्या शासन लेखकाँस्तव पुनस्तानेव मानेन ते-
पुष्णांश्च स्वविभूति भोग निवहान् भूयान्न आनन्दनः ॥११२॥

इदमिदमिदमार्ये स्तोत्ररत्नं त्वदीयं—
शृणु-शृणु-शृणु आर्ये रामदेवस्य देवी !
कुरु-कुरु-कुरु दासे स्तोत्तरीशे प्रसादं—
हर-हर-हर तस्या ज्ञान मादं विषादम् ॥११३॥

इति श्रीनिरुक्त लक्षण संहितायां श्रीसीतास्तवः (श्रीजानकी परत्वप्रकाशः)सम्पूर्णः
॥ शुभमस्तु ॥ ❀

श्रुतियों की उक्तियों के नाद श्रवण में निरत आपको देखकर आपके प्राण प्रियतम स्तब्ध रह जाते हैं, परन्तु यह उनके अगाध ऐश्वर्य का वर्णन जो वेद की ऋचायें करतीं हैं वह तो आपकी सङ्गति होने के कारण ही कर रही है, यह मैं आपके सम्मुख सत्य ही कहता हूं। अपने प्रियतम का पक्षपात लेकर आप मुझ पर भले क्रुद्ध हों अथवा प्रसन्न हों, हे मृगनयनी

❀ "श्रीरामवल्लभा-कुञ्ज" श्रीजानकीघाट के पुस्तकालय से प्राप्त इस स्तोत्र का नाम "श्रीजानकीपरत्व-प्रकाश" है, पिछला पत्र न होने से अपूर्ण था, परन्तु श्रीलक्ष्मणकिला-सरस्वती पुस्तकालय अयोध्या में यही स्तोत्र सम्पूर्ण मिल गया और उसका नाम "श्रीसीता-स्तवः" है। श्लोक अक्षरशः एक ही हैं। केवल नाम भेद हैं। श्रीजानकीघाट-श्रीरामवल्लभा-पुस्तकालय से प्राप्त "श्रीसीता स्तवः" भी इसी के साथ अन्यत्र छपा है। उसमें श्लोक संख्या ६ से २१ तक अक्षरशः इस "श्रीसीता स्तव" से मिलते हैं। और श्लोक सर्वथा भिन्न ही हैं। जो इसी ग्रन्थ में इसी के साथ ही प्रकाशित है।

निवेदक—
—अवधकिशोरदास

सीते ! आप मेरी बात मानकर प्यार दुलार कर सकती हैं अथवा ऐसा क्यों बोलता है ? कहकर दण्ड भी दे सकती हैं, यह तो आपके हाथ की बात है ।। १०३ ।।

पर ब्रह्म श्रीराम को "ये श्रीमान् हैं" ऐसा जो कहते हैं, वह तो श्री स्वरूपिणी आपके सदैव प्रिय हैं इसी लिये कहे जाते हैं, यही कारण है कि वे-नीच-दुर्मति-शत्रुओं को भी शिर चढ़ाकर दरिद्रा के दावानल को जीत जाते हैं। हे देवि ! दशरथ राजकुमार चक्रवर्ति राज राजेन्द्र होते हुए भी जब आपके द्वारा ही परम लाभ प्राप्त कर सके हैं तब कौन ऐसा बुद्धिमान् विद्वान् पुरुष है जो आपकी शरणागति प्राप्त कर सनाथ होना न चाहता हो ? अर्थात् आपके श्री चरणों में सम्पूर्ण उत्साह पूर्वक समर्पण न कर देना चाहता हो ।। १०४ ।।

जो प्रीति परम रागानुरागात्मिका है, वही साध्य है, ऐसा ही सिद्ध सन्तों ने कहा है, अविच्छिन्न तैल धारावत् जो अखण्ड रहती है जो कभी लुप्त नहीं होती, वह प्रारम्भ हो जाय तभी परम दिव्य सुख प्राप्त होता है, क्या उसी परम प्रेम स्वरूपा भक्ति को प्राप्त करने के लिये, सुन्दर मनन विचार करने वाले आपके श्री पादारविन्दों का आश्रय लेते हैं, हे श्री सीते ! वह तो आपकी कृपा से ही प्राप्त होगी अन्य कोई साधन नहींहै, यह तो मैं सभा में सपथ खाकर कहता हूँ। कोई दूसरा मार्ग हो तो आप ही कह दीजिये ।। १०५ ।।

लोकमें जो अमृत स्वरूपा सञ्जीवनी मानी जाती है, वह श्रीलक्ष्मीजी तो आपके हस्त कमल में रहती हैं। यही सर्व लोकों को विदित कराने के लिये आपने अपने हाथ में कमल धारण कर रखा है, जिससे लोक समझें कि कमल निवासिनी लक्ष्मी तो आपके हाथमें ही है। आपके प्राणनाथ के सहित सभी देवगणों ने यही जानकर उनके सङ्ग में सभी देवता आपके कर कमल की छत्र छाया के आश्रित होकर रहते हैं। हे सीते ! यह तुच्छ आपका चरणाश्रित सेवक भी यही जानकर आपके हा कुंकुम रञ्जित अरुणारे नखों का आश्रय लेकर धन्य हो रहा है ।।१०६।।

मद से भरे हुए मतवाले मदन (कामदेव) ने आपकी भौंहों के समान अपने धनुष-बाण बनाने के लिये बहुत परिश्रम किया परन्तु वह सफल नहीं हो सका तब अपना श्रम शान्त करने के लिये हे श्री राजकुमारी जू ! वह आपके श्रीचरणों को स्पर्श करती हुई पुष्प माला का आश्रय लेकर कुसुमायुध बनकर देवताओं के बीच विराजमान हुआ है, हे दिव्य उत्सवानन्द प्रदा-यिनी ! मैं तो यही जानता हूँ ।। १०७ ।।

हे प्रेमभीरु ! अत्यन्त भावुक हृदय वाले आपके प्रियतम प्रभु दो नेत्रों से आपके स्वरूप सौन्दर्य सुधा रस पान करने में जब असमर्थ हो गये तब उन्होंने सहस्र नयन अपना स्वरूप बनाया और आपके दिव्य नेत्र के सुप्रकाशित उत्सव का आनन्द प्राप्त किया। अतः वेदों ने जो "यस्यमासा सर्वमिदं विभाति" उसी प्रकाश से सभी भुवन सुप्रकाशित है ऐसा वर्णन किया है, वह प्रभा सुप्रकाश तो हे श्री भूमिनन्दिनी जू ! आपके ही श्रीचरण कमलों का प्रकाश है, यह मैं किञ्चित् मात्र भी असत्य नहीं कहता हूँ ।। १०८ ।।

लीजिये ! और भी कुछ सुनिये ! "स एकाकी न रमते" यह श्रुति वचन स्पष्ट अपने

जैसा ही रमण करने योग्य किसी अनुपम द्वितीय आत्मा का उद्घोष करता है, वह उपयुक्त सुन्दर द्वितीय आत्मा आपके विना दूसरा कोई हो ही नहीं सकता है, उस योग्यता को प्राप्त करने योग्य तो केवल आप ही हैं । दिव्य ज्योति के विना रमण नहीं हो सकता यह विचार करने योग्य प्रज्ञा से तो यही सिद्ध होता है कि आप ही रामा है, तथा वे राम हैं। हे सीते ! श्रुति वाक्य की सङ्गति इसके विना हो ही नहीं सकती है ॥ १०६ ॥

पुनः श्रुति वेद ने उस परब्रह्म को अनन्त नाम से प्रकट किया हैं, वह अनन्त रूप वाला दिव्य पुरुष आपके अपरम्पार दुस्तर निस्सीम स्वरूप का पार न पाकर तन-मन-वचन से आपकी ही परिधि में घिरा हुआ रहता है, हे श्री सीते ! देखिये तो वह आपकी नेत्रों के कटाक्ष से कभी किञ्चित मात्र भी कहीं दूर जाता है ? यह अनन्त तो आपके नेत्र कमल के एक देश (प्रान्त) में निरन्तर निवास करता है । अतः उनका और आप दोनों का निर्दोष आनन्त्य समान ही तो है । अथवा आपकी अनन्तता उससे भी अधिक है यह निर्णय तो आप ही कर सकती हैं ॥ ११० ॥

एक श्रुति कहती है—"आनन्दं ब्राह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन" उस ब्रह्म के आनन्द स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके विद्वान् पुरुष किसी से भी भयभीत नहीं होता है । ऐसा जो वेद वचन सुना जाता है वह तो आपके सम्बन्ध से ही सम्बन्धित है यह सुनिश्चित है । हे श्रीरामजी की सर्व कामना पूर्ण करने वाली ! हे श्री वैदेही जू ! यह बात तो परम सत्य है कि ब्रह्म का वह आनन्द स्वरूप तो आपका ही मुखारविन्द है, क्योंकि हे सुन्दर मुख वाली वेदों द्वारा परम स्तुत्य श्री किशोरी जू । आपके बिना उनके आनन्द की प्रवर्द्धिनी त्रिकाल में अन्य कौन हो सकती है ? अतः हे देवि ! वेदों का यह निर्णय कि—"पर ब्रह्म की आनन्द स्वरूपा आपका ज्ञान प्राप्त करना ही भय से निर्मुक्त होकर परमानन्द प्राप्त करना है" यही तो हुआ ॥ १११ ॥

आपके श्री चरणारविन्द का संसर्ग पाकर जो सुगन्ध लहरी चली वही तो "तस्य निः-स्वसिता वेदाः" उनके मुख से उच्चरित वेद वाणी कहलाई । हे श्री जानकी जी ! यही कारण है कि परम प्रियतमा आपका आघ्राण करने के लिये प्रियतम निरन्तर आपके प्रीति रस पाने की चाहना करते रहते हैं तथा उनके ही शासन से लेखकों को शास्त्र मर्यादा का विधान उसी प्रमाण से आपकी आनुकूलता के अनुसार ही लिखना पड़ता है । यथार्थ बात तो यह है कि आपकी स्वनिज विभूति के सौरभ से सम्पन्न भोग ही पुष्प है, उसकी मकरन्द माधुरी ही प्रभु के सहित प्रेमी परिकरों को भी आनन्द प्रदान करती रहती हैं ॥ ११२ ॥

हे आर्ये ! यही, बस यही, आपका यही स्तोत्र रत्न वारंवार सुन-सुन करके श्री रामदेव की दिव्य देवी हे श्री किशोरी जू ! दास को अपने आँचल की छत्र छाया का प्रसाद प्रदान करिये प्रदान करिये, निरन्तर प्रदान करिये तथा इसके अज्ञान से उत्पन्न विषाद अभिमानादिका हरण करिये-हरण करिये-हरण करिये यही श्रीचरणों में वारंवार प्रार्थना है ॥ ११३ ॥

"यह श्रीनिरुक्तलक्षणासंहिता का "श्रीसीतास्तव" श्रीजानकीपरत्वप्रकाश" नामक स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।"

❀ श्रीजनकनन्दिन्यै नमः ❀

"श्रीमार्कण्डेय संहितान्तर्गत"

।। श्रीजानकी नवरत्न माणिक्यस्तवः ।।

(तत्रादौ--ब्रह्माकृतस्तवः)

श्रीब्रह्मोवाच—

हेमाभामरविन्दसुन्दरदृशीं सौन्दर्यसद्वैभवां—
मन्दं मन्द मनोहरस्मितमुखीं मंदार मालान्विताम् ।
कुन्देंदीवरपाटलैस्सुरभितां वृन्दारकैर्वन्दिताम्—
वन्दे राघवसुन्दरीं त्रिभुवनैकानन्ददीपांकुराम् ।।१।।

शृङ्गारार्णव मङ्गलाङ्ग रुचिरश्रीमत्कपोलाश्रिते;
राजद्रत्नकिरीट कुंडलधरे मन्दस्मितोल्लासिते ।
काञ्चीनूपुर कङ्कणाक्कणक्कणत्कारै रवैर्मोहने,
अम्बत्वच्चरणाम्बुजद्वयमहं संचिन्तये मानसे ।।२।।

श्री ब्रह्मा जी बोलेः—

जिनके श्री अङ्ग की कान्ति सोने के समान है, जिनके कमल के समान सुन्दर नयन हैं, जो सुन्दरता के उतम वैभव से सम्पन्न हैं, मन्द-मन्द मनोहर हास्य पूर्ण जिनका मुखारविन्द है, मन्दार की माला धारण किये हुए हैं, कुन्द-कमल और गुलाब के फूलों की सुगन्धि से जिनका अङ्ग परम सुगन्ध से भरपूर है, देवगणों द्वारा जो वन्दनीय है, त्रिभुवन के आनन्द की एकमात्र कारण श्री राघवेन्द्र प्रभु की राज महिषी श्रीजानकीजो की मैं वन्दना करता हूँ ।। १ ।।

शृङ्गार शोभा की जो समुद्र है, जिनका परम रुचिर मङ्गलमय श्रीअङ्ग हैं, घुंघरारी अलकों से अलंकृत जिनके सुन्दर कपोल हैं, रत्न जटित चन्द्रिका तथा कुण्डल धारण किये हुए हैं, जो उल्लास पूर्ण मन्द मुसकान से सुशोभित हैं, श्रीचरणों के नुपूर तथा जिनके श्री करकमलों के कङ्कणों का झंकार मन को मोहित कर रहा है, ऐसी हे माँ ! श्री मैथिली जू ! आपके युगल पदाम्वुजो का मैं अपने मन में सदैव चिन्तन करता हूं ।। २ ।।

मातस्त्वदङ्घ्रि कमलद्वयगन्ध मत्त योगीन्द्रवृन्द मुनि सिद्ध सुरासुराद्याः ।
सिद्धिङ्गतास्त्रिभुवनैक महाविभूते तस्माद् भजेहमनिशं रघुवीरकान्ते ।।३।।

ब्रह्मादिदेवगणरत्न किरीट कोटि संसेवितांघ्रि कमले कमलाधिवासे ।
आनन्दकन्दलहरी शुभमन्दहासे अम्ब प्रसीद रघुनन्दनपट्टकान्ते ॥४॥

मैया ! तेरे पद कमल युगल-मकरन्द पान कर मस्त बने ।
योगीन्द्र-सिद्ध मुनिवृन्द सदा-सुर-असुर-सन्त कृत कार्य बने ॥
त्रिभुवन की दिव्य विभूति महा-श्री रघुनन्दन की पटराणी ।
मुझ पर प्रसन्न हों 'प्रेमनिधी' लघु सेवक निज सुतसम जानी ॥ ३ ॥

ब्रह्मादि देवगण कोटि कोटि-पद पङ्कज पूजे सेव्यसदा ।
रत्नालंकृत निज दिव्य मुकुट, चरणों पर धरके होय मुदा ॥
आनन्द कन्द रघुनन्दन के, हिय में आनन्द लहराती हो ।
वह मधुर मन्द मुसकान सदा, श्री जनकलली की विजयी हो ॥

हे कमल वासिनी । माँ कमले ! मां मधुर हास्य लहराती हो ।
आनन्द कन्द रघुनन्दन की पटरानी प्रसन्न शुभदायी हो ॥ ४ ॥

मन्दारपुष्परमणीय विशालशोभे माणिक्य मण्डप सुमौक्तिकपीठसंस्थे ।
अर्द्धेन्दु सुन्दर किरीट विराजमाने देवि ! प्रसीद रघुनन्दनवल्लभे माम् ॥५॥

परदेवतेति फणिराजशयाङ्गनेति आधारमूलनिलयेति जगन्मयेति ।
जानन्ति यां च मुनयो भुवनैकपूज्यां सा त्वं प्रसीद रघुनन्दनवल्लभे माम् ॥६॥

वर्णत्रयेति भुवनत्रयमोहिनीति वागीश्वरीति वसुधाधर कन्यकेति ।
लक्ष्म्यालयेति कवयस्सततं भजन्ति अम्बत्वदीय महिमागणयेन्न शेषः ॥७॥

रामप्रियेश्वरमये भुवनैकवन्द्ये कामारिसेवित विराजित पादपद्मे ।
चामीकर द्युतिनिभे शतपत्रहस्ते रामाङ्कपीठनिलये मम सन्निधत्ताम् ॥८॥

सौन्दर्य्यसार नवमोहन मङ्गलाङ्गे श्रीमत्कटाक्ष करुणामृतपूर्णसङ्गे ।
श्रीरामचन्द्र शुभवक्षसि नित्यवासे क्षीराब्धि राजतनये मम सन्निधत्ताम् ॥९॥

सिंजन्निनाद मणिनूपुर पादपद्मे मञ्जीर मञ्जुमणिकुण्डल मण्डिताङ्गे ।
कञ्जात चारुनयने करुणाम्बुवाहे अम्ब प्रसीद रघुनन्दन वल्लभेमाम् ॥१०॥

पारिजात (मन्दार) के पुष्पों से रमणीय विशाल शोभा वाली, माणिक्य मण्डित मणि मण्डप के रत्न सिंहासन पर विराजमान, अर्ध चन्द्र के समान किरीट (चन्द्रिका) से सुशोभायमान हे देवि ! हे श्री रघुनन्दन प्राणवल्लभे ! श्रीकिशोरीजी आप मुझपर प्रसन्न हो जाइये ॥ ५ ॥

जिनको मुनिजन परात्पर देवता-शेषराज की शय्या पर सोने वाले की प्राणप्रिया-जगत

परम पूजनीया हैं, इस प्रकार जानते हैं ऐसी का मूल कारण-जगद् व्यापी-त्रिभुवन में एकमात्र श्री रघुनन्दन जू की प्राण वल्लभा हे श्रीकिशोरीजी आप मुझपर प्रसन्न हो जायें ॥ ६ ॥

आप वर्णत्रय प्रणव स्वरूपिणी है, त्रिभुवन मोहिनी हैं, दिव्य वाणी की अधीश्वरी सरस्वती हैं, वसुधाधर पर्वत की कन्या पार्वती हैं, आप ही कमल निवासिनी महालक्ष्मी हैं, ऐसे अनेक रूपों में कविजन आपका भजन निरन्तर करते हैं हे अम्ब ! आपके गुणों का तो शेष भी पार पा नहीं सकते हैं ॥ ७ ॥

हे श्री रामप्रिये ! हे त्रिभुवन वन्दनीये ! हे कामारि भगवान् शङ्कर द्वारा पूजनीय चरणारविन्द वाली ! सूर्य के समान कान्तिसम्पन्न हे कमल नयने ! श्रीरामजी के अङ्क में विराजमान आप मुझे प्रत्यक्ष होकर दर्शन प्रदान करिये ॥ ८ ॥

नित्य नवीन सौन्दर्य का सार सर्वस्व-मनमोहन-मङ्गल मय दिव्य अङ्ग वाली हे श्रीसीते ! आप करुणामृत भरे श्रीमान् दिव्य कटाक्षों से परिपूर्ण शोभा सम्पन्न हैं, हे श्री रामचन्द्र जी के शुभ हृदय कमल में नित्य निवास करने वाली ! हे क्षीरसागर कन्यके ! आप कृपा कर मेरे सम्मुख हों; यही प्रार्थना है ॥ ९ ॥

श्रीचरणों के नुपुरों के मञ्जुल स्वर से अमृत सींचने वाली, करधनी तथा कुण्डल की सुन्दरता से सुशोभिते ! खिले हुए कमल दल के समान नयनों वाली ! करुणामृत की धारा प्रवाहित करने वाली हे श्री रघुनन्दन जू की प्राण वल्लभे ! मां ! आप मुझपर प्रसन्न हों ॥ १० ॥

पद्मे पद्मामनस्थेपरिमल भरिते, बालार्क कोटि द्युते-
पद्मालंकृत हस्त पद्म युगले, पद्मालये पद्मिनि ।
पद्मोल्लास विलास शोभिनयने; पद्मप्रिये पावने-
पद्मे राम मनोहरे हरिहर ब्रह्मादि पीतस्तने ॥११॥

तप्ताष्टापदभां विदेहतनयां रामाङ्क पीठस्थिताम् ।
तस्य प्रेक्षणतत्परामनिमिनयां हस्तस्थिताब्जोत्पलाम्-
रामंदाशरथिं रमा कुचलसद्धस्तं तदास्येक्षणाम्-
कस्तूरीरचनात्सुदक्षिणाव रं ध्यायेदभिष्टार्थदम् ॥१२॥

झलझ्झलित नूपुर सरञ्जित प्रदायिनीं पीतवस्त्र विलसत्तडित प्रभाकटिम् ।
क्वणत्क्वणित कङ्कण कराम्बुज युगां रघूद्वह हृदम्बुजे रमतीं भजेऽहम् ॥१३॥

अजाण्ड प्रभानन्त यन्त्राधिरूढ़े, प्रकारा च चिन्मात्र मन्त्राधिवासे ।
हरिब्रह्म रुद्राविमृग्यप्रभावे, भजे सन्ततं तारक ब्रह्मकान्ते ॥१४॥

तडिद्दामगात्रे शरच्चन्द्रवक्त्रे, कृपापांगनेत्रे त्रिमूर्त्यैकमात्रे ।
शतग्रीवहन्त्री महाभूतियन्त्रे; जगत्सृष्टितन्त्रे नमो रामकान्ते ॥१५॥

महारत्नसङ्कुल मञ्जीरनादे, स्फुरत्नलपङ्केरुहाङ्घ्रि सुगन्धिम् ।
प्रगाढिकङ्किणी बद्धकाञ्ची विभूषां, भजे सन्ततं तारकब्रह्मकान्ताम् ॥१६॥

जगन्मोहनानन्दलावण्यशीले, सदा राम पादारविन्दानुकूले ।
शतग्रीवसंहारकालाग्निकूले; नमस्सन्ततं देवि मन्दारमूले ॥१७॥

वन्दे रामाङ्कनिलयां रघुवरवदनं चन्द्रबिम्बो पमास्यां–
पृथिवी पुत्रीं कनक कमला शोभि माल्याम्बराढ्याम् ।
भक्तैर्नित्यं विनमित पदां पद्म पत्रायताक्षीं–
नानाभूषां शतबिलसितां विद्युदाभां विभूत्यै ॥१८॥

तप्तहाटकसंकाशां, कोटिचन्द्रसुशीतलाम् । सर्वालङ्कारसंयुक्तां, स्फुरन्नूपुरमेखलाम् ॥१९॥
रामस्यांके समासीनां, हेमाम्बुजकराम्बुजाम् । भजतां कामदां नित्यां, सर्वभूति सुखावहाम्॥
सर्वलक्षण सम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम् । सर्वलोकेश्वरीं देवीं, वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥२१॥

हे पद्मे ! हे पद्मासन पर विराजमान ! हे मकरन्द सुगन्ध से भरपूर ! हे बाल सूर्य से कोटि कोटि गुण द्युति सम्पन्ने ! हे कमल से अलंकृत युगल कर कमलों वाली ! हे कमलनि–वासिनी ! हे कमलिनी ! हे कमल के समान उल्लास पूर्ण विलास से सम्पन्न सुशोभित नयन वाली ! हे परम पवित्रे ! हे कमल प्रिये ! हे ब्रह्मादिकों को करुणामय स्थनों का रसपान कराने वाली उनकी भी माता ! हे श्रीराम के मन को हरण करने वाली पद्मे ! मुझ पर कृपा करें ॥ ११ ॥

तपाये हुये सोने के समान प्रकाशित–विदेह राजकुमारी श्रीरामजी के अङ्क पीठ पर विराज-मान–श्रीराम छवि रसपान करने में टकटकी लगाकर देखने में परायण–हाथ में कमल के पुष्प को धारण किये हुए, दशरथ कुमार राम के मुखचन्द्र को देखने में एकाग्र चित्त, जिनके वक्ष स्थल के स्पर्श से श्रीरामजी के दाहिने हाथ में कस्तूरी चन्दन लग गया है ऐसी सर्व अभीष्ट सिद्धि प्रदान करने वाली श्री किशोरी जी का मैं ध्यान करता हूँ ॥ १२ ॥

नूपुरों के झनझनाहट से शोभित पदार विन्द वाली, विजली के समान चमकते हुए पीले पट (वस्त्र) कटि में धारण करने वाली, कङ्कणों के मधुर स्वर से अलंकृत युगल कर कमलों वाली श्रीरघुनाथजी के हृदय में रमण करने वाली श्रीकिशोरीजी का मैं भजन करता हूं ॥ १३ ॥

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड रूपी यन्त्रराज पीठपर आप विराजमान हैं, विविध प्रकार की अर्चना रूपी चिन्मय मन्त्रों में आपका निवास है, हरि–हर–ब्रह्मा आपके प्रभाव का चिन्तवन करते

हूँ, ऐसी हे श्रीराम तारक पर ब्रह्म की कान्ता श्री जानकी जी मैं आपका निरन्तर भजन करता हूँ ।। १४ ।।

बिजली के समान शरीर वाली, शरद पूर्णिमा के चन्द्र समान मुखचन्द्र वाली, कृपा पूर्ण नेत्रोंवाली, त्रिदेवों की माता स्वरूपिणी शतग्रीव को विनाश करनेवाली, महाविभूति यन्त्र तथा जगत् सृष्टि रूपी तन्त्र में विराजमान हे श्री रामकान्ते ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥ १५ ॥

हे श्रीराम तारक ब्रह्म की प्राण प्रिये ! महा रत्नों से जड़ित नुपुर-कङ्कण तथा करधनी के मधुर स्वर से सुशोभिते ! दिव्य परिजात पुष्पों की सुगन्ध से भरपूर आपके श्रीचरण कमलों का मैं निरन्तर भजन करता हूँ ॥ १६ ॥

जगत् को मोहित करने वाले सच्चिदानन्द मय लावण्य वाली, सदैव श्रीराम चरणारविन्दों के अनुकूल रहने वाली ! शतग्रीव को संहार करने के लिये प्रलयाग्नि के समान ! हे देवी ! पारिजात के मूल में निवास करने वाली मैं आपको नमस्कार करता हूँ ॥ १७ ॥

श्री रामाङ्क में विराजमान् चन्द्रबिम्ब के समान मुखचन्द्र वाली, पृथिवी की पुत्री, सोने के बने कमल पुष्पों की माला से अलँकृत, भक्तों के द्वारा नित्य ही नमस्कार किये जाने वाले श्री चरण कमलों वाली, कमल दल के समान नेत्रों वाली, नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषित, अपनी विभूति से सैकड़ों बिजली के समान स्वयं प्रकाशित श्री रामचन्द्र जू की प्रिय पत्नी श्री जानकी जी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १८ ॥

तपे हुए सोने के समान दिव्यस्वरूपवाली, कोटि कोटि चन्द्रों के समान सुशीतल, सभी अलङ्कारों से अलंकृत नूपुर तथा करधनी से विकसित, श्रीरामजी के अङ्कमें विराजमान, स्वर्ण के समान पीले कमल को हस्त में धारण करने वाली, भजन करने वालों की सभी कामनाएं पूर्ण करने वाली, नित्य ही सम्पूर्ण विभूतियों का सुख प्रदान करने वाली, सर्व लक्षण सम्पन्ना, सभी आभूषणों से विभूषित सभी लोकों की एकमात्र अधीश्वरी देवी श्रीरामवल्लभा जू का मैं वन्दन करता हूँ ॥ १९-२०-२१ ॥

अरुणायुत कोटि भासमाना, तरुणाम्भोरूह लोचनाभिरामाम् ।
शरणागत वत्सलाङ्कनिलयां, वरुणालयकन्यकां भजेऽहम् ॥२२॥

शरच्चन्द्रकोटिप्रभा भासमानां, लसद्रत्नताटङ्कगण्डस्थलाढ्याम् ।
स्फुरन्मौक्तिकाबद्ध केयूरभूषां, भजेसंततं तारकब्रह्मकान्ताम् ॥२३॥

देवीं काञ्चन दाम कान्तिसदृशीं, कञ्जातपत्रेक्षणाम्-
राका चन्द्रमुखीं करेणदधतीं, हेमाम्बुजं लीलया ।
आसीनां कमलासने सुरुचिरां, रामस्य पार्श्वेस्थिताम्-
सीतां मातरमाश्रयामि भजतां माङ्गल्य सम्पत्प्रदाम् ॥२४॥

अम्भाम्बुज वासिनीं स्मितमुखीं, हारावलीभूषिताम् ।
कस्तूरी घनसारचर्चितकुचां, क्षौमाम्बरालंकृताम् ।
रत्नोन्मीलित कुण्डलां रघुवरस्याङ्के सदा संस्थिताम्–
वन्दे मातरमाश्रयामि भजतां, माङ्गल्य सम्पत्प्रदाम् ॥२५॥

विद्युत्पुञ्ज निभामलाङ्गरुचिरां, चाम्पेयचापोज्वलां–
चन्द्रादित्यकिरीट मण्डितलसत्पीताम्बरा लंकृताम् ।
रामां कल्पित वैभवां परिलसत्पीताम्बरा लंकृताम्–
देवीं शोकहरां भजामि सततं सौभाग्य सम्पत्प्रदाम् ॥२६॥

सीतांचारुशुभेक्षणांजनकजां, रामस्य संगस्थिताम्–
काञ्चीकङ्कण हारनूपुर लसत्कर्णावतंसोज्वलाम् ।
जातीचम्पककेतकीविरचितां, स्निग्धजांबूनदाभाम्–
देवीं शोकहरां भजामिसततं, सौभाग्य सम्पत्प्रदाम् ॥२७॥

सकल भुवनभूमि योगिभिः स्तूयमानां विलसितकरपद्मां रामपार्श्वेनिविष्टाम् ।
तव चरणसरोजे भक्तिहीनं दयालो परमकरुणया त्वं रक्ष मां त्वां भजेऽहम् ॥२८॥

शरदिन्दुविकाशमन्दहासामरविन्दायतलोचनाभि रामाम् ।
सुरवृन्द किरीट पादां रघुवंशोद्भव सुन्दरीं भजेऽहम् ॥२९॥

॥ इति ब्रह्माकृतस्तुतिः ॥

करोड़ों अरुणोदय के समान प्रकाशमान–तरुण नूतन खिले हुए कमल के समान बड़े–बड़े सुन्दर नेत्रों वाली–शरणागत वत्सल प्रभु की गोद में निवास करने वाली–समुद्र तनया श्री जू का मैं भजन करता हूं ॥ २२ ॥

करोड़ों शरद पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान शोभा कान्ति सम्पन्न–रत्न जटित ताटङ्क (कर्णफूल) से सुशोभित कपोलों वाली मणिमुक्ता जटित चमकते हुए केयूर (बाजूबन्द) से विभूषिता–तारक ब्रह्म प्रभु श्रीराम की कान्ता श्रीजानकीजी का मैं भाजन करता हूं ॥ २३ ॥

कञ्चन की माला के समान कान्ति वाली–कमल के दल के समान विशाल नेत्रों वाली शरद चन्द्र के समान मुख वाली–हाथ में कमल पुष्प लेकर खेलती हुई, कमलासन पर विराजमान परम रुचिर–श्रीरामजी के पास में बैठी हुई भजन करने वालों को मङ्गलमय सम्पदा प्रदान करने वाली श्रीसीता मैया का मैं आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ २४ ॥

कमल में निवास करने वाली–मन्द स्मित मुखारविन्द वाली–हार मालाओं से विभूषिता–कस्तूरी चन्दनादि से वक्ष स्थल को चर्चित किये हुए रेशमी सुन्दर वस्त्र धारण करने वाली-रत्न जटित कुण्डलों से सुशोभित–श्री रघुवर जू के अङ्क में सदैव विराजमान–माँ सीता जी की मैं वन्दना करता हुआ, आश्रय ग्रहण करता हूँ। जो भजन करनेवालों को मङ्गलमय सम्पत्ति प्रदान करती रहती है ॥ २५ ॥

बिजली के समूह की भांति सुप्रकाशित–निर्मल–रुचिर अङ्गवाली, चम्पा पुष्प से बने धनुष के समान परमोज्वला चन्द्र तथा सूर्य के समान तेजस्वी किरीट से अलंकृत पीताम्बर धारण किये हुए–श्रीराम के सङ्कल्पित वैभव की प्रत्यक्ष प्रतिमा–पारिजात मंदार माला से सुमण्डित–समस्त शोक को हरण करने वाली तथा सौभाग्य सम्पत्ति प्रदान करने वाली श्रीसीता देवी का मैं भजन करता हूँ ॥ २६ ॥

सुन्दर शुभ तथा रुचिर दिव्य दृष्टि वाली–श्रीराम के सङ्ग में विराजमान श्रीजनकदुलारी कङ्कण–नूपुर–कटिसूत्र तथा हार एवं कर्णफूलों से अलंकृत–जूही–चम्पा एवं केतकी से भी अधिक रुचिकर–सुचिक्कन स्वर्ण के समान–समस्त शोक हरण करने वाली–सौभाग्य सम्पत्ति प्रदायी श्री सीता देवी का मैं भजन करता हूँ ॥ २७ ॥

चौदहों भुवनों की जन्मभूमि–योगियों के द्वारा परम स्तुत्य–परम सुन्दर कर कमलों वाली श्रीराम के पास में विराजमान–हे श्री जानकी जी ! मेरे जैसे आपकी भक्ति से विहीन चरणकमल में पड़े हुए दीनजन को हे परम दयालू ! आप अपनी अकारण करुणा से ही रक्षा करिये, मैं तो आपका ही भजन करता हूँ ॥ २८ ॥

शरद् चन्द्रमा की किरणों के समान मधुर मन्द हास्य वाली–अरविन्द लोचना–परम रमणीय– देवताओं के किरीटों द्वारा वन्दनीय चरणों वाली रघुवंश विभूषण श्रीराम की सुन्दरी हे श्रीसीता जी मैं तो आपका ही भजन करता हूँ ॥ २९ ॥ यह ब्रह्म स्तुति सम्पूर्ण हुई ॥

—: इति श्रीब्रह्म स्तुतिः :—

अथ शिवकृत स्तुतिः—

वन्दे रामाङ्कनिलयां करधृतकमलां, चारुहासां सुनासाम्–
चन्द्राभां कम्बुकण्ठीं स्फुरितकचभरां पुष्पकोदण्डहस्ताम् ।
सर्वालङ्कारदीप्तां मणिमयमुकुटां, दिव्यमालाम्बराढ्याम्–
देवीं कर्णान्तनयनामाश्रित दुरितहरां, रत्नसिंहासनस्थाम् ॥३०॥

वन्दे श्रीरामकान्तां स्तनभरं नमितां, दिव्य हेमाम्बराढ्याम्–
नानालङ्कारयुक्तामभय वरकरां, पद्मसिंहासनस्थाम् ।

योगीन्द्रैर्मुनि मानसाब्जनिलयां, ब्रह्मादिसंसेविताम्—
कारुण्यामृत वीक्षणां सुनयनां कल्याण सम्पत्प्रदाम् ॥३१॥

विद्युद्भासांशुभांगीं विपुल कटितटीं, पद्मपत्रायताक्षीम्—
उद्यद्रत्न किरीट कुण्डलधरां, सुस्निग्ध मन्दस्मिताम् ।
विद्यां वेदमयीं विचिन्त्य विलसद्; भूतिप्रदां भासुराम्—
ध्याये श्रीरामकान्तां हरिहर ब्रह्मादिभिस्संसेविताम् ॥३२॥

श्रीमच्चन्दन चर्चितोन्नतकुचां, सा चीत माल्याम्बराम्—
ताटङ्क द्युति सत्कपोल युगलां, ग्रैवेयकालंकृताम् ।
काञ्ची कङ्कण हंसिका झणझणत्मञ्जीर पादाम्बुजाम्—
श्रीरामांकगतां सरोरुह करां, देवीं भजे जानकीम् ॥३३॥

नीलाम्भोज दलाभि रामनयनां, नीलाम्बरालंकृताम्—
गौराङ्गीं शरदिन्दु सुन्दरमुखीं, विस्फोरविम्बाधराम् ।
कारुण्यामृतवर्षिणीं, हरिहर ब्रह्मादिभिर्वन्दिताम्—
ध्याये भक्तजनेप्सितार्थफलदां, रामप्रियां जानकीम् ॥३४॥

सीतामुत्फुल्ल पङ्केरुह कलितकरां राघवस्याङ्कदेशे—
राजन्तीं राजराजप्रिय नुतिविभवां राजविंबोपमास्याम् ।
विश्वानन्दकरीं विबुध युवतिभिस्सेव्यमानां समन्तात्—
वैदेहीं भावयेऽहं हृदय सरसिजे तत्त्व विज्ञातरूपाम् ॥३५॥

॥ इति शिवकृत स्तुतिः ॥

अथ शिवस्तुतिः—

श्रीराम के अङ्क में निवास करने वाली, हाथ में कमल पुष्प धारण किये हुए, मनोहर हास्य सम्पन्न, उन्नत सुन्दर नासिका से शोभित, चन्द्रमा के समान प्रकाशित-शङ्ख के समान ग्रीवा वाला, घुंघराले लहराते हुए केशों वाली; फूलों का धनुष धारण किये हुए; समस्त अलङ्कारों से युक्त, प्रदीप्त मणि मय मुकुट पहने हुए, दिव्य मालाओं से अलंकृत, कान के समीप पहुंचे हुए बड़े विशाल नयनों वाली, आश्रितों के पापों को हरण करने वाली, रत्न सिंहासन पर विराजमान श्रीजानकीजी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ३० ॥

दिव्य हेमवर्ण के वस्त्र धारण किये हुए, स्तनों के भार से झुकी हुई, नाना प्रकार के अलङ्कारों से अलंकृत, अभय वरदान देने की मुद्रा में विराजमान, कमल के सिंहासन पर विराजी

हुई, योगीन्द्र, मुनिजनों के हृदय कमल में निवास करने वाली, ब्रह्मादिक देवताओं द्वारा सुसेवित करुणा दया रूपी अमृत से भरी कृपा दृष्टि से देखने वाली, सुन्दर नयनों वाली, कल्याण स्वरूप सुन्दर सम्पत्ति को प्रदान करने वाली श्रीराम कान्ता को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ३१ ॥

विजली के समान चमकती हुई, कटि से नीचे का भाग जिनका भारी है, ऐसी कमल दल के समान विशाल नेत्रों वाली, रत्नों से जटित किरीट-चन्द्रिका-कुण्डल धारण करने वाली, अत्यन्त स्नेह भरी मधुर मन्द मुसकान से विहंसती हुई, विद्या वेद्य श्रीराम ब्रह्म से तदाकार रूपिणी, निरन्तर चिन्तवन करने योग्य ऐश्वर्य जिसको सभी चाहते हैं, ऐसी विपुल सम्पत्ति को प्रदान करने वाली, स्वयं प्रकाशित, हरि-हर ब्रह्मादिक देव गणों द्वारा सुसेवित श्रीराम कान्ता का मैं ध्यान करता हूँ ॥ ३२ ॥

चन्दन चर्चित श्री शोभा सम्पन्न उन्नत वक्ष स्थल वाली, तमाल के समान नील श्याम वर्ण वस्त्र तथा माला धारण किये हुए ताटङ्क (कर्णफूल) की कान्ति से कपोलों को प्रकाशित करती हुई-कङ्कण-केयूर-कटिसूत्र तथा नूपुरादिके झन्कार से सुशोति पादारविन्द वाली श्रीरामजी की गोद में विराजमान, कर में कमल पुष्प धारण किये हुए श्री जानकी देवी का मैं भजन करता हूँ ॥ ३३ ॥

नील कमल दल नयनी सुन्दर, साड़ी नीली शुभ पहनी है ।
गोरी-शरद चन्द्रमा जैसी-मुख वाली सुख सहनी है ॥
लाल ओष्ठ बिम्बाफल जैसे-करुणामृत रस वरसाती ॥
हरिहर ब्रह्मादिक देवों से वन्दित सब गुण सरसाती ॥
ध्याता जन के सफल मनोरथ-राम वल्लभा करती हैं ।
परम पूज्य श्री जनकलली जू प्रेमनिधी उर भरती हैं ॥ ३४ ॥

नूतन विकसित अरविन्द पुष्प को धारण किये हुए, श्री राघवेन्द्र जू के अङ्क में विराजमान, राज राजेन्द्रों द्वारा अभिवन्दनीय वैभव सम्पन्ना, बिम्बा फल के समान मुख की शोभा युक्त अखिल विश्व को परमानन्द प्रदायिनी, देवाङ्गनाओं द्वारा सम्यक रीति से सुसेवित, तत्त्व विज्ञान की पराकाष्ठा स्वरूपा, श्री वैदेही जू का मैं हृदय कमल में ध्यान करता हूँ ॥ ३५ ॥ इस प्रकार यह श्रीशिव स्तुति सम्पूर्ण हुई ॥

॥ इति श्रीशिव स्तुतिः ॥

अथ श्रीविष्णुकृत स्तुतिः—

सुरत्न प्रभापुञ्ज मञ्जीरभासां, जपा पुष्प शोभां लसत्पद्महस्ताम् ।
शरच्चन्द्रिका चारुमदस्मितास्यां, भजे संततं तारक ब्रह्म कान्ताम् ॥३६॥

अष्टादश भुजां देवीं चन्द्रसूर्याग्नि लोचनाम् । शतग्रीव महादैत्यमर्दिनीं राघव प्रियाम् ॥३७॥

महावीर घोर प्रतापाट्टहासां, स्फुरत्कोटि दैत्येन्द्र मरोभयुक्ताम् ।
शतग्रीव कालानल ज्वालशांति त्वदन्यो न शक्तस्समस्तैकदेवि ॥३८॥

हरिहर कमलासनादि भूतिं, तव करुणावर लब्ध मङ्गलम् ।
रघुवर वर वल्लभे त्वदीयमगणित धन वैभवं न जाने ॥३६॥

हेमाभामम्बुजकरां, रामालोकान तत्पराम् । ध्यायेत्प्रसन्नवदनां, देवीं रामांकसंस्थिताम् ॥४०॥

अथ विष्णु स्तुतिः—अब श्रीविष्णु भगवान् स्तुति करते हैं—

जिनके चरणों के नूपुर रत्नों की प्रभा से चमकते रहते हैं, जिनके हस्त कमल जपा पुष्प (ओड़हुल के फूल) के समान लाल लाल हैं, शरद चन्द्रमा की किरणों की भांति जिनका मन्द मन्द हास्य छिटकता रहता है, ऐसी तारक ब्रह्म प्रभु श्रीराम की कान्ता का मैं निरन्तर भजन करता हूं ॥ ३६ ॥

अष्टादश भुजा वाली, सूर्य चन्द्र अग्नि तीनों जिनके नेत्र हैं, शतग्रीव महादैत्य की मर्दिनी श्रीसीताजी के अवतार स्वरूपा दुर्गा रूपिणी श्रीजानकीजी की मैं वन्दना करता हूं ॥ ३६ ॥

करोड़ों राक्षस रूपी हाथियों के बीच रण मैंदान में सिंहनी के समान क्रीड़ा करती हुई, हिरण्य कशिपु विदारिणी नृसिंह स्वरूपिणी तथा महाबीर श्री हनुमान जी के घोर अट्टहास में जिनका प्रताप झलक रहा है । शतग्रीव रूपी कालानल की ज्वाला शान्त करने को आपके विना दूसरा कोई समर्थ नहीं है अतएव हे माता ! आप ही समस्त विश्व की एकमात्र महान् देवी है ॥ ४८ ॥

हरि-हर तथा कमलासन ब्रह्मादिकों की विभूति आपके वरदान से प्राप्त सुमङ्गलमय दीख रही है । हे श्री रघुनाथ जी की प्राण वल्लभा श्री किशोरी जी आपके अगणित वैभव धन को हम कैसे जान सकते हैं ॥ ३९ ॥

हेम के समान सुवर्ण वर्ण वाली, कमल पुष्प कर में धारण किये हुए, श्रीरामजी के दिव्य दर्शन में एकाग्र चित-प्रसन्न मुखारविन्द वाली, श्रीरामजी के अङ्क में विराजमान श्रीजानकीजी का मैं ध्यान करता हूं ॥ ४० ॥ यह श्रीविष्णु स्तुति सम्पूर्ण हुई ॥

॥ इति श्रीविष्णु स्तुतिः ॥

अथ ब्रह्मकृत नमस्कारः—

यक्षकिन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधरैस्सदा । सेव्यमान पदाम्भोजां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४१॥
चन्द्रमण्डल मध्यस्थां चन्द्रबिम्बोपमाननाम् । चन्द्रकोटि प्रभांदेवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४२॥
विद्युत्पुञ्ज प्रभाभासां सुरासुर नमस्कृताम् । त्रयी मयीं सूक्ष्मरूपां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४३॥
श्वेतपद्मसमासीनां श्वेतपद्म कराम्बुजाम् । माल्याम्बर धरां देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४४॥
आदि मध्यान्त रहितां पुण्डरीके निवासिनीम् । नाद ब्रह्ममयीं देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४५॥
ब्रह्मेन्द्र वन्दितपदां सृष्टिस्थित्यन्त कारिणीम् । परानन्दमयीं देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४६॥

पद्मासनां पद्महस्तां पद्मपत्र निभेक्षणाम् । पद्मालयां पद्मगन्धां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४७॥
पद्मप्रियां पद्मशोभां पद्मिनीं पद्ममालिनीम् । पद्महस्तां पद्मपदां वन्दे श्रीरामवल्लभाम्॥४८॥
हेमपद्मासमासीनां नीलकुञ्चित मूर्द्धजाम् । तरुणादित्य संकाशां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४९॥

अथ ब्रह्म नमस्कारः—

यक्ष-किन्नर-गन्धर्व-सिद्ध विद्याधरों द्वारा सदैव सेवनीय चरणारविन्दवाली, श्रीरामवल्लभा जू को मैं वन्दन करता हूँ ॥ ४१ ॥ चन्द्र मण्डल के मध्य विराजमान चन्द्र बिम्ब के समान मुख चन्द्र वाली, करोड़ों चन्द्रमा के समान प्रभा सम्पन्न श्रीराम वल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४२ ॥ बिजली के प्रभा समूह के समान चमकती हुई, सुर असुरों द्वारा नमस्कृता, वेदत्रयी गायत्री रूपा सूक्ष्म स्वरूप से सर्वान्तिर्यामी श्रीराम वल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४३ ॥ श्वेत कमल पुष्प पर विराजमान, श्वेत कमल पुष्प कर में धारण किये हुए श्वेत कमल पुष्पों की माला तथा श्वेत वस्त्र पहने हुए श्रीरामवल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४४ ॥ जिसका आदि मध्य तथा अन्त कोई जानता नहीं है, जो कमल पुष्पों के सिंहासन पर विराजमान है, जो नाद ब्रह्म मयी परात्परा देवी हैं ऐसी श्रीराम वल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४५ ॥ ब्रह्मा इन्द्रादि देवताओं द्वारा वन्दनीय चरणारविन्द वाली, सृष्टि की उत्पत्ति-पालन-प्रलय करने वाली, परानन्दमयी देवी श्री रामवल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४६ ॥ कमल के आसन पर विराजमान, कमल पुष्प हाथ में धारण किये हुए कमल दल के समान विशाल नयन वाली, कमल पुष्प की भांति जिनके श्री अङ्ग से सुगन्धि फैल रही है। ऐसी कमलनिवासिनी श्री रामवल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ४७ ॥ जिनको कमल पुष्प अति-प्रिय हैं, जो स्वयं सभी नारियों में श्रेष्ठ पद्मिनी हैं, जो पद्म की माला धारण किये हैं, जिनके हस्त तथा चरण कमल के समान अति कोमल तथा सुन्दर हैं उन श्रीरामवल्लभाजू का मैं वन्दन करता हूँ ॥ ८८ ॥ स्वर्ण कमल पर विराजमान काले घुंघराले केशों से सुशोभित, तरुण आदित्य के समान महान् तेजस्वी श्री रामवल्लभा जू का मैं वन्दन करता हूँ ॥ ४९ ॥ दिव्य माला तथा दिव्य कपड़े पहने हुए, तपाये हुए सोने के समान चमकती हुई चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली श्री रामवल्लभा जू का मैं वन्दन करता हूँ ॥ ५० ॥ श्रीविदेह राजकुमारी, मन्दस्मित मुखारविन्द वाली, इन्दीवर कमल के समान नेत्रों वाली श्री रामवल्लभा जू का मैं वन्दन करता हूँ ॥ ५१ ॥ अत्यन्त नयनाभिराम श्रीरामजी के हृदय में विराजमान, श्रीरामजी के अङ्क में निवास करने वाली श्री रामवल्लभा जू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ५२ ॥ ये बारह श्लोक "श्रीरामवल्लभा स्तोत्र" के नाम से प्रसिद्ध हैं ॥

॥ इति ब्रह्म नमस्कारः ॥

दिव्यमाल्याम्बर धरां तप्तचामीकर प्रभाम् । चारु चन्द्राभवदनीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
विदेहतनयां देवीं मंदस्मित मुखाम्बुजाम् । इन्दीवर विशालाक्षीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
रामां राजीवनयनां रामवक्षस्थलालयाम् रामाङ्कपीठे राजन्तीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥

॥ इति ब्रह्मकृत नमस्कारः ॥

अथ शिवकृत स्तुतिः —

कपूर्र मिश्रहरिचंदन चर्चितांगी कारुण्य पूर्णकमनीय कटाक्षशोभे ।
अम्बत्वदीय चरणाम्बुजमाश्रयेऽहं रामाङ्कपीठनिलये रमणीयवेषे ॥५३॥
सुर निकर वर किरीट रत्नद्युति विराजितांघ्रि कमले ।
रघुवर सुन्दरी सुनेत्रे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥५४॥
श्रीरामवक्षस्थल राजितालये शीतांशु विम्बद्युति मंदहासे ।
त्रिकालरूपत्रय भासमाने त्वं वै प्रसीदरघुनन्दन वल्लभेमाम् ॥५५॥
मन्दारवृन्द तरुमूल महासुरत्न, सिंहासने कनकमण्डप मध्यसंस्थे ।
ब्रह्मादिदेव मुकुटाश्चित पादपीठें, देविप्रसीद रघुनन्दनवल्लभे माम् ॥५६॥
नागाष्टयुक्तवर मौक्तिकपीटसंस्थे; नागाधिपादसुरपूजित पादपद्मे ।
नागात्मके सगुणनिर्गुणभासमाने, देवि प्रसीद रघुनन्दनवल्लभे माम् ॥५७॥
मंजीररत्न परिशोभितपादपद्मे, मंदारचम्पकविराजित माल्यभूषे ।
कंजातपत्रकमनीयविशालनेत्रे, देवि प्रसीद रघुनन्दनवल्लभे माम् ॥५८॥
माणिक्यमंजीरपदारविंदां रामार्क सम्फुल्लमुखारविन्दाम् ।
सर्वार्थ दानोद्यत पाणिपद्मां देवीं भजे राघववल्लभे त्वाम् ॥५९॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेय संहितायां हरिहरब्रह्मादि प्रोक्त श्रीजानकी नवरत्नमाणिक्यस्तवो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥

अथ शिव नमस्कारः— अब शिवजी स्तुति करते हैं:—

कपूर्र मिलाये हुए हरिचन्दन से (घृष्टं च तुलसी काष्ठं कपूर्रागरुयोगतः। अथवाकेशरैर्योज्यं हरिचन्दनमुच्यते (पद्म पुराण–पताल खण्ड अ० ८१–५६) सुचर्चिता–करुणा पूर्ण अत्यन्त कमनीय कृपा कटाक्ष से सुशोभित–श्रीरामजी के अङ्क पीठ पर रमणीय वेष धारण कर विराजी हुई, हे माँ ! मैं आपके ही श्रीचरण कमलों का आश्रित हूँ ॥ ५३ ॥ देवताओं के समूहों के शिर पर धारण किये हुए किरीटों की रत्न प्रभा से प्रकाशित जिनके श्रीचरण कमल हैं, त्रिभुवन की

दिव्य विभूति जो प्रदान करती हैं, ऐसी करुणा-दया-कृपा से भरे तीन नेत्रों वाली श्री रघुवर सुन्दरी श्री जानकी जी मुझ पर प्रसन्न हों ॥ ५४ ॥ श्रीरामजी के वक्ष स्थल में विराजमान चन्द्र बिंब के समान कान्ति सम्पन्न मन्द हास्य वाली, भूत-भविष्य वर्तमान त्रिकाल तथा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर त्रिदेव के रूप में सदैव सर्वत्र विराजमान हे श्री रघुनन्दन प्राण वल्लभे ! आप मुझ पर प्रसन्न हो ॥ ५५ ॥ पारिजात वृक्ष के नीचे बने हुए दिव्य रत्न सिंहासन पर कनक मण्डप के मध्य में विराजमान-ब्रह्मादिक देवताओं के मुकुटों से पूजनीय श्री पादपीठ पर श्रीचरण कमल पधराये हुए विराजी हुई श्री रघुनन्दन जू की प्राण वल्लभा हे श्रीदेवि ! आप मुझ पर प्रसन्न हों ॥ ५६ ॥ अष्ट कुली नागों से युक्त मुक्तामणि पीठ पर बैठी हुई-नागाधिराजों के द्वारा तथा देवाधिराजों द्वारा पूज्य चरणारविन्द वाली, नागों की आत्म स्वरूपा-सगुण निर्गुण उभय रूप से प्रकाशित श्री रघुनन्दन प्राणवल्लभे हे श्रीदेवी ! आप मुझ पर प्रसन्न हों ॥ ५७ ॥ रत्न जटित नूपुर (पायजेब) जिनके पाद पद्मो में सुशोभित है, मन्दार माला तथा चम्पक माला से जो विभूषित है, कमल दल के समान बड़े-बड़े विशाल जिनके नेत्र हैं ऐसी हे श्रीरामवल्लभे श्रीदेवी ! आप मुझ पर प्रसन्न हों ॥ ५८ ॥ मणि मुक्ता से अलंकृत नूपुर जो श्रीचरण में पहने हुए हैं, श्रीराम स्वरूप सूर्य की कान्ति से जिनका मुख कमल अत्यन्त प्रफुल्लित है, सर्व प्रकार के अभीष्ट मनोरथों की पूर्ति करने के लिये जिनके कर कमल सदा उद्यत (आगे बढ़े हुए) रहते हैं ऐसी हे श्री राघव जू की प्राण वल्लभा श्रीकिशोरीजी आप मुझपर प्रसन्न रहें ॥ ५९ ॥

"इति श्रीमार्कण्डेय संहिता कथित श्रीहरि हर-ब्रह्मादिको द्वारा किया गया यह "श्रीजानकी नवरत्न माणिक्य स्तव" नामक पन्द्रहवाँ अध्याय सम्पूर्ण हुआ ।"

॥ श्रीलक्ष्मीजी से प्रार्थना ॥

दुरापा दुर्वृत्तैर्दुरितदमने दारुणपरा, दयार्द्रा दीनानामुपरिदलमिन्दीवरनिभा ।
दहन्ती दारिद्रय द्रुम कुलमुदार द्रविणदा, त्वदीया दृष्टिर्मे जननि ! दुरदृष्टं दलयतु ॥

—श्रीलक्ष्मी लहरी ॥ ३५ ॥

दुष्टाचरण करने वालों कोदुर्लभ, शरणागतों के पाप नाश करने में परम प्रचण्ड, दीनजनों पर सदैव परम दया से भरी हुई कमल दल नयनी, दारिद्रय के वन को जला कर भस्म कर देने वाली, प्रसन्न होकर उदारता पूर्वक धन प्रदान करने वाली हे माँ ! तुम्हारी कृपा दृष्टि मेरे दुर्भाग्य का दलन करे ।

श्रीमिथिला प्रार्थना स्तोत्रम्

ब्रह्मादयः सुरगणाः स्तुवन्ति वेदवाक्यतः । नित्यस्थले नित्यलीले नित्यधाम्नि नमोऽस्तुते ॥
धन्ये त्वं मिथिले देवि ! ज्ञानदामुक्ति दायिनी । रामस्वरूपे वैदेही सीताजन्म प्रदायिनी ॥१७॥
पापविध्वंसिके मातर्भवबन्ध विमोचिनी । यज्ञदान–तपो–ध्यान स्वाध्याय फलदे शुभे ॥१८॥
कामिनां कामदे तुभ्यं नमस्यामो वयं सदा । इत्यादि स्तुतिभिर्नित्यं स्तुवन्ति निवसन्चित ॥
अ० १० श्लो० १६ तः १९ पर्यन्तम् ॥

नमस्ते मिथिले पुण्ये सीताराम पदाङ्किते । सुरादि पूजिते नित्ये पराभक्ति प्रदे शुभे ॥
रामानन्द करी तुभ्यं नमस्ते मुक्तिदायिनी । ... ...

कीटापतङ्गा मशकाश्च सर्वे जलेचरा भूमि चराश्च सर्वे ।
गच्छन्ति ते भूमिनिवास पुण्यात् परंपदं योगि जनैर्दुरापम् ॥

अहं पापातियुक्तोऽपि त्वया मुक्तो न संशयः । तस्मात्त्वां मिथिले नित्यं नमस्यामि कृपां कुरु ॥

श्रीब्रह्मादिक देवगण वेदवाक्यों से श्रीमिथिला धाम की इस प्रकार स्तुति करते हैं– हे नित्यस्थले ! हे नित्य लीलाविभुति ! हे नित्यधाम ! आपको नमस्कार है ॥१॥ हे ज्ञान तथा मुक्ति देने वाली ! श्रीसीताजी को जन्म प्रदान करने वाली ! हे राम स्वरूपे ! हे विदेहराज पालिते ! हे श्रीमिथिले देवि ! आप धन्य हैं ॥२॥ हे माता ! हे पाप विध्वंस करने वाली ! आप भवबन्ध छुड़ाने वाली हैं तथा हे शुभप्रदे ! आप यज्ञ–दान–तप ध्यान तथा स्वाध्याय करने का पुण्य फल प्रदान करने वाली हो ॥ ३ ॥ आप कामना रखने वालों की मनो कामना पूर्ण करती हो, हम सब आपको नमस्कार करते हैं । इत्यादि स्तुति वचनों द्वारा देवगण श्रीमिथिलाजी की स्तुति करते हैं तथा श्रीमिथिलाधाम में निवास करते हैं ॥ ४ ॥

हे श्रीसीताराम पदाङ्किते ! हे मिथिले ! हे पुण्य स्वरूपे ! आपको नमस्कार है । हे देवताओं द्वारा पूजिते ! हे नित्य रूपे ! हे पराभक्ति प्रदायिनी ! हे शुभ स्वरूपे ! हे मुक्ति प्रदायिनी ! श्री राम जी को परमानन्द देने वाली ! आपको नमस्कार हैं ॥ १ ॥ आपकी भूमि में निवास करने से कीड़े–फतिंगे–मक्खी–मच्छर–जलचर–थलचर–सभी प्रकार के देहधारी योगियों को भी परम दुर्लभ ऐसे परम धाम को प्राप्त कर लेते हैं ॥ २ ॥ अत्यन्त पापों से भरा हुआ होते हुए भी आपने मुझको तार दिया है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है, इसलिये मैं आपको नित्य नमस्कार करता हूँ । आप मुझपर कृपा करें ॥ ३ ॥

यह बृहद्विष्णुपुराणीय श्रीमिथिलामाहात्म्य में कथित- श्रीमिथिला प्रार्थना स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।

श्रीसीताराम युगलस्तोत्रम्

श्रीहनुमानुवाच—

नमो रामाय हरये विष्णवे प्रभविष्णवे । आदि देवाय देवाय पुराणाय गदाभृते ॥१॥

विष्टरे पुष्पके नित्यंनिविष्टाय महात्मने । प्रहृष्ट वानरानीक जुष्टपादाम्बुजायते ॥२॥

निष्पिष्ट राक्षसेन्द्राय जगदिष्ट विधायिने । नमः सहस्र शिरसे सहस्र चरणाय च ॥३॥

सहस्राक्षाय शुद्धाय राघवाय च विष्णवे । भक्तार्ति हारिणे तुभ्यं सीतायाः पतये नमः ॥४॥

हरये नारसिंहाय दैत्यराज विदारिणे । नमस्तुभ्यं वराहाय दंष्ट्रोद्धृत वसुन्धरे ॥५॥

त्रिविक्रमाय भवते बलियज्ञ विभेदिने । नमो वामनरूपाय महामन्दरधारिणे ॥६॥

नमस्ते मत्स्यरूपाय त्रयीपालन कारिणे । नमः परशुरामाय क्षत्रियान्तकराय ते ॥७॥

नमस्ते राक्षसघ्नाय नमो राघव रूपिणे । महादेव महाभीम महाकोदंड भेदिने ॥८॥

क्षत्रियान्तकर क्रूर भार्गव त्रास कारिणे । नमोस्त्वहल्या संताप हारिणे चापहारिणे ॥९॥

नागायुत बलोपेत ताटका देह धारिणे । शिलाकठिन विस्तार वालिवक्षो विभेदिने ॥१०॥

नमो मायामृगोन्माथ कारिणे ज्ञान हारिणे । दशस्यंदन दुःखाब्धि शोषिणेऽगस्त्यरूपिणे ॥११॥

अनेकोर्मि समाधूत समुद्र मद हारिणे । मैथिली मानसांभोज भानवे लोक साक्षिणे ॥१२॥

राजेन्द्राय नमस्तुभ्यं जानकी पतये हरे । तारक ब्रह्मणेतुभ्यं नमो राजीव लोचन ॥१३॥

रामाय रामचन्द्राय वरेण्याय सुखात्मने । विश्वामित्र प्रियायेदं नमः खर विदारिणे ॥१४॥

प्रसीद देव देवेश भक्तानामभय प्रद । रक्ष मां करुणासिन्धो रामचन्द्र नमोऽस्तुते ॥१५॥

रक्ष मां वेद वचसा मत्यगोचर राघव । पाहि मां कृपया राम शरणं त्वामुपैम्यहम् ॥१६॥

रघुवीर महामोहम पाकुरु ममाधुना । स्नाने चाचमने भुक्तौ जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिषु ॥१७॥

सर्वावस्थासु सर्वत्र पाहि मां रघुनन्दन । महिमानं तव स्तोतुं कः समर्थो जगत्त्रये ॥१८॥

त्वमेव त्वन्महत्त्वं वै जानासि रघुनन्दन । इति स्तुत्वा वायुपुत्रो रामचन्द्रं घृणानिधिम् ॥१९॥

सीतामप्यभितुष्टाव भक्तियुक्तेन चेतसा । जानकि त्वां नमस्यामि सर्वपाप प्रणाशिनीम् ॥२०॥

दारिद्र्यारण्य संहर्त्रीं भक्तानामिष्ट दायिनीम् । विदेहराजतनयां राघवानन्द कारिणीम् ॥२१॥

भूमेर्दुहितरं विद्यां नमामि प्रकृतिं शिवाम् । पौलस्त्यैश्वर्य्य संहर्त्रीं भक्ताभीष्टां सरस्वतीम् ॥
पतिव्रताधुरीणां त्वां नमामि जनकात्मजाम् । अनुग्रहपरामृद्धिमनघां हरिवल्लभाम् ॥२३॥
आत्मविद्यां त्रयी रूपामुमा रूपां नमाम्यहम् । प्रसादाभिमुखीं लक्ष्मीं क्षीराब्धि तनयां शुभाम् ॥
नमामि चन्द्रभगिनीं सीतां सर्वाङ्ग सुन्दरीम् । नमामि धर्म निलयां करुणां वेदमातरम् ॥२५॥
पद्मालयां पद्महस्तां विष्णुवक्षः स्थलालयाम् । नमामि चन्द्रनिलयां सीतां चन्द्रनिभाननाम् ॥
आह्लादरूपिणीं सिद्धिं शिवां शिवकरीं सतीम् । नमामि विश्वजननीं रामचन्द्रेष्ट वल्लभाम् ॥२७॥

श्रीसूत उवाच—

सीतां सर्वानवद्यांगीं भजामि सततं हृदा । स्तुत्वैवं हनुमान्सीतां रामचन्द्रौ सभक्तिकम् ॥२८॥
आनन्दाश्रु परिक्लिन्न स्तूष्णीमास्त द्विजोत्तमाः । य इदं वायुपुत्रेण कथितं पापनाशनम् ॥
स्तोत्रं श्रीरामचन्द्रस्य सीतायाः पठतेन्वहम् । स नरो महदैश्वर्य्यमश्नुते वाञ्छितं सदा ॥३०॥
अनेक क्षेत्र धान्यानि गाश्चदोग्ध्रीः पयस्विनीः । आयुर्विद्याश्च पुत्रांश्च भार्यामपि मनोरमाम् ॥
एतत्स्तोत्रं सकृद्विप्राः पठन्नाप्नोत्यसंशयम् । एतत्स्तोत्रस्य पाठेन नरकं नैव यास्यति ॥३२॥
ब्रह्महत्यादि पापानि नश्यंति सुमहांत्यपि । सर्वपाप विनिर्मुक्तो देहान्ते मुक्तिमाप्नुयात् ॥३३॥

(स्कांदे-३।४६। श्लो० ३१ से ६० तक)

॥ इति श्रीस्कन्द पुराणोक्तं श्रीसीतारामयुगलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीसीताराम युगल स्तोत्रम् ॥

श्री हनुमान जी ने कहाः—

श्रीरामजी को मैं नमस्कार करता हूं । श्रीहरि सर्व व्यापक विष्णु स्वरूप-आदि देव-पुराण पुरुषोत्तम गदाधारी प्रभु को मैं प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥ पुष्पों के सुकोमल आसन, पुष्पक विमान पर नित्य ही विराजमान, वानरी सेना को प्रसन्न करने वाले आपके श्रीचरण कमलों को बारंबार प्रणाम है ॥ २ ॥ राक्षसेन्द्र रावण का विजय करके जगत् का परम हित करने वाले सहस्र शीश तथा सहस्र चरण वाले-सहस्राक्ष-परम शुद्ध-श्रीराघव-महा विष्णु-भक्तदुःख भंजन हे श्रीसीतापति आपको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ३-४ ॥ दैत्यराज हिरण्यकशिपु का संहार करने वाले हे श्री नृसिंह ! तथा दान्तों पर वसुन्धरा को उठाने वाले हे महावराह ! आपको नमस्कार है ॥ ५ ॥ बलि के यज्ञाभिमान का ध्वंस करने वाले वामन रूप धारी हे श्री त्रिविक्रम ! तथा

महान् मन्दराचल को धारण करने वाले वेदत्रयी की रक्षा करने वाले महा मत्स्य आपको नमस्कार है। क्षत्रियों के दर्पदलन करने वाले हे श्री परशुराम जी आपको नमस्कार है ॥ ६-७ ॥ महादेव के महान् भयङ्कर प्रचण्ड धनुष को तोड़ने वाले राक्षसान्तकारी श्री राघवेन्द्र प्रभु आपको नमस्कार है ॥ ८ ॥ क्षत्रियों के विनाशक महाक्रूर स्वरूप परशुराम को भी भयभीत करने वाले तथा अहल्या के सन्ताप को हरण करने वाले आपको नमस्कार है ॥ ९ ॥ हजार हाथियों के बल वाली ताड़का को मारने वाले तथा वज्र के समान कठोर कार्कश्य वाली के वक्ष स्थल को विदीर्ण करने वाले तथा माया मृग मारीच के उन्माद को बढ़ाकर उसका ज्ञान (प्राण) हरण करने वाले, श्री दशरथ जी के दुःख रूपी समुद्र को अगस्त्य जी के समान शोषण करने वाले आपको नमस्कार है ॥ १०-११ ॥ उत्ताल तरङ्गों से उछलते हुए समुद्र का मद हरण करने वाले तथा श्री मैथिली जू के हृदय कमल को खिलाने वाले लोक साक्षी सूर्य के समान, राज राजेन्द्र, जानकीपति, श्रीहरि को नमस्कार है, हे राजीवलोचन ! तारक ब्रह्म प्रभु श्रीराम ! आपको नमस्कार है ॥ १२-१३ ॥ श्रीरामचन्द्र, वरण करने योग्य, आनन्द स्वरूप, विश्वामित्र के परम प्रिय, खरान्तक श्रीराम के लिये पुनः पुनः नमस्कार है ॥ १४ ॥ हे देव देवेश ! भक्तों को निर्भय करने वाले भयहारी, हे करुणा सागर ! हे श्री रामचन्द्र जी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप मेरी रक्षा करिये ॥ १५ ॥ वेद वाणी भी जिसका पूर्ण वर्णन नहीं कर सकती है ऐसे हे श्री राघवेन्द्र प्रभु श्रीराम ! मैं आपके शरण आया हूँ, आप अपनी कृपा से मेरा रक्षण करिये ॥ १६ ॥ हे रघुवीर ! आप मेरे महामोह का आज इसी समय निवारण कर दीजिये। स्नान करते, जल पीते, भोजन करते समय, जागते सोते, स्वप्नावस्था में, सर्वत्र सभी अवस्था में आप मेरी रक्षा करते रहिये। आपकी महिमा का यथार्थ वर्णन करने के लिये त्रिभुवन में कौन समर्थ हो सकता है ॥ १७-१८ ॥ आपकी महिमा को तो हे श्री रघुनन्दन ! केवल आप ही जान सकतेहैं, इस तरह प्रकाशनिधि श्रीरामचन्द्रजी की स्तुति करके ॥ १९ ॥ पवन कुमार श्रीहनुमान्‌जी श्रीजानकीजी की अत्यन्त भक्ति पूर्ण हृदय से स्तुति करने लगे।

हे श्री जानकी जी मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ २० ॥ दारिद्र्य रूपी वन का संहार करने वाली, भक्तो को अभीष्ट फल प्रदायिनी, विदेह राजकुमारी, श्रीरामजू को आनन्दित करने वाली, भूमि कन्या, हे परम कल्याण स्वरूपिणी, ब्रह्म विद्या ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ २१-२२ ॥ रावण के ऐश्वर्य का संहार करने वाली, भक्तों की अभीष्ट सरस्वती, पतिव्रताओं में धुरन्धर, श्री जनकदुलारी, सदैव अनुग्रह करने वाली, पावन पुष्प ऋद्धि स्वरूपा, श्री हरिवल्लभे हे श्री सीते ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ २३ ॥ आत्म विद्या, वेदत्रयी सार स्वरूप उमा रूपिणी, क्षीरसागर की कन्या लक्ष्मी स्वरूपा, परमशुभ मङ्गलामुखी, सदैव कृपा पूर्ण प्रसन्न वदना मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ २४ ॥ सर्वाङ्ग सुन्दरी, चन्द्रमा की बहिन, श्रीसीताजी को मैं प्रणाम करता हूँ। धर्म का मन्दिर, करुणामयी, वेदमाता मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ २५ ॥ कमलनिवासिनी कमल धारणी, श्रीभगवान् के हृदय में निवास करने वाली, चन्द्रमुखी, चन्द्र

निवासिनी हे श्रीसीते ! मैं आपको प्रणाम करता हूं ॥ २६ ॥ आह्लाद स्वरूपिणी ! सर्व सिद्धि प्रदायिनी, कल्याणी, कल्याण करने वाली, विश्व जननी, महासती हे श्रीराम प्राणवल्लभे ! मैं आपको प्रणाम करता हूं ॥ २७ ॥ सर्वाङ्ग सुन्दरी, परम पावनी श्रीसीताजी का मैं हृदय में सर्वदा भजन करता हूं। इस प्रकार श्री हनुमान जी ने श्रीसीता तथा श्रीराम का युगल प्रभु का भक्ति पूर्वक स्तवन किया ॥ २८ ॥ तथा आनन्द के अश्रु से भींग गये प्रेमातिशय्य होने के कारण आगे कुछ न बोल सके (मौन) चुप हो गये ॥

यह पवनकुमार कथित श्रीराम तथा श्रीसीताजी के स्तोत्र का जो नित्य प्रति पाठ करता है वह मनुष्य महान् ऐश्वर्य प्राप्त करता है, उनके मन के मनोरथ सदा पूर्ण होते रहते हैं ॥ २९-३० ॥ उसको अनेक उपजाऊ खेत-अन्न बहुत दूध देने वाली गायें-अणु विद्या-सुपुत्र-तथा मनोहर साध्वी पत्नी प्राप्त होती है। इसका एकवार प्रतिदिन पाठ करने से भी-हे ब्राह्मणो ! ये सभी वस्तुएं प्राप्त होती है; इसमें कोई संशय नहीं है, इस स्तोत्र का पाठ करने वाला कभी नरक में तो जाता ही नहीं है, उसके ब्रह्म हत्यादिक महान् पाप भी नष्ट हो जाते हैं तथा सर्व पापों से मुक्त होकर देहान्त के पश्चात् मुक्ति प्राप्त करता है।

"इस प्रकार श्री पवन कुमार प्रोक्त स्कन्द पुराण का यह श्री सीताराम युगल स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

—स्कन्दे-३। ४६ श्लोक ३९ से ६०।

—:❀:—

॥ श्रीसीतासर्वस्वस्तोत्रम् ॥

सीता मे परमं ज्ञानं, सीता मे परमं तपः। सीता मे परमं ध्यानं, सीता मे परमं धनम् ॥ १ ॥
सीता मे परमाप्रीतिः, सीता जाप्यं परं मम। सीता मे परमं तीर्थं, सीता मे परमं धनम् ॥२॥
सीता मे परमा पूजा, सीता मे दानदक्षिणा। सीता मे परमा दीक्षा, सीता मे परमं धनम् ॥३॥
सीता मे परमा श्रद्धा, सीता मे परमा गतिः। सीता मे परमा पूज्या, सीता परमं धनम् ॥४॥
सीता मे परमा विद्या, सीता मे जननी परा। सीता मे परमा भक्तिः सीता मे परमंधनम् ॥५॥
सीता सीताहि सर्वत्र पश्यामि च वदामि च। सीता मे दिव्य सर्वस्वं सीता मे परमं धनम् ॥६॥
सीता वेदे पुराणे च, रामायणे च भारते। सर्वत्र सीता सीता हि गीयते चानुमीयते ॥७॥
सीतां विना न पश्यामि सच्चिदानन्द राघवम्। सीता मे रमते चित्ते, सीतारामात्मकं जगत्॥८॥
श्रीसीता सर्वस्व स्तोत्रं यः पठेच्छृणुयादपि। इहलोके परत्रे च, स सुखी भाग्यवान् भवेत् ॥९॥
श्रीसीतारामीय श्रीमथुरादासनिर्मितम्। श्रीसीतासर्वस्वस्तोत्रं पाठान्निष्ठाप्रदं भवेत् ॥१०॥

॥ श्रीसीताराम–विभूतयः ॥

सेयं भावस्थितिः साक्षाद्भिन्नाभिन्नतया स्थिता । सीताशक्तिरचिन्त्येयं त्वन्मूर्तिरचला परा॥
सीतोन्मना भवान् रामः समनेयं भवान् शिवः । विद्येयं मातृका शुद्धा त्वं देवः सदाशिवः ॥
ईश्वरस्त्वमविद्येयं मायेयं त्वं च त्र्यम्बकः । सीता रमा भवान्विष्णुः सीता गौरीभवाञ्छिवः॥
सीता स्वयं हि सावित्री भवान्ब्रह्मा चतुर्मुखः । सीता शची भवानिन्द्रः सीता स्वाहानलोभवाद्॥
सीता तु तामसी देवी निरृ्ऋतिस्त्वं रघूत्तमः । सीता तु भार्गवीदेवी वरुणस्त्वं जगत्पतिः ॥
सीता सदा गतिर्देवी जगत्प्राणः स्वयंविभो । सीता हि सर्वसम्पत्तिः कुवेरस्त्वं सदोदितः ॥
ऐश्वर्यं जानकी साक्षादीशानस्त्वं महेश्वरः । सीता तु रोहिणीदेवी चन्द्रस्त्वं लोकसौख्यदः ॥
सीता संध्या भवान् सूर्यः सीता रात्रिर्दिवाभवान् । सीती च दक्षिणादेवी यज्ञमूर्तिभवान्विभो॥
सीतामुक्ति भंगवती भोक्ता त्वं पुरुषोत्तमः । सीतेयं मुक्तिरचला भोक्ता त्वमकुतोभयः ॥
सीता शक्ति जंगद्धात्री शक्तिमांस्त्वं महेश्वरः । सीतादेवी महाकाली महाकालस्त्वमेव हि ॥
किमत्र बहुनोक्तेन राम त्वं ब्रह्म तत्परम् । त्वद् विभूतिरियं सीता विश्वाकारा विजृम्भते ॥
स्त्रीचिन्हं सर्वलोकेषु यत्तत् सर्वं हि जानकी । पुंनाम लाञ्छितंवस्तु यत्तत सर्वं भवान्विभो॥
सर्वत्र सर्वदेहेषु सीता षट्चक्र धारिणी । तथा त्वमपि चक्रान्तामूर्ति विश्वभासकः ॥

इति श्रीनिवार्णखण्डे स्कंदपुराणोक्ताः "श्रीरामगीतायां प्रोक्ताः "श्रीसीतारामविभूतयः सम्पूर्णाः"

॥ श्रीसीताराम विभूतयः ॥

(स्कन्द पुराणोक्त श्रीरामगीतान्तर्गता)

ये श्रीसीताजी साक्षात् महाभाव स्वरूपा हैं । आपसे भिन्न दीखती हुई भी सदैव अभिन्न हैं, ये श्रीसीता अचिन्त्य शक्ति हैं, तथा आपकी अविचल परागति हैं ॥ ५६ ॥

श्रीसीता रमा हैं तो आप विष्णु हैं; सीता गौरी हैं तो आप शिव हैं । श्रीसीता स्वयं सावित्री हैं तो आप चतुर्मुख ब्रह्मा हैं ॥ ६० ॥ सीता शची हैं तो आप इन्द्र हैं, सीता स्वाहा हैं तो आप अग्नि हैं । सीता संहारिणी देवी हैं तो आप यमस्वरूप धारी हैं ॥ ६१ ॥ सीता तामसी देवी हैं तो हे रघूत्तम ! आप निऋ्रति हैं, सीता भार्गवी देवी हैं तो हे जगत्पति ! आप वरुण हैं ॥ ६२ ॥ सीता देवी सदैव सबकी गतिरूपा हैं तो हे विभो ! आप स्वयं प्राण हैं ।

सीता ही सर्व सम्पत्ति हैं, तो आप सदैव प्रकाशित कुबेर हैं ॥ ६३ ॥ श्री जानकी जी ऐश्वर्य हैं तो आप साक्षात् ईशान महेश्वर हैं। सीता रोहिणी देवी हैं तो आप सकल लोक सुखकारी चन्द्रमा हैं ॥ ६४ ॥ सीता सन्ध्या हैं तो आप सूर्य हैं, सीता रात्रि हैं तो आप दिन हैं। सीता दक्षिणा देवी हैं तो हे विभो ! आप यज्ञमूर्ति है ॥ ६५ ॥ भगवती सीता भुक्ति हैं, तो आप पूर्ण पुरुषोत्तम भोक्ता हैं। सीता अविचल मुक्ति हैं, तो आप निर्भय पद के भोक्ता हैं ॥ ६६ ॥ सीता जगज्जननी पराशक्ति हैं तो आप शक्तिमान् महेश्वर हैं। सीता देवी महाकाली हैं तो आप महाकालेश्वर हैं ॥ ६७ ॥ इस प्रकार बहुत विस्तार करके क्या कहें आप ही परात्पर ब्रह्म हैं। आपकी ये महान् विभूति विश्व रूपा बनकर श्रीसीताजी प्रकाशित हो रही हैं ॥ ६८ ॥ संसार में जो भी स्त्री वाचक हैं वह सब श्रीजानकीजी का स्वरूप है, तथा जो भी पुरुष वाचक वस्तु है वह सब हे प्रभो ! आप ही आप हैं ॥ ६९ ॥

॥ इस प्रकार स्कन्द पुराणोक्त श्रीरामगीतान्तर्गत श्रीसीतारामविभूति वर्णन सम्पूर्ण हुआ ॥

श्री सीता सर्वेश्वरी स्तोत्राम्

करुणारूपिणी साक्षात् भक्तानुग्रहतत्परा। कल्पवल्ली प्रपन्नानां सीता सर्वेश्वरी मम ॥१॥
निर्भयोऽहं चिदानन्दे मग्नोऽहं शुचि सर्वदा। श्रीसीताचरणाम्भोजे चित्तं मे रमते सदा ॥२॥
सीतेति मधुरांवाणीं वदजिह्वेऽति निर्मलाम्। प्राप्य श्रीरामसन्तुष्टिं सर्वत्र सुखिनी भव ॥३॥
धन्योऽहंकृत कृत्योऽहं रक्षितोऽहं च सीतया। सीता सम्बन्ध ज्ञानाच्च मिथिलाभाव भूषितः॥४॥
सीतामूर्ति सदाध्यायेत् सीतामन्त्रं सदाजपेत्। सीता कृपान्वितं पश्येत् सीतारामात्मकं जगत्॥५॥
परित्राता कृपापूर्णा आर्तत्राण परायणा। सर्वदा सर्वकार्येषु सीता सर्वेश्वरी मम ॥६॥
तवैवास्मि तवैवास्मि सीते वात्सल्यसागरे। धनं मे प्राणसर्वस्वं त्वदीय चरणाम्बुजम् ॥७॥
सीता सर्वेश्वरीस्तोत्रं सीता प्रेमप्रवर्द्धकम्। श्रीमद्व्रजाङ्ग दासेन रचितं दिव्यधामदम् ॥८॥
पूजाकाले पठेद्यस्तु स्वापकाले च जागरे। सदा कल्याणदं भूयात् सर्वाभीष्टप्रदायकम् ॥९॥

—(:❀:)—

श्रीयुगलस्तोत्रम्

(पद्मपुराणीयम्)

अभिषिक्तस्ततो रामो वशिष्ठाद्यैर्महर्षिभिः । शुशुभे सीतया देव्या नारायण इव श्रिया ॥२१॥
अतिमर्त्यतयाभीत उपासितुं पदाम्बुजम् । दृष्ट्वा तुष्टाव हृष्टात्मा शङ्करो द्रष्टुमागतः ॥२२॥
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा सानन्दो गद्गदाकुलः । हर्षयन्सकलान्देवान् मुनीनपि च वानरान् ॥२३॥

श्रीमहादेव उवाच—

नमो मूलप्रकृतये नित्याय परमात्मने । सच्चिदानन्दरूपाय विश्वरूपाय वेधसे ॥२४॥
नमो निरन्तरानन्द कन्दमूलाय विष्णवे । जगत्त्रय कृतानन्दमूर्तये दिव्यमूर्तये ॥२५॥
नमो ब्रह्मेन्द्रपूज्याय शङ्कराभयदाय च । नमो विष्णुस्वरूपाय सर्वरूप नमो नमः ॥२६॥
उद्भव स्थिति संहारकारिणे त्रिगुणात्मने । नमस्ते निर्गतोपाधि स्वरूपाय महात्मने ॥२७॥
अनया विद्यया देव्या सीतयोपाधि कारिणे । नमः पुं—प्रकृतिभ्यां च युवाभ्यां जगतां कृते ॥
जगन्माता पितृभ्यां च जनन्यै राघवाय च । नमः प्रपञ्चरूपिण्यै निष्प्रपञ्चस्वरूपिणे ॥२९॥
नमो ध्यानस्वरूपिण्यै योगिध्येयात्मरूपिणे । परिणामापरिणामः रिक्ताभ्यां च नमो नमः ॥३०॥
कूटस्थबीजरूपाभ्यां सीतायै राघवाय च । सीतालक्ष्मी भवान्विष्णुः सीता गौरी भवान्शिवः ॥
सीता स्वयं हि सावित्री भवान्ब्रह्मा चतुर्मुखः । सीता शची भवान्शक्रः सीता स्वाहाऽनलोभवान् ॥
सीता संहारिणी देवी यमरूपधरो भवान् । सीता हि सर्वसम्पत्तिः कुबेरस्त्वं रघूत्तमः ॥३३॥
सीतादेवी च रुद्राणी भवान् रुद्रो महाबलः । सीता तु रोहिणी देवी चन्द्रस्त्वं सर्वसौख्यदः ॥
सीता संज्ञा भवान्सूर्यः सीतारात्रिर्दिवा भवान् । सीतादेवी महाकाली महाकालो भवान्सदा ॥
स्त्रीलिङ्गेषु त्रिलोकेषु यत्सर्वं हि जानकी । पुंनाम लाञ्छितं यत्तु तत्सर्वं हि भवान्प्रभो ॥३६॥
सर्वत्र सा हि देवेश सीता सर्वत्रधारिणी । तदा त्वमपि च त्रातुं त्वच्छक्ति विश्वरूपिणी ॥३७॥
तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं युवाभ्यां परिचिह्नितम् । चिह्नितं शिवशक्तिभ्यां चरितं तव शान्तिदम् ॥
आवां राम जगत्पूज्यौ मम पूज्यौ सदा युवाम् । त्वन्नामजापिनी गौरी त्वन्मन्त्रजपवानहम् ॥
मुमूर्षोर्मणिकर्ण्यां तु अर्द्धोदकनिवासिनाम् । अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकं ब्रह्मदायकम् ॥४०॥
[illegible] । एवं ब्रह्मामि निश्चितम् । त्वन्मायामोहिता सर्वे न त्वां जानन्तितत्त्वतः ॥

ईश्वर उवाच—

इत्युक्तः शंभुना रामः प्रसादप्रवणोऽभवत् । दिव्यरूपधरः श्रीमानद्भुताद्भुतदर्शनः ॥४२॥
तथा ते रूपमालोक्य नरवानरदेवताः । न प्राप्नुमभिशक्तास्ते तेजसंमहदद्भुतम् ॥४३॥
भयाद्वै त्रिदशश्रेष्ठाः प्रणेमुश्चाति भक्तितः । भीता विज्ञाय रामोऽपि नरवानरदेवताः ॥४४॥
माया मानुषतां प्राप्य स देवानब्रवीत्पुनः ।

श्रीरामचन्द्र उवाच—

शृणुध्वं देवता यो मां प्रत्यहं संस्तुविष्यति ॥४५॥
स्तवेन शंभुनोक्तेन देवतुल्यो भवेन्नरः । विमुक्तः सर्वपापेभ्यो मत्स्वरूपं समश्नुते ॥४६॥
रणे जयमवाप्नोति न क्वापि प्रतिहन्यते । भूतवेताल कृत्यादिग्रहै श्चापि न बाध्यते ॥४७॥
अपुत्रो लभते पुत्रं पतिं विन्दति कन्यका । दरिद्रश्श्रियमाप्नोति सत्यवान्शीलवान्भवेत् ॥४८॥
आत्मतुल्यबलः श्रीमान् जायतेनात्रसंशयः । निर्विघ्नं सर्वकामेषु सर्वारम्भेषु वै नृणाम् ॥४९॥
यं यं कामयते मर्त्यः सुदुर्लभमनोरथम् । षण्मासे सिद्धिमाप्नोति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥५०॥
यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु यत्फलम् । तत्फलं कोटि गुणितं स्तवेनानेन लभ्यते ॥५१॥

ईश्वर उवाच—

इत्युक्त्वा रामचन्द्रोऽसौ विससर्ज महेश्वरम् । ब्रह्मादित्रिदशान्सर्वान् विससर्ज समागतान् ॥५२॥
अर्चिता मानवाः सर्वे नरवानरदेवताः । विसृष्टा रामचन्द्रेण प्रीत्या परमया युता ॥५३॥

इत्थं विसृष्टा खलु ते च सर्वे सुखं तदा जग्मुरतीव हृष्टाः ।
परं पठन्तं स्तवमीश्वरोक्तं रामं स्मरन्तो वर विश्वरूपम् ॥५४॥

इति श्रीपद्मपुराणे पञ्चाशतसाहस्र्यां संहितायामुत्तरखण्डे उमा महेश्वर संवादे विश्वरूप दर्शनं नाम त्रिचत्वारिंशदधिक द्विशततमोऽध्यायः ॥ २४३ ॥ ❀

❀ स्कन्दपुराणोक्त श्रीरामगीता के प्रथमाध्याय में टीक यही विस्तार पूर्वक कथित है तथा उसमें जो श्रीशिवकृतस्तोत्र है उसके बहुत से श्लोक तो अक्षरशः एक ही हैं जो "श्रीसीता-रामविभूतयः" नाम से इस स्तोत्र के पहले दिया गया है वह अर्थ सहित है । इस स्तोत्र के श्लोक सरल हैं तथा आधे श्लोक के अर्थ पूर्वोक्त प्रकरण में आ गये हैं अतः यह मूलमात्र ही दिया गया है । सुधीर पाठक स्वयं दूसरों को समझाने का महान् पुण्यफल प्राप्त करेंगे । एक श्री हनुमत्प्रोक्त "श्रीसीताराम युगलस्तोत्र स्कंदपुराणीय" है वह भी सटीक पृथक् दिया गया है ।

Scanned by CamScanner

॥ अनन्तरूपधारिण्यै श्रीसीतायै नमोनमः ॥

श्रीसीता-सहस्रनाम-स्तोत्रम्

श्रीलक्ष्मण उवाच—

जातवेद नमस्तुभ्यं नमस्ते हव्यवाहन । श्रोतुमिच्छामि सीतायाः स्तोत्रंनामसहस्रकम् ॥१॥

श्रीअग्निरुवाच—

सीता परात्पराशक्तिः वेदशास्त्रेऽतिविश्रुता । श्रीरामाह्लादिनीश्रेष्ठा ममपूज्या विशेषतः ॥२॥

शृणु लक्ष्मण प्रवक्ष्यामि तस्याः नामसहस्रकम् । पठनाच्छ्रवणात्सद्यः सर्वाघौघनिवारकम् ॥३॥

ॐ सीता-जनकजा-रामवल्लभा-मिथिलेशजा । मैथिली—रामदयिता-सुनेमाङ्क विभूषणा ॥४॥❀

मणिमण्डितमञ्जीरा मणिमण्डपिकास्थितिः । मणिद्वीपव्रती मञ्जुमणिप्रवर भूषिता ॥५॥

सुवर्ण कलशोद्भूता मुनिकन्या कुमारिका । कर्पूरागरुगन्धाढ्या कदम्बवनवासिनी ॥६॥

काञ्चनाद्रिकृतावासा काञ्चनागारमध्यगा । भक्तिकल्पलता कान्ता कमनीया-कृति-र्धृतिः ॥

दशास्यतनया ताम्रा लङ्कातङ्क प्रदायिनी । राक्षसेश्वर निर्मुक्ता मुक्ताफल विलासिनी ॥८॥

पाथोधिवसति वीणावाणी पाथोधिनन्दिनी । पूर्णानन्दमयी पूर्णा परमार्थ प्रवर्द्धिनी ॥९॥

पाटीरपङ्कलिप्ताङ्गी सङ्गीतागमवादिनी । गौरी गुणवती गीता गीर्वाणगणसेविता ॥१०॥

पुण्या पुण्यप्रदा श्रीदा पुण्यारण्य परात्परा । वाल्मीकि बालिका वन्द्या वनदेवी विनोदिनी ॥

बृन्दारक गणाकीर्णा बन्धमोक्ष विधायिनी । विश्वेश्वरी विशालाक्षी विश्वाराध्यपदाम्बुजा ॥

वैराग्यसरसी शान्ता सरसीरुहलोचना । शुभप्रदा शुभा शोभा शोभना शुभमार्गदा ॥१३॥

शोभिताऽशेष जगती शरण्या शोकहारिणी । भूमिभृर्भृतजननी भवभीति निवारिणी ॥१४॥

भवाब्धि तारिका तारा भवानी शङ्करार्चिता । विभूति भूतिदा भूतधात्री भूदेव पूजिता ॥१५॥

मैथिली मिथिलानाथनन्दिनी मधुरस्वना । मत्त मातङ्गगमनो गम्भीरौदार्यशालिनी ॥१६॥

कलिकल्मष कूटघ्नी कल्याणी कल्पवल्लरी । काश्मीररागरक्ताङ्गी रक्तमाल्याम्बरप्रिया ॥१७॥

वैदेही वेदविद् वेद्या ब्रह्मविद्या विदेहजा । वेद वेदान्ततत्त्वज्ञा तत्त्वज्ञानार्थ दर्शिनी ॥१८॥

❀ श्रीरामवल्लभाकुञ्ज श्रीजानकीघाट श्रीअयोध्याजी से प्राप्त इस सहस्रनाम की प्रति का प्रथम पत्रा नष्ट हो जाने से प्रारम्भिक चार श्लोक उसमें नहीं है । ये श्लोक अन्यत्र से प्राप्त किये गये हैं ।

संसार तापशमनी दमनी दीर्घ दुर्मतेः । दारिद्र्यदहनी दुर्गा दानवेन्द्र विनाशिनी ॥१९॥
दौर्जात्य दोष दलनी दौर्भाग्य भयभञ्जिनी । सौभाग्यसुन्दरी सान्द्रानन्द निस्पन्द निर्झरी ॥
जन्मदा विश्वजननी जानकी जनकात्मजा । जागरूका जगज्जाला विशालज्वालमालिनी ॥
निर्जरी तर्ज्वरज्ज्वाला हन्त्री तन्त्री स्वनोर्ज्जिता । जातुधानजन ज्यान जीवातुर्व्वनार्चिता ॥
खञ्जरीटेक्षणा मञ्जु नीलाम्बुज कराम्बुजा । चारु चम्पकदाम श्रीनिष्काम मधुराकृतिः ॥
भ्रू भंगजितकोदण्ड हरकोदण्डखण्डिनी । राजमण्डल तेजोघ्नी त्रिलोकी शोकहारिणी ॥
जयमालाश्रितकरा लावण्यसरसी सुदृक् । श्रीरामप्रेयसी रामवामाङ्ग सुखवासिनी ॥२५॥
सान्द्रानन्दमयी द्रष्टा सन्तुष्टा सर्वरक्षिणी । आर्या निस्सीम सौन्दर्या मर्यादारूप सम्पदाम् ॥
सुकेशी सुमुखी सुभ्रूः सुतन्वी सुगुणी सुधीः । सुस्निग्धा सुनया सुश्रीः सुकुमारी सुमध्यमा॥
जनकाङ्गण दीप्तार्चिः कौतुकागार चन्द्रिका । पद्माक्षी सुस्मिता राममुखचन्द्र चकोरिका ॥
शतानन्द कृतानन्दा प्रणतानन्द दोहिनी । जनकाह्लाददलनी निस्सीमानन्द कन्दिनी ॥
अरुन्धती कृतारूपा वशिष्ठेष्ट विधायिनी । विश्वामित्रोत्सवकरी सुशीला सुरसंस्तुता ॥
उर्मिलावत्सलाऽखण्ड वैभवा माण्डवी प्रिया । श्रुतिकीर्ति हिता हंसी दान्ता दशरथस्नुषा ॥
मिथिलानगरी भूषा रत्नगर्भा समुद्भवा । राघवेन्द्र मुखाम्भोजभ्रमरी भ्रमहारिणी ॥३२॥
भार्गवोद्यम दर्पघ्नी रघुवंश जयैषिणी । चराचर जगन्माता जय श्रीयन्त्रपूजिता ॥३३॥
जयन्ती योगसारज्ञा फलदा योगिनीश्वरी । पंभारिसेविता जामदग्न्यजित् ज्यायसी जया ॥
जन्ममृत्युजराहानि र्जातुधानान्त कारिणी । सरयूदर्शनोन्निद्रा विनिद्रा कोशलोन्मुखी ॥
अयोध्यामङ्गलकरी कौशल्यानन्ददायिनी । सुमित्राह्लादकर्त्री च कैकेयी कीर्ति कारिका ॥
सार्द्धसप्तशती राज्ञी प्राण पञ्जरिका स्वभूः । सरोजदल दीर्घाक्षी क्षीणमध्या महोन्नता ॥
क्षेमंकरी क्षमा क्षान्ता क्षामोदारवती रुचिः । चन्द्रिका चारुचरिता स्मितज्योति विजृम्भिणी॥
दयालु दैत्यदावाग्नि दम्भ लोभ मदापहा । साकेतवासिनी शीला सिन्धुजन्मा तमोपहा ॥
लक्ष्मणाराध्य चरणा भरतप्रणता प्रभा । शत्रुघ्न वन्दितपदा स्मेरास्या भक्तवत्सला ॥
श्वश्रू सु श्रुषिका लोकत्रयगीता गुणाकरी । जनिता पूतचरिता रोचनाम्बु प्रचर्चिता ॥४१॥
परामृ यंज्ञसुग् यज्ञकर्ममार्ग प्रवर्तिनी । मन्थराज्ञात विभवा भवरोग महौषधिः ॥४२॥
राममान्थर्यंहृत देवकार्यं कृत् प्रार्थिता बुधैः । वनवासरता बाला निस्पृहा राज्यसम्पदि ॥
कैकेयीज्याकरी क्रीडानिर्जितारति मण्डला । गुर्वाज्ञाकरी गौरी गुणज्ञा गीत वैभवा ४३ ।

सरयू स्नानरसिका सर्वदेव नमस्कृता । वशिष्ठविदितप्रज्ञा प्रज्ञाविज्ञान वारिधिः ॥४५॥
पक्ति स्यन्दन सर्वस्वा अयोध्या नेत्र पुत्रिका । कौशलेन्द्राशयज्ञा च शालिनी सर्वतोमुखी ॥४६॥
देव मानव ह्यालम्ब बोधशक्तिश्चिदात्मिका । चैतन्यरूपिणी चेताश्चमत्कार सुखावहा ॥४७॥
दक्षिणाशोन्मुखी त्यक्तराज्य संभारनिर्वृत्तिः । कैवर्तकीर्तिदा तीर्णगङ्गा कल्लोलसम्भृतिः ॥४८॥
गृहीत गुह सेवार्हा महार्हा हेमजिच्छबिः । शालीन शालिनी शीला सन्दोह स्यन्दिनी विभुः ॥
भरद्वाजाश्रमापन्ना भरद्वाज प्रपूजिता । प्राचेतस तपः प्रीता निर्णीतार्थ प्रकाशिनी ॥५०॥
वाल्मीकिवत्सला वर्ण्या वृत्तिसन्नतमानसा ! नववसनाऽमला हृद्या शिरीष कुसुमोपमा ॥५१॥
ग्रामिणी जननी ग्रामा चकोरी चन्द्रिकाद्युतिः । चित्रकूट कृतावासा चित्रकूटाधिदेवता ॥५२॥
फलमूलाशना क्षेमसाधिका दुःखबाधिका । दुर्दैवलोपिनी भाग्यदायिनी भूरिभाग्यमान् ॥५३॥
भवापहारिका शान्ता तारक ब्रह्म वादिनी । प्रणतार्तिहरी रामप्रेमवल्ली प्रतोषिणी ॥५४॥
नामध्येया धैर्यकरी ध्यानगम्या गभीरधीः । धातुवाद विधानज्ञा धार्मिकाराधिताँध्रिका ॥५५॥
धूर्जटी ध्येय पादाब्जा देवदानव वन्दिता । वैराग्योल्लासिनी विश्वतैजस प्राज्ञभासिनी ॥५६॥
स्थूल सूक्ष्म निदानज्ञा जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिभूः । तुरीयाभक्त भावज्ञा भ्रान्ति विस्मय हारिणी ॥
अकारादि हकारान्ता मातृकारूप धारिणी । मकार मूर्तिरापूर्णा प्रणवान्ता विलासिनी ॥५८॥
मन्त्र यन्त्रालया माला मन्त्रमूर्ति महोज्वला । आवैकुण्ठेशमाकीटमनुस्यूता चिदात्मिका ॥६०॥
पतिव्रत पराराध्या शिरोमणि रत्नीहिका । कारुण्यपूर्णदृक् भक्तान् भावसिद्धि स्वसिद्धिदा ॥
आचारचंचुरा चारुचरिता चन्द्रिकोज्ज्वला । चिदानन्दमयी मृग्या सुकर्मा परमा रमा ॥६२॥
त्रिकूत्रयी विनिर्मुक्ता दशमी दशदिक् प्रभुः । प्रपञ्चसाक्षिणी देवी चक्षुरादि प्रकाशिनी ॥६३॥
दैवज्ञा दुर्दशाहन्त्री दुर्बलानां बलप्रदा । शारदादि स्तुता शान्ता नारदादिभिरीडिता ॥६४॥
पादाङ्कपूत विन्ध्यादि स्नानपूत जलाशयाः । सुमन्त्र शोकशमनी पङ्क्तिस्यन्दन शोचिका ॥
भरतास्वासिका भूरिभाग्य संभारभूषिता । जयन्तवायसत्रस्ता राघवेन्द्रहृतश्रमा ॥६६॥
गायत्रीगर्भसम्भूता त्रयीमूर्ति महातपा । त्रैलोक्यरक्षणमयी ऋष्याश्रम, गतश्रमा ॥६७॥
अनसूया कृतातिथ्या याथातथ्य स्वरूपिणी । अनसूयाप्रवसनालंकृतिस्सगुणोदया ॥६८॥
सुखिनी सुखसन्दोहा कल्पद्रुम तरङ्गिणी । विराधवधसंदृष्टा परपुष्टा निनादिनी ॥६९॥
शरभङ्गार्चिताऽचिन्त्या महिमा महतां बुधैः । शरभङ्गमहायोगी ब्रह्मलोक विधायिनी ॥७०॥
सुतीक्ष्णाराधिताऽराध्या पादाराधिद्वयी तनुः । विवेकी ब्रह्मसम्पन्ना मैत्रावारुणि वन्दिता ॥७१॥

लोपामुद्राकृतातिथ्या ज्ञानमुद्रा सुदर्शना । मुदञ्चिता विनीताङ्गी दीर्घापाङ्गी दयावती ॥७२॥
पथ्या पथ्यप्रदा तथ्या मिथ्यावचन वैरिणी । सुनीति निपुणा नीतिज्ञा नीति निर्मला ॥७३॥
उद्दण्डारातिदमनी दण्डकारण्य चारिणी । नीतिप्रदा नीतिगम्या नरीति निर्मलाशया ॥७४॥
दण्डनीति दुराशाघ्नी दुर्बोधध्वान्त हारिणी । रामाग्रेसरणी रामा पृष्ठगाराम पार्श्वगा ॥७५॥
रामरूपसुधास्वादा रामसर्वस्वरूपिणी । निष्कल्मषा निराबाधा सदाचार सदाश्रिता ॥७६॥
दण्डकवन वीथिज्ञा राक्षसौघ विनाशिनी । कृतपञ्चवटी वासा नासामुक्तफलोज्ज्वला ॥७७॥
सौवर्ण मृगमर्मज्ञा मारी मारीच दुर्मतेः । दौरात्म्य दोषदलनी सौजन्यामृत वर्षिणी ॥७८॥
कृन्त शूर्पनखीनाशा मुनित्रासा पहारिणी । त्रितापशमनी त्रेधा त्रिदशार्चित पादुका ॥७९॥
जनतापोपशमनी रमणी परमेश्वरी । कमनीय कलाकान्ता सत्कृतिः सदलंकृतिः ॥८०॥
निःकिञ्चन महासंपदाप्तकामा कुमारिका । कुबेरसेविता रङ्कातङ्क हृच्छङ्करार्चिता ॥८१॥
दिगन्तव्यापि सुयशा लङ्काशङ्क विधायिनी । मायाकृष्ट दशग्रीवा सुग्रीवाराधितांघ्रिका ॥८२॥
राक्षसभ्रमता भ्रान्ता भ्रमदोष निवारिणी । त्रैलोक्य विभ्रमकरी रक्षोभित्तु प्रतारिणी ॥८३॥
दशकण्ठ रथारूढा गूढ़माया विमोहिनी । वैश्वानरशिखाशुद्धा ज्वालमालामयी स्वराट् ॥८४॥
रोचिष् रोचिष्मतां रोचिः ज्योतिषां ज्योतिरम्बिका । राक्षसक्षयकृत् साक्षात् रामवामाङ्गसंस्थिता॥
अविनाशि सुखावस्था निगमागम तत्त्वविद् । कबन्धवधजीवातु शर्वरी प्रीति पालिका ॥८६॥
रामरूप सुखाम्भोधिशफरी रामरूपिणी । नित्य संयोगिनी नित्या विप्रलम्भा विसंकुला ॥८७॥
रसावन्नगुणा रस्या रसिका रसमञ्जरी । अकारादि क्षकारान्ता मातृकारूप धारिणी ॥८८॥
महाविद्या महामाया महामाधुर्य्य मण्डिता । महाश्चर्यमयी देवी पार्वत्यादि कृतानतिः ॥८९॥
निर्विरोधा विरोधघ्नी अघौघाम्बुधि कुम्भभूः । कर्पूरक्षादे शुभ्राङ्गी विभ्राजन्नरप चन्द्रिका ॥
स्मितनिर्जित कुन्देन्दु विन्दुनाद कलात्मिका । बिन्दुनाद कलातीता सुर्यासुर्याष्टक स्थिता ॥
गृद्धेन्द्र दर्शनाद् यात जीवदशरथोत्सवा । वसुसुता स्वधा स्वाहा निमिस्नूना सुधर्मिणी ॥९२॥
परास्थानगता स्फीता पश्यन्ती मध्यमास्थितिः । वैखरी प्रखराभिज्ञा विज्ञानामृत वर्षिणी ॥९३॥
पञ्चाशद्वर्णिका वर्णा ज्ञानविज्ञानदीपिका । शृङ्गाररसरसी वीचि विक्षिप्तामृत सागरा ॥९४॥
वाणीजित सुधासारा सदाचारानु मोदिनी । रसस्रोतस्वनी वीचिः समीचीनोपचारिणी ॥९५॥
करुणा करुणाख्याता वरुणालय बन्धकृत् । तरुणार्क प्रतापार्चि दुर्द्धर्षा हर्षपूरिता ॥९६॥
मृगीविलोचना राममृगिता मृगवत्सला । त्रिदोषघ्नी त्रयीमूर्ति लोकत्रय महेश्वरी ॥९७॥

नारद प्रेरिका राम हनुमन् मिलनप्रदा । सुग्रीवमैत्री संधात्री बालिप्राणापकर्षिणी ॥
तारासन्तापशमनी सुग्रीवैश्वर्य दायिनी । किष्किन्धा पालिका भक्तकल्पवल्ली कृपावती ॥
काश्मीरकान्तिसन्निद्रा निद्रादोषनिवारिणी । जाग्रती जागरावस्था दशकण्ठवनेस्थिता ॥
अशोकवनिको द्योताकारिका शोकहारिणी । सिद्धचारण गन्धर्व गीतकीर्तिरघापहा ॥
मरभाराधिता रम्भागर्भोरु स्त्रिजटासखी । रावणान्तकरी रुष्टा तुष्टा त्रैलोक्य रक्षिणी ॥
नक्तंचरचमूचक्रवर्धिनी सर्व गर्वहृत । राक्षसीरोषिता रक्षोगणगर्व मदापहा ॥१०३॥
गुरूपदिष्ट सन्मार्गा दुर्गा स्वर्गापवर्गदा । देशकाला परिच्छिन्ना तेजोराशिर्निरामया ॥
निर्मला निगमाध्यासा निरहङ्कृत रग्रिमा । निर्मोहा मोहमथनी मोहध्वान्तापहारिणी ॥
स्वाराज्य साधिका सान्द्रानन्द संदोहवर्षिणी । निमेषसंज्ञिका संज्ञा त्रुटिरूपा लवात्मिका ॥
पलाख्या पूर्णघटिका द्विसंध्या रजनी दिवा । पक्षमासर्तु वर्षाख्या हर्षोत्फुल्लाबुजेक्षणा ॥
युग कल्पाक्षयाकल्पा महाकालस्वरूपिणी । बहिरन्तः परिव्याप्ता व्याप्यव्यापकरूपिणी ॥
रामणीयकसार श्री शारदेन्दु मुखच्छविः । लावण्यसिन्धुरुन्मत्तोद्दाम सिन्दुरगामिनी ॥
अशोकमूल संस्थाना हनुमत्प्रणता प्रभा । श्रुतराघववृत्तान्ता सन्तान तरु मञ्जरी ॥
राममुद्रा सहानन्दा त्यक्तोच्छ्वासा विशालदृक् । हनुमद्रक्षिका लङ्कादाहिकाक्षवध प्रिया ॥
अशोकवाटिकासीना राक्षसीकम्पकारिका । लङ्का प्राणानलापानपीता कालाहिरूपिणी ॥
गुणातीता गुणवती गीता गान्धर्व वेदवित् । निर्गुणा गुणसम्पन्ना निस्त्रैगुण्या गुणालया ॥
गीर्वाणानन्द निस्यन्दा गीर्वाणप्राणधारिणी । गुणोद्धारा गुणाधीशा गणज्ञा गुणगौरवा ॥
विभीषणेष्टदा रक्षोगणमायातमो रवि- । त्रिकूटाचल चूडाग्रखण्डिनी विद्युदुद्भया ॥११५॥
त्रिजटा सेविता श्यामा राक्षसीगुण गुम्फिता । मितवाङ् मितभुङ् भव्याऽमितस्नेहवती स्मिता ॥
ध्याना सरामनिर्धूता विरहार्तिस्त्रपामयी । रामविश्लेषभीभीता भयदाऽभीष्टदायिनी ॥११७ ॥
अणिकाद्यष्ट सिद्धीशा दिगीशांशावतारिणी । भुक्ति मुक्तिप्रदा सेव्या भक्तिशक्ति प्रदायिनी ॥
वेदानुकूलातर्क्याभा तर्कविद्या विशारदा । वेदान्त स्वान्तविद् वेद्या मीमांसामांसलाशया ॥
मीमांसाकर्मनिरता विरता विरतारतिः । राघवेन्द्र कृपाकांक्षा निराकांक्षान्य वस्तुनि ॥१२०॥
ध्यातोद्गीत कथोदर्का वाञ्छाधिक फलप्रदा । रामरावणवैरज्ञा संग्रामरसवर्धिनी ॥१२१॥
दशग्रीववधोद्रिक्ता कुम्भकर्ण प्रणाशिनी । इन्द्रजित कार्मुकव्यूह प्रत्यूहोद्दाम हुंकृतिः ॥१२२॥
मेघनाद महोन्नाद वारिवाह मरुद्गतिः । कपटाध्वर विध्वंसी कंसाराति प्रसंसिता ॥१२३॥

धर्मदा धनदा धीरा नर्मदा शर्मदा सती । गङ्गा गम्भीरता राधा कालिन्दी कालकर्मजित् ॥
कावेरी कर्मफलदा चन्द्रभागा चमत्कृतिः । सरस्वती सरिच्छ्रेष्ठा धूतपापा पवित्रिणी ॥
श्रीरामजयदा जिष्णु विष्णुमाया विशोधिनी । धर्माध्विनी च धर्मज्ञा धर्मरक्षण तत्परा ॥
वदान्या धनधान्यादि दानव्यसन विश्रुता । निमिवंश ध्वजापटी पतिपूजा पटीयसी ॥
प्राणेश्वरी दाशरथेः परमायुष्यवर्धिनी । अश्वमेधाधिष्ठात्री भूतधात्री तनूद्भवा ॥१२८॥
रामाश्रुवृष्टिकृद्धर्षा रामहर्षावतारिणी । खञ्जरीटेक्षणा शान्ता दक्षा दाक्षायणी प्रिया ॥
कपीन्द्र सुगिताऽनिन्द्या शाखामृग गवेषिता । सम्पातयुक्त समाचारा सम्पातपक्ष प्रदायिनी ॥
अङ्गदादि विभूषाङ्गा विनीताकृति धारिणी । हनुमद् ज्ञात वृतान्ता हनुमल्लङ्घिताम्बुधिः ॥
हनुमन्मारितानेक नक्तंचर चमून्नतिः । हनुमद्दत्त सद्धैर्य्या तपधैर्य्यधुरान्धरा ॥१३२॥
राममुद्रा प्रसंतोषी सन्तोषामृतवर्षिणी । आञ्जनेय कृताश्वासा जीविताशा च लम्बिनी ॥
त्रस्तनक्तंचरीयूथा श्रीशयूथात्र भासिनी । उद्दीपित महारम्भा दीप्तिर्दीप्तिशरीरिणी ॥१३४॥
सुदीप्तानलभादीप्ति निर्जितानन्त भास्करा । अशोक काननान्तस्था शोकमोह भयापहा ॥
रक्षःशोकप्रदाऽशोच्या चामीकर चमत्कृतिः । सावित्री शमने लङ्काप्राण मराङ्कपन्नगी ॥१३६॥
लङ्के शक्लेशदा लङ्का विथिका दाहदुर्धरा । धुरीणार्य धुरीधुर्य्या सप्तपुर्य्याधि देवता ॥१३७॥
हनुमल्लोल लाङ्गूल शिखरा ग्रहितेषिणी । आञ्जनेयोक्तवृत्तान्त रामस्वान्तः प्रमोदिनी ॥
समुद्रत्रासकृत् सेतुबन्ध विद्याविकाशिनी । अङ्गदागमनप्रीता प्रीताङ्गद बलप्रदा ॥१३९॥
उल्कामुखान्तकृत्कोपा मेघनाद विनाशिनी । भूर्भुवः स्वःत्रयी सेव्या वराऽभीति विभाविनी ॥
महालक्ष्मी महादेवी महावाणीश्वरी श्वरी । ब्रह्माद्युपासिता सान्द्रा करुणी करुणालया ॥
अयोध्याध्यायिनी ध्याता कौशल्या पुष्पकासना । पद्मासना पद्महस्ता पद्माक्षी पद्मसौरभा ॥
पद्मानना पद्ममाला बालार्क किरणप्रभा । केशनिर्जित मेघश्री विद्युद्रत्न ललाटिका ॥१४३॥
सिन्दूरबिन्दुतिलका भ्रूजितानङ्ग कार्मुका । दृगन्तजित पञ्चेषु बाण सम्पत्समुन्नतिः ॥१४४॥
कपोलनिर्जितोन्मुग्धा मधूक कुसुमद्युतिः । तिलप्रसून जिन्नासा स्मितामृत तरङ्गिणी ॥१४५॥
ऊधरीकृत बन्धूकावर पल्लव शोभिनी । कम्बुग्रीवा मृणालाभा भुजवल्ली विराजिता ॥
वक्षोरुह जिताम्भोज कलिका कलिकामधुक् । कृशानुकम्पा फलदा कृशानुत्विट् कृशोदरी ॥
करभोरुः पदाम्भोज जितपल्लव पद्धतिः । नखचन्द्र जिताऽनेक चन्द्रमाचारु भूषणा ॥१४८॥
शृङ्गारादि रसायुक्ता शृङ्गार रसिकप्रिया । शृङ्गारभूषणा भूषा लज्जालुर्जलजेक्षणा ॥१४९॥

वासवादि दिगीश श्रीः सेवितार्ति विनाशिनी । श्रीरामप्राणवसतिः शेष–श्रुति महायशाः ॥
अद्भुताद्भुत लीलाढ्या साद्भुताकार भासिनी । लावण्यलोभिनीपाङ्गी ललिता ललितालका ॥
विद्याधरी गिराकीर्णा जीर्णोद्धार विधायिनी । राजराजेश्वरी रामराजधानी रजोगुणा ॥१५२॥
तरुणार्क प्रभापूर्णा करुणावरुणालया । विदेहराज तनया विनयाप्त महोदया ॥१५३॥
सर्वभूत दयाशीला लीलामानुषविग्रहा । निग्रहानुग्रहकरी सर्वलोकप्रियंवदा ॥१५४॥
राज्य लक्ष्मीधरा शास्त्री त्रिलोकी शासनेरता । गोदात्री च विहारज्ञा रामा गूढसमुद्भवा ॥
सूर्यमण्डल मध्यस्था चन्द्रमण्डल शायिनी । नक्षत्रोद्भासिनी भूतत्रासिनी प्रेतनाशिनी ॥१५६॥
सीमन्तिनी महासीमा भीमाकृति च रोधिनी । रामभक्तिप्रदा रामप्रेमवल्ली रमालया ॥१५७॥
रघुवंशकुलोत्तंसा राजहंसी हसन्मुखी । हरिणायत दृग्–क्रीडा हरिणी बद्धमानसा ॥१५८॥
सारिका मधुरालापा प्रियाप्रेष्ट प्रमोदिनी । चतुर्वर्णाश्रमाधारा चतुराकार कल्पिनी ॥१५९॥
चतुराकार कर्मज्ञा चतुरार्णव वन्दिता । चतुर्लक्षाधिकाशीतिलक्षजीवाववोधिनी ॥१६०॥
चतुर्युग विभागज्ञा चतुः सीमावनेश्वरी । चतुर्वेदमयी चारुचरिता हरिताम्बरा ॥१६१॥
माध्वीक माधुरी मूर्तिर्मधुरा मधुरप्रिया । मल्लिकाक्ष गतिर्मल्ली मालिकाय मृणालिका ॥१६२॥
माधवी मण्डपस्थेया मालती समलङ्कृता । सर्वावयव भूषाढ्या पीयूषा सारवर्षिणी ॥१६३॥
ईडा पिङ्गलिका सूक्ष्मा सुषुम्नासुख वर्धिनी । प्राणापान समानाख्या व्यानोदान स्वरूपिणी ॥
सुषुम्ना सुखमावासा सुखदा सुखसम्भृता । शक्तिः कुण्डलिनी शक्ता नाभीकन्द कृतालया ॥
कल्याणरूपिणी कन्या कलिकालान्त कारिणी । कल्पवल्ली वितानश्री कामराग मदापहा ॥
कुन्दमाकन्द कादम्बकाननस्थितिरस्पृहा । सागरान्त धराधीशा शीशाराध्य कृपेक्षणा ॥१६७॥
कुन्देन्दु मन्दहसिता वेदान्तश्वसितावली । हिरण्यगर्भ सम्भूति विराडन्त नियामिनी ॥१६८॥
नाडीचक्रचिदाकाशा जिज्ञासारस वेदिनी । दीनानाथ समाधाना प्राणानिल विलक्षणा ॥१६९॥
कर्पूराभा कुंकुमाभा पयोदा भाऽवभासिनी । चिद्रूपिणी वषट्रूपा चित्ररूप प्रदर्शिनी ॥१७०॥
प्रावृट्छरदुदारश्रीर्हेमन्त शिशिरप्रभा । वसन्ती विशदावश्या, वसन्तोत्सव धारिणी ॥१७१॥
ग्रीष्मर्तुरूष्मभिद् भूरिभावना पावनाशया । कौशला काशिक काञ्ची मथुरा वन्तिका तथा ॥
मायालयकरी माया द्वारिका पापहारिका । सप्तपुण्यात्मिका सप्तसागरागारवर्तिनी ॥१७३॥
शिवा शिवार्चिता शैववत्सला शिवदानघा । मूलचक्रार्चिता मेध्या मणिपूर प्रपूरिका ॥१७४॥
स्वाधिष्ठान प्रदाधिष्ठा मेरुचक्र प्रभेदिनी । भ्रूचक्रचारिणी मूर्धा कमलान्तर्विलासिनी ॥१७५॥

ब्रह्मानन्दमयी ब्रह्म ब्रह्मरन्ध्र गतागतिः । दीर्घानल जपा जप्या जपयज्ञवती जया ॥१७६॥
नवधाभक्ति भेदज्ञा दशमी प्रेमलक्षणा । प्रवाहमार्ग परमा मर्यादामार्जितागमा ॥१७७॥
पुष्टि पुष्टिमयी तुष्टि निस्तीन प्रेमपूरिता । लावण्यलेशनिर्धूता रतिविरति विभ्रमा ॥
रामाप्त दोहदा रामा गङ्गातीर विहारिणी । सौमित्रिप्रणता पूर्णं कौशिकादिक विस्तुता ॥
वीरप्रसूके रुहाछाला गालध्वज गृहोत्सवा । मुनिपत्नीकृतानेक परिचर्य्या प्रभावती ॥१८०॥
राघवेन्द्र महायज्ञा क्रियासाहाय्य कारिणी । मोहिनी स्वर्णवर्णाङ्गी सुवर्णा स्वर्णपुत्रिका ॥
अलौकिक गतिर्लोक वन्दनीया महाप्रभा । रामायण कथोद्गीता ज्ञाता कुशलवप्रसू ॥
सुरैःप्रशंसिता प्रौढा ब्रह्मचर्य्यं व्रते स्थिता । ब्राह्मणी वन्दिता वन्दिविख्यात ख्यात पौरुषा ॥
गार्हस्थ्य गुणसम्पन्ना, गृहस्थाराधिता रसा । रसबोधवती रस्या रसनारस भाविता ॥
षड्रस स्वादवित् स्वादारसभाव विभाविनी । अजोऽबिनाशिनी जाम्बूनदभूषा जगज्जनिः ॥
बानप्रस्थव्रता तीव्र परिव्रज्याधि देवता । वर्णाश्रममयी माया ब्रह्मवाद विवेकिनी ॥१८६॥
सहस्रशोर्षिणी नारी सहस्राक्षी सहस्रपात् । सहस्रबाहु रव्यग्रा सहस्रग्रामवासिनी ॥१८७॥
सर्वतः पाणि पादान्ता सर्वतोऽक्षि शिरोमुखा । सर्वतः प्रतिमालोकं सर्वमावृत्य संस्थिता ॥
प्रभाभिरञ्जिता भूतव्यापिका पिकभाषिणी । ऋग्यजुः सामभिर्गीता चतुर्खानि युगाबुधा ॥
सकृत्प्रणामवशगा सकृत्पूजा प्रसन्नधीः । प्रतापानलदग्धारि मुग्धाकृति रघोत्तजा ॥१९०॥
अरुणासुर सैन्यघ्नी शून्यबोध विरोधिनी । कर्मोपास्या चिदाधारा संसारार्णव पारदा ॥
द्वादशादित्य संकाशा कृतिकाकान्ति शीतला । वैश्वानरमयी नारी मण्डली मण्डिताश्रया ॥
सर्वदेवमयी सर्वा वयवोज्ज्वल रूपिणी । बुद्धिः शुद्धिर्महासिद्धि समृद्धि वृद्धिवर्धिनी ॥
पञ्चरात्रि प्रिया पारा विस्तरा संहिताश्रया । सीरध्वजसुता सीररेखा भू शुभलक्षणा ॥
सुवृता वर्तुलाकारा ब्रह्मावर्तं निवासिनी । यथार्थमातृका रामहृदयान्त विलासिनी ॥१९५॥
किरीटिनी किरीटा ग्ररत्नश्रेणि विजृम्भिता । प्रसिद्धा सिद्धिदा सिद्धा सिद्धौषधविनिषेविता
भक्तिद्रोह शिरश्छेत्री भेत्री संशय संभृते । सर्वाशय रहोवेत्री जेत्री विषय विस्तृतेः ॥१९७॥
प्राण प्राणात्मिका चक्षुश्चक्षुरूपा श्रुतेः श्रुतिः । मनसोऽपि मनोरूपा भूपान्वय विभासिनी ।
रामाजाया जगन्माया पवित्रा पतिदेवता । यमपाशच्छिदा भूरिभ्रमभास भिदाछिदा ॥
ज्ञानदा ज्ञेयदा ज्ञात्री क्षेत्रज्ञा क्षेत्रदा क्षितिः । अकुशा कुशलोकर्धिः समृद्धाध्वर पूजिता ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

सीता सहस्रनामेदं सौमित्रे ! य पठिष्यति ।
मनोरथतरुस्तस्य फलिष्यत्यनुफलं फलम् ॥२०१॥
रामभक्ति प्रदैतद्धि सीतानाम सहस्रकम् ।
यः पठेत् प्रयतः प्रीत्या सलभेत समीहितम् ॥२७२॥
राघवेन्द्रः स्वयं साक्षादीश्वराणामपीश्वरः ।
श्रुत्वा सहस्रनामेदं दत्ते स्वस्मिन् परांगतिः ॥२०३॥

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीलक्ष्मणाग्निसंवादे श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मैया से प्यार की भिक्षा

अये मातर्लक्ष्मी ! त्वदरुण पदाम्भोज निकटे,
लुठन्तं बालंमाविरल विगलद्बाष्पं जटिलम् ।
सुधासेकस्निग्धैरति मसृणमुग्धैः करतलैः,
स्पृशन्ती मारोदीरिति वद समाश्वास्यसि कदा ॥

—लक्ष्मी लहरी-४०

हे मैया हे श्रीलक्ष्मीजी ! आपके अरुणारे चरणारविन्दों के पास में रोते हुए-छटपटाते हुए-निरन्तर आंसू बहाते हुए, धूलि से भरे हुए केश वाले अपने इस बालक को आपने अमृत से भरे हुए कोमल मनोहर मधुर कर कमलों को लाड प्यार से दुलारती हुई वेटा ! क्यों रोता है ! मत रो, चुप हो जा, ऐसा कब कहोगी ?

श्रीजानकीगर्भस्तुतिः

अथ तां गर्भसंवासं ज्ञात्वा सर्वाभिदेवताः । परमेष्ठिना सहायेन आगतास्तु सुलोचने ॥१॥
अहमेव जगामाथ मिथिलां च पुरीं शुभाम् । वेदसूक्त समाराध्य तुष्टुवुः तां च आदरात् ॥

लोकान् सर्वान् सभारं तव च सकलान्देवतान्यक्ष रक्षान्–
यज्ञान्स्वाहा स्वधाया वषट् सकलं धर्ममार्गं विधेयुः ।
तत्तत् त्वच्छरण्यान् त्वदेकमभजत् , त्वं देवि ! संजीवनं–
भूमेर्भारं कृशांसं विकतथ विकलं धर्मं रक्षांसिभिश्च ॥३॥

चामीकरद्युति निभेशतपत्र वक्त्रे कौशेयवस्त्र परिरञ्जित वर्ष्मकान्ते ।
ज्योतिर्मये जगदशेष जनन्य देवि ! त्रायस्वते सकलदेव मनन्यदेव ॥४॥
यस्याण्डगर्भगणितानि स एष काले गर्भंगता सपदि देव जनस्य रक्षे !
त्वामस्य वीक्ष्य पदवीं हि भयाद्द्रुतानामाधारभूतमपि तत् त्वयिरक्ष-रक्ष ॥५॥

हे सुलोचने ! जब श्री जू गर्भ में विराजमान हुई हैं ऐसा देवताओं ने जाना तब श्रीब्रह्मा जी को प्रमुख बनाकर सब देवता वहां आये ॥ १ ॥ हे देवि ! मैं भी परम शुभ श्रीमिथिलापुरी में वेदों की ऋचाओं से आराधनीया उन श्रीसीताजी को सादर प्रसन्न करने के लिये आ गया था ॥ २ ॥

सर्व लोकों को, सभी देवताओं को, यक्ष रक्षों को, यज्ञों को, स्वाहा, स्वधा, वषट्कार को सुरक्षित रखने के लिये आपने धर्म मार्ग का विधान बनाया, उन–उन में से आपका ही एकमात्र भजन करने वाले आपके ही शरणागत हम सबको हे देवि ! आप ही एक सञ्जीवन प्रदायिनी है, राक्षसों के भय से भयभीत भूमि का भार हरण करने वाली आप हमारी रक्षा करें ॥ ३ ॥ सूर्य किरणों के समान अनन्त द्युति सम्पन्न, विशाल कमल दल के समान नेत्रों वाली, कौशेय (रेशमी) सुन्दर वस्त्रों से अलंकृत, दिव्य छवि युक्त सम्पूर्ण जगत् को जननी, ज्योतिर्मय हे देवि ! सभी आपके अनन्य उपासक इन देवताओं की आप रक्षा करें ॥४॥ जिसमें अनन्तानन्त ब्रह्माण्ड समाये हुए हैं वही आज माता के गर्भ में निवास कर रही है, यह तो हम देवजनों की शीघ्र रक्षा करने के लिये ही करतीं है । आपकी यह लीला देखकर भय से भयभीत कांपते हुए हम सबको आप आधार वनी हुई हैं यही निश्चय होता है, ऐसी हे माता ! आपकी शरण में रहे हुए हमारी रक्षा करिये–रक्षा करिये ॥ ५ ॥

कान्तार दुःख गहनेषु विक्षिप्तचित सम्भ्रामयत्य गणितानि सरीसृपादेः ।
मन्दाधिकार धिषणा नतुपादमूले त्वय्येवदेवि वरदे भुवन त्रयेऽपि ॥६॥
पादस्य यावकरसेन तलं सुरक्तं तेषांनुरन्तिसुमनोऽनुगता विधेय ।
ते ते हिपार भववारिधि यान्ति देवि! त्वत्तो शरण्यविचरन् भवनिर्गतास्ते ॥७॥
मग्नान् भवेषुपरिरक्ष विधेऽनुकम्पा त्वत्पादमूलरणितस्य विभूषितस्य ।
प्राप्तोऽहमम्बुजकरेकमले वराङ्गे! त्वत्पाद लाञ्छन सुलाञ्छित भूमिरेषा ॥८॥
यस्यावतार जगतीतलसम्भवेन आस्ते सुरासकल साध्वस निर्गतेन ।
तत्तोऽनुकम्प शरणागत पादमूले लावण्यसार वपुषे सरसीरुहाक्षि ॥९॥
ब्रह्मास्त्वमसि विष्णुः जगपालिकासि शम्भोस्त्वमसि जगतीं क्षयकारिणीति ।
अद्यैव ता भवतु कालविधि विधेय सीदेयु अम्बनव अस्य शरण्यकोऽपि ॥१०॥
याचिष्यते सकलदेव मनन्यदेव वज्राङ्कुशादि यवनीरज शंख चक्र ।
त्वत्पादमूल धरणीतल चिह्नितस्य द्रक्ष्याम्यहं सकल योगिभिरप्य गम्यम् ॥११॥

भवाटवी के घोर गहन वन में भूले, भटकते विक्षिप्त व्यग्र चित्त वाले, अगणित जीवात्मा सांप, विच्छू व्याघ्रादि हिंसक प्राणियों के भय से भयभीत हो रहे हैं, उन मन्दाधिकारियों को आपके चरणों की शरणागति लेने की भावना भी नहीं होती है तथापि हे वरदायिनी ! हे देवि ! त्रिभुवन के सभी जीव हैं तो आपके ही, अतएव आपको कृपा करनी ही चाहिये ॥ ६ ॥ जिन भाग्यशालियों ने आपके कुंकुम रञ्जित लाल लाल तलवों में अपनी भावनानुसार अनुराग कर लिया हैं, वे सव के सब भव सागर से पार हो जाते हैं, वे सब के सब आपके शरणागत निर्भय होकर भवाटवी से बाहर निकल जाते हैं ॥ ७ ॥ भव सागर में डूबते हुए हम सब पर अनुकम्पा करके आप हमारी रक्षा करें। आपके श्रीचरणों में पहरे हुए नुपूरों की ललित ध्वनि से विभूषित पादारविन्दों की शरण में हम प्राप्त हुए हैं, हे कमल धारिणी ! हे कमलाङ्गिनी ? हे श्रेष्ठ अङ्गों वाली ! अब यह भूमि आपके श्रीचरणों के चिह्नों से अलंकृत होनी चाहिये ॥ ८ ॥ जगतीतल में जिसके अवतार लेकर प्रकट होने से, सभी देवता भय निर्मुक्त होकर आनन्द से रहते हैं ऐसे हम सब श्रीचरणारविन्दों के शरणागत आपके द्वारा अनुकम्पनीय हैं। हे लावण्यसार सुन्दर विग्रहे ! हे कमलदल लोचने ! आप हम पर कृपा करें ॥ ९ ॥ आप ही जगत् का उदय करने वाली ब्रह्मा आप ही जगत् का पालन करने वाली विष्णु भगवान् हैं। आप ही जगत् का संहार करने वाली रुद्र भगवान् हैं। आज ही आप अपने उस कालगति से ग्रसित आश्रितों का रक्षण करें। क्योंकि आपका शरणागत कोई भी दुःखी नहीं होना चाहिये ॥ १०॥

सभी देवताओं की एकमात्र अनन्य देवता, सकल योगीजनों को भी अप्राप्य परम दुर्लभ वज्र-अंकुश-यव-कमल-शङ्ख चक्रादि रेखाओं से अलंकृत आपके श्रीचरणारविन्दों के चिह्नों से सुचिह्नित इस धरणीतल को हम कब देखेंगे ? ॥ ११ ॥

श्रीजानकी सकललोक विधेयकाले लावण्यसार वपुषोद्भव संचचार ।
भक्तेषु वाञ्छित विधाय जगन्निवासे मञ्जीरहार मणि कुण्डल माल्यभूषे ॥१२॥

त्वमेव देवि ! शरणागत पालिकासि भीताऽभयप्रति जननि त्वं सद्वारिजाक्षि ।
मन्दारपुष्प रमणीय विशालशोभे ! सिंहासने कनकमण्डप मध्यसंस्थे ॥१३॥

योगीन्द्रवृन्दमुनिसिद्धसुरासुराद्याः सिद्धिगता रणित नूपुर रत्नसेवी ।
सन्तापहारि वनजारुण पल्लवाक्षि ! नीलं वहत्यं परिधान तडिल्लताङ्गे ॥१४॥

वेणीषु गुम्फित पराग द्विरेफमाल पुष्पाणि रञ्जित सुगन्धित मल्लिकाभिः ।
चन्द्राननॆ सपदिरदयधुनैव देवि भीताश्चलोक अभिभूयजरा भविष्यथ ॥१५॥

सन्तानकेषु रमणीय विशाल कुञ्जे शय्या सुपूजित विराजित दिव्यमूर्ते ।
चम्पाङ्ग रोचन सुमौक्तिक हारभूषे केयूर हीरक भवानि विभाति शोभा ॥१६॥

बालस्वभाव विचचार महीतलेषु शब्दायतं मधुर नूपुरपाद रम्यम् ।
भाग्यालये जनकराज गृहेषु रम्ये पादेनकंज सुपराग विधुन्नमस्ते ॥१७॥

यस्यावतार चारितानि विधूतपापा स्वर्गंप्रयान्ति भवनेष्वपि गायमाना ।
त्वामेव सन्निधि वशिष्यरुजो विमग्न्य संसारमोह विटपस्य विछिन्न तस्य ॥१८॥

मुग्धाङ्गना विपुलसेव्य तडिल्लतेव गायन्ति ते तव यशो पुरतः प्रसह्य ।
कर्णेषु संस्थित विशाल रसालपुष्पं गण्डेषु पीत मणिकुण्डल संचचार ॥१९॥

ब्रह्माण्डकोटिषु विहार वितत्य माया मातण्डकोटि प्रभया वपुषे वहन्ति ।
अद्यैव तस्य सुभगस्य स्वरूप देवि ! विहरस्व पुण्यमजिरे मिथिलाधिपस्य ॥२०॥

पादेनकञ्ज शिरसा कुसुम प्रभेन मञ्जीर हारक सुरत्न सन्नद्धकेन ।
हंसस्य शब्द रणितं नखरस्मयश्च चन्द्रास्यमित्र प्रकाशकरं हृदेषु ॥२१॥

त्वां सेव्यमान विबुधाङ्गनया समेतं भक्ताः मुमोच हृदुजश्च जहर्ष देवि ।
त्वत्पादपङ्कज रजां स्यभिसिञ्च्य गात्रे किंवा भवामि मिथिलाद्रुम अङ्कुरश्च ॥२२॥

तस्यैव यस्य हृदि हारि मारीचि माला कर्णेषु देवसफलात्म कृतार्थमेव ।

लाक्षारसस्य विचकाशकरं सुरागं लेखा त्रयं त्रिगुणासंभव अन्वयस्य ॥२३॥

सकल लोक के कल्याण करने के सुन्दर समय में–लावण्य के सुन्दर सार स्वरूप विग्रह धारण कर आप इस भूतल पर विचरण करें । हे जगन्निवासे ! मणि कुण्डल तथा मञ्जीर हारादिक माला से सुशोभित आप भक्तों के वांछित विधान करके दिव्य दर्शन का लाभ प्रदान करें ॥ १२ ॥ कनकभवन के रत्नसिंहासन पर विराजमान, मन्दार पुष्पों की रमणीय माला से सुशोभित, भयभीतों को अभय पद प्रदान करने वाली; हे कमल नयने ! हे माता ! हे देवि ! आप ही शरणागत की एकमात्र पालन करने वाली हैं ॥ १३ ॥ आपके रत्न जटित नूपुरों के मधुर स्वर के रस भोगी, योगीन्द्र, सिद्ध, मुनि, सुर, असुरादिक सिद्धि को प्राप्त हो गये हैं, हे अरुण कमल दल के समान नयन वाली, विजली की लता के समान चमकीले गौर सुन्दर कान्ति सम्पन्न शरीर वाली, नील रङ्ग की साड़ी इसलिये पहनती हैं कि दूषित कर्म करने वालों के भी मैं सन्ताप हरण कर देती हूं । शरण आने पर अपना लेती हूं ॥ १४ ॥ जैसे सुगन्धित मालती की सुगन्धी रञ्जित आपकी वेणी में गुंथे हुए पुष्पों के पराग लेने को भ्रमरों की माला (पंक्ति) आनन्दित होती है, वैसे ही हे चन्द्रानने ! आप हम सबकी भी शीघ्र अभी रक्षा करिये, हे देवि ! यदि विलम्ब होगा तो ये भयभीत लोक शीघ्र ही नष्ट हो जायेंगे ॥ १५ ॥ सन्तानक वन में, रमणीय विशाल कुञ्ज में मृदुल शैय्या पर सुपूजित होकर हे दिव्य मूर्ते ! आप जब विराजती हैं तब चम्पा के समान आपके सुन्दर अङ्ग में मुक्ताहार, केयूर, हीरा, रत्नादि जटित अलङ्कारों से आपकी शोभा बड़ी सुन्दर लगती है ॥ १६ ॥ बालोचित भोले भाले स्वभाव से जब आप पृथिवी पर विचरती हैं तब आपके चरण का नुपूर बड़ा सुन्दर बजता है, उसको देखने सुनने वाले श्री जनकराज के रमणीय घर में निवास करने वाले बड़े भाग्यशाली हैं, आपके उस चरण कमल का पराग (धूलि) को हम नमस्कार करते हैं ॥ १७ ॥ जिसके अवतार के पावन चरित्रों का अपने घर में बैठे बैठे गान करने वाले भी पापों से विमुक्त होकर स्वर्ग में चले जाते हैं, वे संसार रूपी मोह वृक्ष को जड़ से काटकर आपकी ही सन्निधि में सदैव आनन्द निमग्न होकर निवास करते हैं ॥ १८ ॥ आपके स्नेह विमुग्ध विपुल अङ्गनाये जो बिजली की लता की भांति चमकती हुई आपकी सेवा करती हुई, आपके सम्मुख अपना कीर्तिसुनकर अपने आप लज्जित होती है तथापि हठ कर आपके निर्मल सुयश का गान करती हैं, वही आपके कानों में विशाल रसाल पुष्प तथा कपोलों पर पीत रङ्ग के मणि कुण्डल बनकर झूम रहे हैं ॥ १९ ॥ आपकी महा शक्ति सम्पन्न माया ने अनन्त कोटि ब्रह्माडों में जो कोटि–कोटि सूर्य बनाये हैं, वे सब आपके अङ्ग की कान्ति की छटा से ही प्रकाशित है, हम सब चाहते हैं कि वह महाकान्ति पुञ्ज आपका दिव्य स्वरूप आज ही श्रीमिथिलेश महाराज के पावन प्रांगण में विहार करे ॥ २० ॥ कमल तथा सिरिस के सुमन के समान चरणों द्वारा, स्वर्ण के रत्नालंकृत मञ्जीर ध्वनि करने वाले नूपुरों के द्वारा, हंस का गति के समान मधुर चाल चलने वाले शब्दों से सुशोभित तथा चन्द्रमा की किरणों के समान

नखों की ज्योति से हृदय में प्रकाश करने वाले चरणों को हम देखना चाहते हैं ॥ २१ ॥ देवाङ्गनाओं द्वारा सेव्यमान उनके सहित आपकी सेवा करने वाले भक्तजन हृदय का दुःख त्याग कर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं, हे देवि ! आपके उन श्रीचरणों की रज से अपने शरीर सिञ्चित करने के लिये क्या हम कभी श्री मिथिला जी में कोई तृण-वृक्ष अंकुरादि बन कर अपने को धन्य बनावेंगे ॥ २२ ॥ उसी प्रकार आपके लाक्षा रस से सुरञ्जित कर कमल में विराजित मणि बन्ध की त्रिगुणों की जननी षीन रेखाओं की सुप्रकाशित मरीचि मालाओं का हृदय का हरण करने वाला गुणानुवाद हम देवताओं के कानों में पड़ने से हमारा जन्म सुफल तथा कृतार्थ ही हो गया ऐसा मान कर परमानन्द प्राप्त हो जाता है ॥ २३ ॥

ये त्वाम्बुजे चरण सेव्य वितर्क बीची हत्वेन्द्रियार्थ हि श्रिया विभावस्य पश्यन् ।
गायन्ति ते अनुदिनं चरितं विशालं बालंविनोद सुजना कृपयाविभाजम् ॥२४॥

योग्याः भवन्ति हि जरा मरणानि हन्त्य मातुः पयोधररसं न पुनः पिबन्ति ।
काप्यम्बुजाक्षि भववारिधि पारगम्यं त्वत्पादपङ्कजरजेन विधूयगात्रम् ॥२५॥

कामं वसिस्यनिकटे तव देवि रम्या सख्या स्वरूपममलं तनुभिः सुसेव्यम् ।
पश्यन्ति नेत्रयुगलाञ्जन रञ्जितं ते कर्णावलम्बि चल कुण्डल शोभिगण्डम् ॥२६॥

भानिर्जितस्य रजनीपति मण्डलस्य सौम्यांशुदीधिति मुखं न कलंकितस्य ।
हारावलीं हृदिषु रत्नविचिचनद्धं मध्ये स्वनन्ति रसना कलशातकौंभम् ॥२७॥

दृष्ट्वा तु देवि तवराग विवर्धनस्य ताम्बूलक[illegible] रदनच्छदहारिशोभा ।
कुन्देन्दुरुज्वलश्रिया कलदन्तपङ्क्ति र्वाचान्तरेण उदिता शशिकौमुदीव ॥२८॥

पश्यन्ति ते विपुल दीक्षित यज्ञभागं त्यक्त्वा सुदुस्त्यज गृहंह्यपि लोकवार्ता ।
पादेनकंज मकरंद मुहुर्विवामो रागेण यावक सुरञ्जित तस्य बुद्ध्या ॥२९॥

अङ्गुलीयस्य मणिभूषित कान्त कान्ति, ध्यानात्प्रकाश हृदयेषु वितन्वयं च ।
तस्यप्रकाश त्रिगुणावधि कालवस्था ज्ञास्यन्ति निर्म्मलयशोरपि गायमानाः ॥३०॥

ध्यानेन ते निहित किल्विषमात्मशक्त्या यान्तेत्र तुभ्यपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्या ।
देवाभिपूजित सुरर्विगणास्तुवन्ति लोकाभिवन्द्य चरणौ बलिनोपहारैः ॥३१॥

शिवस्तु सशक्ति तवात्मक ताभिभूय कालेन काल वशवर्त्य वधिन्न याति ।
शौर्यास्पदं न विहन्त च कापिकाल लोकत्रयेऽपि न विनश्यति स्त्वय देवि ॥३२॥

कौशेय कनकचम्पक दाम गात्रा सेवन्त्यहर्निश वरे कमले वराङ्गे ।

यस्याःकलांश कलयाभि रुद्रीणांकोटि ब्रह्माण्डरोमे विवरस्य च ते महित्वम् ॥३३॥

यस्याःकटाक्ष वलितानि (यद्) दिदृक्षया वै ब्रह्मादिकोटिभिरुपत्य विनश्य यन्ति ।

यस्यैव तां शरदमिन्दु निभांशु वक्त्रां पालन्नयपगदशेष मसस्वरूपम् ॥३४॥

त्वत्पादपङ्कज रजांसि मुहुः स्मरामि ध्यानेषु तद्गत मनोऽपि मुहुर्भजामि ।

त्वामेव देवगण रक्षयधुनैव काले लोकानि विद्रुत भयामपि राक्षसैश्च ॥३५॥

जो सभी प्रकार के तर्क वितर्कों का त्याग करके परम सेव्य आपके श्रीचरण कमलों की सेवा में लग जाते हैं, वे इन्द्रियों के क्षणिक सुखों से विरक्त होकर आपके परम वैभव को प्रत्यक्ष देखते हैं, ऐसे सज्जन आपके बाल विनोद केलि कौतुक का रात दिन विस्तार पूर्वक गान करते हुए आपकी कृपा का परमानन्द प्राप्त करते हैं ॥ २४ ॥ जो आपके धूलि धूसरित श्रीचरणारविन्दों की रज से अपने शरीर को धोते हैं (अर्थात् उसमें लोट पोट होते हैं) वे कोई भी हों तो भी हे कमलनयने ! भवसागर से पार अवश्य चले जाते हैं उनके जरा-मरण-जन्म-गर्भादि दुःखों का विनाश हो जाता है । तथा उनको पुनः पुनः माता के पयोधर पान करने के लिये संसार में कभी नहीं आना पड़ता है ॥ २५ ॥ हे देवि ! जो आपके निकट में रहकर आपकी सखी का स्वरूप धारण कर परम सुसेव्य अञ्जन से सुरञ्जित आपके कजरारे श्री नेत्र कमलों का दर्शन करती हैं तथा कपोलों पर झूमते हुए आपके कर्णफूलों को निहारती हैं उनको फिर लोक परलोक में कौन सा सुख भोग अवशिष्ट रह जाता है ? ॥ २६ ॥ रजनी पति चन्द्रमा के मण्डल की शोभा को जिसने जीत लिया है सुधांशु के जैसा परन्तु कलङ्क रहित जिस मुख मण्डल की शोभनीय कान्ति है, हृदय में विचित्र रत्नों से जटित हार मालायें झलक रही हैं, तथा उसमें लगीं हुई घुंघरियां मधुर झनकार कर रही हैं, हे देवि ! ऐसे प्रेमानुराग बढ़ाने वाला, ताम्बूल के रङ्ग से रङ्गे हुए दांतों की मनोहर शोभा संयुक्त आपका मुखचन्द्र कुन्दकली तथा चन्द्र किरणों की उज्वल श्रीकान्ति सम्पन्न दन्त पंक्ति से ऐसा सुशोभित हो रहा है कि भूतल पर अद्वितीय चन्द्र की कौमुदी ही प्रकारान्तर से सुप्रकाशित हो रही है ॥ २७-२८ ॥ जो दुस्त्यज घर के मोह का तथा लोक वार्ता का परित्याग कर जो आपके मुखारविन्द का दर्शन कर लेते हैं वे सभी महा यज्ञों में दीक्षित होने का विपुल पुण्य अनायास प्राप्त कर लेते हैं । हे माँ ! उन आपके चरण कमल का मकरन्द मधुरस पान हम वारंवार करते रहें तथा आपके लाल लाल-अरुणारे तरवा के रङ्ग से हमारी बुद्धि सुरञ्जित बनी रहे यही वरदान दीजिये ॥ २९ ॥ आपकी रत्न-जटित अंगूठी की कमनीय कान्ति का ध्यान करने से हृदय में दिव्य प्रकाश का विस्तार होता है, जिसके प्रकाश में आपके निर्मल यश का गान करने वाले त्रिकाल ज्ञान प्राप्त कर यथार्थ तत्त्व जान जाते हैं ॥ ३० ॥ जो आपका ध्यान करते हैं उनकी अन्तर्हित आत्म शक्ति का ऐसा

प्रकाश होता है कि उनके समस्त कल्मष नष्ट होकर वेद वेदान्त वेद्य आपकी पदवी को प्राप्त होने में वे समर्थ हो जाते हैं, देवता गण भी उनकी पूजा करते हैं, देवर्षि जन उनके निर्मल स्तुति करते हैं, तथा लोक में भी सभी पूजोपहार लेकर श्रीयुगल चरण की वन्दना करते हैं ॥ ३१ ॥ श्रीशिव शक्ति समेत आपके आत्मीय परिजन बनकर प्रलय काल में भी मृत्यु के वश न होकर मृत्युञ्जय पद प्राप्त किये हैं, उनका शौर्य कभी किसी काल में नष्ट नहीं होता है। लोक क्षय होने पर भी उनका विनाश नहीं होता है, हे देवि आप कृपा कर उसी प्रकार हमारी भी रक्षा करें ॥ ३२ ॥ रेशमी वस्त्र, कञ्चन की तथा चम्पा कली की माला रात दिन जिसके श्री अङ्ग की शोभा सुन्दरता बढ़ाते रहते हैं तथा जिसके कला कलांश से अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं ऐसी वराङ्गना कमला भी आपकी अहर्निश सेवा में लगी रहती हैं यह आपकी महान् महिमा है ॥ ३३ ॥ जिसके कटाक्ष की स्वाभाविक दृष्टिपात से ही कोटि-कोटि ब्रह्मादिक उत्पन्न तथा विनष्ट होते रहते हैं, ऐसी शरद् पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान मुखचन्द्र वाली हे श्री किशोरीजू ! आप हमारे सभी दोष दुःख निवारण कर सदैव अपने करुणामय वात्सल्य से हमारी रक्षा करें ॥ ३४ ॥ आपके ही चरण रज का वारंवार स्मरण करता हूँ, आपके श्रीचरणों का ध्यान लगाकर वारंवार भजन करता हूँ, आप ही इस समय हम देवगणों की रक्षा करें, क्योंकि हम लोग राक्षसों के भय से इस समय मारे-मारे भटक रहे हैं ॥ ३५ ॥

शरदेन्दु सुन्दरमुखे तरुणाब्जनेत्रे कण्ठे सुचम्पक विराजित माल्यशोभे ।
चण्डांशुकोटि तिग्मांशु विधारकासि चन्द्रांशुकोटि वपुषे खलु शीतलांशुः ॥३६॥

वाचामगोचरमनो धिषणास्त्वमेव कर्मास्त्वगोचर सदाभजतानु गम्ये ।
यस्मै दयालु कृपया सु अपांगया ते तस्य गृहे अनुदिनं विचरन्नमस्ते ॥३७॥

इन्द्रत्व ब्रह्म विभवस्य महेशकस्य विष्णुस्तु कोटिविभवस्य हि सन्त यस्य ।
त्वत्पाद कञ्ज रजसा तु पुनाति लोक तस्य नमः सकलदेव शरण्ड देवि ॥३८॥

कमलातटे सुरुचिरेषु विकासिपद्म चंचत्पराग रणितानि द्विरेफ माला ।
कुंजे सुरम्य विकचस्सुलवङ्ग एला तां सेव्य सखिवरामि विशालनेत्राम् ॥३९॥

सर्वर्तु कालमवलम्ब विहारभूमिं पुष्पानुरञ्जितलताद्रुम शोभिता च ।
सौधानि हेम मणिजाल विचित्रलेखा गोवाजि संकुल पुरीमिथिला सुरम्या ॥४०॥

शृण्वन्ति ते मधुर नूपुरनाद रम्यं लोकान्पुनाति पशवोऽपि मृगादिकश्च ।
कामं प्रयान्ति तवलोक मुनीन्द्रलभ्यः वैमानिकैः शतपसोरपि गायमानः ॥४१॥

मन्दारपुष्प रमणीय विशाल कुञ्जे शोभापरा वकुलचम्पक मल्लिकाभिः ।

वेणु क्वणन्त सुभगादिभि सेव्यमाना पुष्पाभिभूषित सखो पुलिने सरय्वाः ॥४२॥
कलधौत कोमल रुचिः कमनीय वेषां रामा सुपूजित सुमौक्तिके हारभूषा ।
अग्रे सुवाद्य वल्लरिभिरुपेता संशोभिता मधुर कोकिलनाद रम्या ॥४३॥
श्रीराघवेन्द्र जननीकर कंज दिव्यै केशानुरञ्जित सुमौक्तिक पुष्पगुल्फे ।
तस्यांगपीठ रजनीपति मण्डलेव प्राच्येव उद्यतमुखं तमसंबिभिद्य ॥४४॥
सौमित्रकोटि मुकुटेन सरत्नकेन स्पंदायमान मणिनूपुर पादपद्मम् ।
एवं विधाय जगतीतल संचचार पश्याम्यहं सकलदेव मनन्यदेव ॥४५॥
श्रीराममिच्छेत मनोऽनुगतं विधान श्रीरामनाम जगमङ्गलकारि देवि ।
रामेण भूषित करेकलभे सुसौम्ये सिन्दुरविन्दु शशिमण्डल मङ्गलेव ॥४६॥
रामेणगुल्फ शुभनामपि केश वन्ध रामेण गुल्फित सग्रामपि चम्पकादिः ।
देवस्यकार्य भवदेव गुणस्य रक्षा रामेण राक्षसवधं सुतरां भविष्यति ॥४७॥
एवं प्रार्थयतो नित्यां सर्वलोकस्य कारिणी । प्रणम्य जानकीं देवीं गत्वा लोकमकल्मषः ।
इन्द्रादि देवताः सर्वे मुमुचुः पुष्पराशयः इन्द्रादि देवताः सर्वे स्वं स्वं लोकं प्रतिष्ठिताः ॥

इति श्रीजानकीचरित्रध्यान मञ्जर्यां देवताकृत श्रीजानकी गर्भस्तवनं नाम
चतुर्विंशोऽध्यायः, पत्र १२२ तः ॥

आपके शरच्चन्द्र के समान सुन्दर मुख में, नूतन खिले हुए कमल पुष्प के समान मनोहर नेत्रों में, चम्पा के फूलों की माला से सुशोभित कण्ठ में, हमारा मन लगा रहे। आप करोड़ों सूर्यों की किरणों के समान तेजस्वी रूप धारण करने वाली तथा करोड़ों चन्द्रमा के समान परम शान्ति प्रदान करने वाली हैं ॥ ३६ ॥ आप सदैव मन-वाणी इन्द्रियों से अगोचर हैं, कर्मानुष्ठान से भी आप अप्राप्य ही हैं, आप तो केवल भक्ति पूर्वक भजन करनेवालों को ही प्राप्त होती हैं। जिसके ऊपर आपकी अपरम्पार करुणा है हे दयामयी ! आप उनके हीं घर में सर्वदा रात दिन विचरण करती हैं ऐसी हे श्री किशोरी जी ! आपको नमस्कार है ॥ ३७ ॥ इन्द्र-ब्रह्मा-महेश-विष्णु आदि कोटि कोटि देव जिसका वैभव है तथा जिसके चरण कमल की रजसे समस्त लोक पवित्र होता है ऐसी हे श्रीदेवि ! सकल देवों का एकमात्र आश्रय आपको हम वारंवार नमस्कार करते हैं ॥ ३८ ॥ परम रुचिर कमला तट पर कमल पुष्प खिले हुए हैं। उसका पराग मधुकर ले रहे हैं, लवङ्ग की लताओं का सुन्दर रमणीय कुञ्ज है । इलायची के पौधे सुगन्ध फैला रहे हैं; ऐसी सुख सेवनीय सरित् प्रवरा के तट पर विशाल नेत्रा आप विचरण करती हैं ॥ ३९ ॥

उसी श्रीकमला तट पर सभी ऋतु तथा सभी काल में सुखप्रद आपकी विहार भूमि श्रीमिथला पुरी हैं, जिसमें पुष्पों से सुरम्य लता द्रुम शोभित हो रहे है। विशाल कंचन निर्मित मणि-जाल मण्डित विचित्र चित्रों से सुशोभित बड़े-बड़े महल हैं तथा गो-हाथी-घोड़ा रथ से जो सदैव रमणीय लगती है ॥ ४० ॥ श्रीमिथिला निवासी आपके श्रीचरणों के नूपुर का जो सुरम-रणीय स्वर सुनते हैं, उसी से जनकपुर के पशु पक्षी भी समस्त लोक को पावन करने वाले हो जाते हैं तथा जिनका देवगण भी निरन्तर गान करते हैं एवं जो बड़े बड़े मुनीन्द्र तपस्वी जन जिस परम पद को प्राप्त करते हैं उस परमधाम में श्रीमिथिला वासी सहज ही निवास करते हैं ॥ ४१ ॥

अब आपका श्रीअवध विहार वर्णन करते हैं, मन्दार पुष्पों के रमणीय विशाल कुञ्ज हैं, मोर-छली-चम्पा-मालती आदि जिसके चारों ओर सुशोभित हैं, सुभगादि सखी जन वीणा वंशी आदि सुमधुर बाजे बजा रही है, तथा पुष्पों के आभूषणों से सरयू किनारे आपकी सखियां सुन्दर सेवा कर रहीं हैं ॥ ४२ ॥ बड़ा सुकुमार श्रीअङ्ग है, बड़े सुन्दर वस्त्र पहने हुई हैं, बड़ा ही कमनीय वेष है, सुन्दरी ललनायें बड़े प्यार से आपकी सेवा पूजा कर रही हैं। मणि मुक्ता के हार से भूषणों से अलंकृत है, आगे-आगे सुमधुर बाजे बज रहे हैं, कोकिला के रमणीय स्वर से सुशोभित मधुर श्री अवधपुरी में आप विराजती हैं ॥ ४३ ॥ श्री राघवेन्द्र जू की जननी माता कौशल्या के कमनीय कर कमलों से आपकी वेणी गुही जा रही है, उसमें मणिमुक्ता के बने पुष्पों के गुच्छे लगाये जा रहे हैं, उनकी गोद में रजनी पति चन्द्रमा के मण्डल की भांति आप सुशोभित हैं, प्रतीत होताहै कि पूर्व दिशा का अन्धकार भेदन कर तत्काल चन्द्र उदय हुआ है ॥४४॥ श्रीसुमित्रा नन्दन के मुकुट में जटित करोड़ों रत्नों द्वारा जिनके श्रीचरणों का वन्दन होता है, जिनके चरणों के नूपुरमें मणियों का प्रकाश तथा घुंघरियों का झनकार स्पंदित हो रहा है, इस प्रकार जगती-तल पर विचरती हुई, समस्त देवताओं की अनन्य एकमात्र देवता आपके हम कब दर्शन करेंगे? ॥ ४५ ॥ श्रीरामजी का इच्छित मनोरथ पूर्ण करने वाली, उनके मनोनुकूल जगत् का मङ्गलमय विधान श्रीराम नाम का महत्व प्रकाशित करने वाली, श्रीरामजी के कर द्वारा प्रेम से विभूषित, परम सौम्य, चन्द्र मण्डल में मङ्गल की भांति सिन्दूर की रेखा से आप अलंकृत है ॥ ४६ ॥ श्रीरामजी के द्वारा उनके शुभ नाम का उच्चारण करते हुए जिनके केश गुंथे हुए हैं, श्रीरामजी के द्वारा ही चम्पाकली आदि भूषण भी प्रेमातिशय के कारण पहनाये गये हैं, ऐसी आपके ही द्वारा देवताओं के कार्य की सिद्धि तथा आपके गुणों की रक्षा होगी तथा श्रीरामजी के द्वारा आप राक्षसों का वध कराकर हम सबको सुख प्रदान करेंगी यह निश्चित है ॥ ४७ ॥

इस प्रकार समस्त लोक की कारण भूता नित्य स्वरूपा श्री किशोरी जू का प्रार्थना कर श्रीजानकी देवी को प्रणाम कर अपने लोक में देवता गण गये ॥ ४८ ॥ इन्द्रादि देवगण वारंवार पुष्पों की वृष्टि वरसाकर सब अपने अपने धाम में पधार गये ॥ ४९ ॥

"इस प्रकार "श्रीजानकी ध्यान मञ्जरी" ग्रन्थ के अन्तर्गत देवता कृत "श्रीजानकी गर्भ स्तुति" नामक चौबीसवां अध्याय समाप्त हुआ, पत्रा नं० १२२ से यह प्रारम्भ हुआ ॥"

श्रीमिथिला की झांकी

सरस श्रीमिथिला की झाँकी ।
मन भावत मोहि जनकलली की, भूमि चरणरज आँकी ॥
वेद पुराण महेश शेष नित, वरणत महिमा जाकी ।
निशिदिन ध्यावत गुण गावत शुभ, शारदमति थाकी ॥
मञ्जुलभूमि सजल सर शोभित, सरिता मनहुं सुधा की ।
क्रीडत खग सीता रटि सुन्दर, सदा प्रेम रस छाकी ॥
जहँ तहँ विपुल लगी अमराई, जो अवधी सुखमा की ।
जहँ तहँ सन्त मगनमन सुमिरत, मूरति राम सिया की ॥
"सखि सीता कहु" ललित नामध्वनि, कूजत चिडीं जहाँ की ।
"प्रेमनिधी" प्रभु प्रेम प्रदायक, चाहत रज मिथिला की ॥

श्रीकिशोरीजू सं विनय

(श्रीविदेह महाराज)

तुअ विनु आज भवन भेल रे, घन विपिन समान ।
जनु रिधि सिधिक गरुअ गेलरे, मन होइ छ भान ॥
परमेश्वरि महिमा तुअ रे, शिव-विधि नहि जान ।
मोर अपराध छमब सब रे, नहिं याचब आन ॥
जगत जननि कहाँ जग कह रे, जन जानकी नाम ।
नैहर नेह नियत नित रे, रहु मिथिलाधाम ॥
शुभमणि शुभ शुभ सब दिन रे, थिर पति अनुराग ।
तुअ सेवि पुरल मनोरथ रे, हम सुचित सुभाग ॥

—श्रीमिथिला रामायण

हमारी धार्मिक संस्थाओं का परिचय

१-श्रीदुलहा भगवान् का मन्दिर, जनकपुर धाम

आप श्रीमिथिलाजी पधारें तो श्रीरामानन्द-आश्रम में श्रीदुलहा भगवान् की सुमधुर झांकी का दर्शन अवश्य करिये । आपको परमानन्द प्राप्त होगा, श्रीजनकपुर धाम में ये प्रकट प्रभु विराजते हैं । प्रतिवर्ष अनेकों भक्त आपकी अनुपम कृपा प्राप्त कर कृतार्थ होते रहते हैं ।

१—यहां आपको सनातन धर्म का विशाल साहित्य पढ़ने को मिलेगा ।

२—भजन-कीर्तन-कथा सत्सङ्ग का अपूर्व लाभ प्राप्त होगा ।

३—"श्रीरामानन्द साहित्य माला" का अप्राप्य साहित्य भी प्राप्त होगा ।

४—अन्नक्षेत्र में अतिथि अभ्यागतों को भोजन दान मध्यान्हकाल में मिलता है, उसका दर्शन होगा ।

५—रोगी दुखी जनता को विना मूल्य अमोघ आशीर्वादी औषध प्रदान होता है ।

२-श्रीसीतारामीय-सेवामन्दिरम्, नजरबाग, श्रीअयोध्याजी (उत्तर प्रदेश)

१—यह एक गुजराती धर्म संस्थान है यहां रोगी दुखी जनता को विना किसी भेदभाव के विना मूल्य औषध प्रदान की व्यवस्था है ।

२—आश्रय हीन माताओं को जीवन निर्वाह के लिये श्रीसीतारामनाम कीर्तन करा के नियमित अन्न तथा द्रव्य दान की व्यवस्था है ।

३—आचार्य श्रीरामानन्द-स्वामी के उदार सिद्धान्तों का सन्तसाहित्य के प्रकाशन तथा प्रसार प्रचार की व्यवस्था है ।

४—गुजरात के तीर्थयात्रियों को उचित सहयोग प्रदान किया जाता है ।

५—कथा-कीर्तन-भजन पूजनादि सत्कार्य में सप्रेम सहयोग दिया जाता है ।

३—श्रीबजरङ्ग-भजनाश्रम

मु० कटाव, पो० गरांमडी, जि० बनासकांठा (उत्तर गुजरात)

१—यह उतर गुजरात का एक अनुपम तीर्थ धाम है । यह महान् सिद्ध सन्त श्रीखाकीजी महाराज की भजन भूमिका है, यहां आज भी भक्तों की मनकामनायें पूर्ण होती है । यह श्री सीतारामीय अनन्त श्रीस्वामी श्रीमथुरादासजी महाराज का धर्मप्रचार केन्द्र है ।

२—यहां श्रीराघवेन्द्र भगवान् के तथा चमत्कारी अद्भुत आशीर्वादी इमली के दर्शन होते हैं ।

३—यहां गौसेवा-सन्त सेवा-अतिथि सेवा-उदार हृदय से होती है । तथा भजन-कीर्तन-सत्सङ्ग का लाभ प्राप्त होता है ।

४—श्रीरामनाम मन्दिर (कटाव)

१—यहां भावुक भक्तों द्वारा भक्ति पूर्वक लिखे गये लगभग ढाई अरब श्रीरामनाम पधराये गये हैं। जिसके दर्शन के लिये भक्तजन तरसते रहते हैं ऐसे दिव्य भव्य मनोहर मन्दिर के दर्शन होते हैं।

५—श्रीरामनाम—बैंक (कुंणघेर)

पो० मु० कुंणघेर वाया—पाटन जि० महेशाणा—(उतर गुजरात)

१—श्रीरामनाम मन्दिर (कटाव) में पधराये गये श्रीरामनाम भगवान् इसी बैंक से पधारे हैं, श्रीदयारामदासजी श्रीवैष्णव बड़ी योग्यता से इसका संचालन करते हैं, प्रतिवर्ष भक्तों को धार्मिक साहित्य भी भेंट करते हैं।

इन संस्थाओं में जहां आपकी रुचि हो, भावना हो आप अपनी यथाशक्ति सेवा का सहयोग प्रदान कर भाग्यशाली बनेंगे। आपके धन का सम्पूर्ण सदुपयोग होगा, ऐसा विश्वास रखिये।

श्रीरामानन्द—आश्रम
जनकपुर धाम (नेपाल)

निवेदक—
अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव प्रेमनिधि

* श्रीसम्प्रदाय--कल्पद्रुम *

प्रथम दया करि सीय, रामसों बीज बुलायो।
पुनि हनुमन्त हि श्रापु, मन्त्र उपदेशि दृढायो ॥
ब्रह्मा तथा वशिष्ठ पराशर व्यास शुकादिक।
रामानन्दाचार्य सींचि, विस्तारयो चहुं दिक ॥
त्रय सन्ताप विनाशिनी छाया सुख पावैं सबै।
सम्प्रदायश्री देवद्रुम, फूलैं फलैं सुपल्लवै ॥

—श्रीस्वामी खोजीजी महाराज

॥ जयति श्री जानकी ॥

...ति श्रीजानकी भानुकुल भानुकी प्राणप्रियवल्लभे तरुणि भूपे !
...म आनन्द चैतन्घन विग्रहे शक्ति आह्लादिनी साररूपे ॥ १ ॥
चित चरण चिन्तनि जेहि धरत ही दूर हो,काम भय कोह मद मोह माया ।
रुद्र विधि विष्णु सुर सिद्धि वन्दित पदे, जयति सर्वेश्वरी रामजाया ॥ २ ॥
कर्म जप योग विज्ञान वैराग्य लहि, मोक्षहित योगि जे प्रभु मनावैं ।
जयति वैदेहि सब शक्ति शिर भूषणो, ते न तव दृष्टि विन कबहुं पावैं ॥३॥
कोटि ब्रह्माण्ड जगदीश को ईश जेहि, निगम मुनि बुद्धि ते आगम गावैं ।
विदित यह गाथ अहदानकुल माथ सो, नाथ तव दानते हाथ आवैं ॥४॥
दिव्य शतवर्ष जप ध्यान जब शिव धर्यो, रामगुरुरूप मिलि पथ बतायो ।
...तै हित लीन लखि कृपा कीनी तबै,देवि अति दुर्लभहिं दरश पायौ॥५॥
जयति श्रीस्वामिनी सीय शुभनामिनी, दामिनिकोटि निज देह दरसै ।
इन्दिरा आदि लै मत्तगज गामिनी, देव भामिनी सबै पांव परसै ॥६॥
दुखित लखि भक्त विन दरस निजरूप तप,यजन जप जतनते सुलभ नाहीं ।
कृपा करि पूर्ण नवकञ्जदललोचना, प्रगट भई जनक नृप अजिर मांही ॥७॥
रमित तव विपिन प्रिय प्रेम प्रकटन करन, लङ्कपति व्याज कछु खेल ठान्यो ।
गोपिका कृष्ण तव तुल्य बहु यतन करि,तोहि मिलि ईश आनंद मान्यौ ॥८॥
...ीन तव समुख के सङ्ग रहि रङ्कसों विमुख जो देव नहिं नाहँ नेरो ।
...धम उद्धरणि यह जानि गहि शरण तव,दास तुलसी भयो आय चेरो ॥९॥

—"विनय पत्रिका" श्रीवैजनाथजी की टीका पद सं०४१

—:❀:—

॥ श्रीसम्प्रदाय प्रवर्तिका श्रीसीता ॥

सम्प्रदा प्रवर्तिका, जयतु जानकी देवि । सुख पावत संसार में, जिनकी पद रज सेवि ॥
...नकी पद रज सेवि, राम को सदा पियारी । श्रुति सिद्धान्त निचोरि, विशिष्टाद्वैत प्रचारी ॥
अपराधि हुं पर करि दया, मेटति दारुण आपदा ।
"खोजी" व्यापी जगत में, विशद श्रेष्ठ श्रीसम्प्रदा ॥

—उपदेश-वल्लरी-२

श्रीमिथिलेशललीजूकी-आरती

आरती श्रीमिथिलेश ललीकी ।
श्रीरघुवर रस प्रेम भरीकी ॥
आह्लादिनी सच्चिद् वपु धारिणी,
श्रेयकारिणी—क्लेश हारिणी,
जगदम्बा शुचि स्ववश विहारिणी,
रामचन्द्र मुख कञ्ज अलीकी ॥ आरती श्री० ॥
अमित कोटि ब्रह्माण्ड नायिका,
सन्तत शरणागत सहायिका,
दीन हीन जन सुख विधायिका,
गौरवरण तनु चम्पकली की ॥ आरती श्री० ॥
सिंहासन अति दिव्य विराजै,
छविनिधि रूप अनूपम भ्राजै,
उमा रमा रति शचि शशि लाजै,
अखिलदोष दुखद्वन्द दलीकी ॥ आरती श्री० ॥
करुणा दया कृपारस खानी,
आश्रितजन तारिणी वरदानी,
रामवल्लभा वेद वखानीः
प्रणतपालिनी परम भलीकी ॥ आरती श्री० ॥
जनक सुनैना हृदय हुलासिनी,
जय श्रीमिथिला धरणि प्रकाशिनी;
आदिशक्ति साकेत विलासिनी,
"प्रेमनिधी" प्रभु प्रेमपलीकी ।
आरती श्रीमिथिलेश ललीकी ॥

नटत सियाजू पिया लेत बलिहरिया।
छम छम छमकत नूपुर बजावत पिया मन मोहति

बिहरत चम्पक वन पिय प्यारी।

सरयू तीर शृंगार विपिन में अति अनूप छवि न्यारी।
सुमन सिंगार किये नख शिख लौं निज कर श्याम संवारी।।

वन विहार बैठे पिय प्यारी, आगे आय खरी

कानन केलि कलोल करत हिय हरत शोक सब।
पारिजात वन पावन निरखि सम्पति प्रसन्न तब।।

ीसीताराम #विवाहपंचमी

जय श्री राम
आदौ राम तपो वनादि गमनम् हत्वा मृगं कांचनम्। वैदेही हरणम् जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम्।।
बाली निग्रहण्म् समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनम्। पश्चातू रावण कुम्भकर्ण हननं एतद्धि रामायणम्।।१।।

श्री श्रृंगार निधि निकुंज मिथिला धाम
श्री सीताराम जी